

**धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोककथाहरूको
सङ्कलन र वर्गीकरण**

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय
नेपाली केन्द्रीय विभागअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह
दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका
निमित्त प्रस्तुत

अध्ययनपत्र

अध्ययनार्थी

सुमित्रा डल्लाकोटी

र.नं. : ९-१-२४०-७९८-९६

शैक्षिक सत्र : २०६७-२०६९

२०७९ (इ.सं. २०२२)

प्रतिबद्धतापत्र

स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको नेपाली विषयअन्तर्गत दसौँ पत्रको आवश्यकता परिपूर्ति गर्ने प्रयोजनका निम्ति तयार गरिएको प्रस्तुत 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण' शीर्षकको यस अध्ययनपत्रमा उपयोग र प्रयोग गरिएका सन्दर्भ सामग्रीहरू जे-जसरी सम्पादन गरिएको भए पनि ती सबैलाई गर्भे टिप्पणीका आधारमा पुष्टि गरिएको छ। मैले प्रस्तुत गरेका सबै विषयवस्तुहरू मौलिक छन् र यस अध्ययनपत्रमा कुनै पनि अंश प्रतिलिपिगत, प्रकाशित र अध्ययन (शोध) प्रयोजनस्वरूप उपाधि लिन कुनै पनि विश्वविद्यालयमा प्रस्तुत गरिएको छैन भनी प्रतिबद्धता व्यक्त गर्दछु।

मिति : २०७९/०३/०१

सन् : १५/०६/२०२२

.....

सुमित्रा डल्लाकोटी

शोधार्थी

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

मानविकी तथा समाजशास्त्र सङ्काय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग
भरतपुर, चितवन

स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा समाजशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह प्राइभेटतर्फकी छात्रा सुमित्रा डल्लाकोटीले नेपाली एम.ए. दसौं पत्रको प्रयोजनका निम्ति प्रस्तुत गरेको 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण' शीर्षकको यो अध्ययनपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन समिति

सह-प्राध्यापक भवनाथ सडौला
विभागीय प्रमुख

.....
हस्ताक्षर

उप-प्राध्यापक रमेशकुमार श्रेष्ठ
शोधनिर्देशक

.....
हस्ताक्षर

प्रा.डा. होमनाथ सापकोटा
बाह्य परीक्षक

.....
हस्ताक्षर

पेश गरेको मिति :

२०७९/०३/०१

१५/०६/२०२२ (सन्)

मौखिक परीक्षा मिति :

२०७९/०३/११

२५/०६/२०२२ (सन्)

शोधनिर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा समाजशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह प्राइभेटतर्फकी छात्रा सुमित्रा डल्लाकोटीले 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण' शीर्षकको अध्ययनपत्र मेरो निर्देशनमा निकै मेहनतका साथ तयार गर्नु भएको हो । उक्त अध्ययनपत्र आवश्यक मूल्याङ्कनका निम्ति विभागसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७९/०३/०५

सन् : १९/०६/२०२२

.....
रमेशकुमार श्रेष्ठ
उप-प्राध्यापक एवम् शोधनिर्देशक
नेपाली विभाग
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन

कृतज्ञताज्ञापन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा समाजिकशास्त्र सङ्काय नेपाली केन्द्रीय विभागअन्तर्गत स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका निम्ति अध्ययनपत्र तयार पार्नु पर्दछ । यसै सिलसिलामा 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण' शीर्षकमा यो अध्ययनपत्र तयार गरिएको छ । यस अध्ययनपत्रको कार्यलाई आफ्नो अमूल्य समय दिई आवश्यक मार्गनिर्देशन गर्नुहुने वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुरका नेपाली विभाग प्रमुख श्रद्धेय गुरु भवनाथ सडौलाज्यूप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । यस अध्ययनपत्र तयार गर्ने क्रममा देखिएका कमी-कमजोरी औँल्याई अध्ययन कार्यलाई सही मार्गमा डोच्याउन महत्त्वपूर्ण सल्लाह, सुझाव एवम् आवश्यक मार्गनिर्देशन गर्नुहुने शोधनिर्देशक वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुरका आदरणीय गुरु उपप्राध्यापक रमेशकुमार श्रेष्ठज्यूप्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछु । लोककथा सङ्कलन कार्यमा सहयोग गर्नुहुने सम्पूर्ण कथकेहरूलाई हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु । यसका साथै अध्ययनकार्यमा सम्बन्धित विषयसँग सम्बन्धित विभिन्न लेख, रचना, शोध तथा अध्ययनकार्यको सहयोग लिइएकाले सम्बन्धित सर्जक, लेखक, शोधार्थी, अध्ययनकर्ताहरू पनि धन्यवादका पात्र हुनुहुन्छ ।

यस अनुसन्धानलाई अन्तिम रूप दिन सहयोग पुऱ्याउनु हुने मेरा मित्रहरू उपयुक्त वातावरण मिलाई सहयोग गर्नुहुने मेरो जीवनसाथी दिपेन्द्र र छोरी पल्लवी पौडेल साथै टङ्कनमा सहयोग गर्नुहुने माधव अधिकारी तथा सम्पादन कार्यमा सहयोग गर्नुहुने जीवननाथ ढुङ्गाना लगायत प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपमा सहयोग प्रदान गर्नुहुने सम्बन्धित सबै महानुभावहरूप्रति हार्दिक धन्यवाद टर्क्याउँछु । मेरो अध्ययनलाई यहाँसम्म पुऱ्याउन प्रेरणा र हौसला प्रदान गर्नुहुने बुवा भूमकनाथ डल्लाकोटी र आमा विष्णुमाया डल्लाकोटी, सासूआमा पर्वलकुमारी पौडेल एवम् घर-परिवारप्रति सदैव ऋणी रहने छु ।

मिति : २०७९/०३/०१

सन् : १५/०६/२०२२

.....

सुमित्रा डल्लाकोटी

विषयसूची

| | |
|----------------------------------|-------|
| आवरण पृष्ठ | पृष्ठ |
| प्रतिबद्धतापत्र | क |
| स्वीकृतिपत्र | ख |
| शोधनिर्देशकको सिफारिसपत्र | ग |
| कृतज्ञताज्ञापन | घ |
| विषयसूची | ङ |
| चिन्ह प्रयोग तथा सङ्केताक्षरसूची | झ |
| सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची | ञ |
| तालिकासूची | ट |

परिच्छेद एक : अध्ययनपत्रको परिचय १-६

| | |
|----------------------------------|---|
| १.१ विषयको परिचय | १ |
| १.२ समस्याकथन | १ |
| १.३ अध्ययनकार्यको उद्देश्य | २ |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा | २ |
| १.५ अध्ययनकार्यको औचित्य | ५ |
| १.६ अध्ययनको सीमाङ्कन | ५ |
| १.७ सामग्री सङ्कलन र अध्ययन विधि | ५ |
| १.७.१ क्षेत्रीय अध्ययन | ५ |
| १.७.२ पुस्तकालयीय अध्ययन | ६ |
| १.७.३ लेखन विधि | ६ |
| १.८ अध्ययनपत्रको रूपरेखा | ६ |

परिच्छेद दुई : नेपाली लोककथाको सैद्धान्तिक परिचय ७-२२

| | |
|----------------------|----|
| २.१ लोककथाको परिचय | ७ |
| २.२ लोककथाको परिभाषा | ८ |
| २.३ लोककथाको स्वरूप | १० |

| | | |
|--------|-----------------------------|----|
| २.४ | अन्तरवस्तुको सम्बन्ध | १० |
| २.४.१ | लोककथा र लोकगाथा | १० |
| २.४.२ | लोककथा र लोकनाट्य | ११ |
| २.४.३ | लोककथा र लोकगीत | ११ |
| २.५ | लोककथाका तत्त्व | १२ |
| २.५.१ | कथावस्तु | १३ |
| २.५.२ | पात्र | १३ |
| २.५.३ | परिवेश | १३ |
| २.५.४ | संवाद | १४ |
| २.५.५ | उद्देश्य | १४ |
| २.५.६ | भाषा | १४ |
| २.५.७ | शैली | १५ |
| २.५.८ | लोकतत्त्व | १५ |
| २.६ | लोककथाका विशेषता | १५ |
| २.६.१ | व्यापक विषयवस्तुको प्रयोग | १७ |
| २.६.२ | आख्यानात्मकताको प्रधानता | १७ |
| २.६.३ | कल्पनाको अधिक्यता | १८ |
| २.६.४ | सामाजिकताको प्रयोग | १८ |
| २.६.५ | मनोरञ्जनात्मकता | १८ |
| २.६.६ | परिवर्तनशीलता | १९ |
| २.६.७ | कुतुहलता | १९ |
| २.६.८ | अभिप्रायको प्रयोग | २० |
| २.६.९ | अतिशयोक्तिमूलता | २० |
| २.६.१० | गद्यात्मक सरल भाषाको प्रयोग | २० |
| २.६.११ | वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग | २१ |
| २.७ | निष्कर्ष | २१ |

| | |
|--|--------------|
| परिच्छेद तीन : धादिङ जिल्लाको सामान्य परिचय | २३-२९ |
| ३.१ नामकरण | २३ |
| ३.२ धादिङ जिल्लाको ऐतिहासिक महत्त्व | २३ |
| ३.३ भौगोलिक प्राकृतिक अवस्था | २४ |
| ३.४ धादिङको महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलहरू | २४ |
| ३.४.१ त्रिपुरासुन्दरी | २५ |
| ३.४.२ गङ्गा-जमुना | २५ |
| ३.४.३ ज्वालामुखी माई (ज्वालादेवी) | २५ |
| ३.४.४ भैरवी थान (कोट भैरवी) | २६ |
| ३.४.५ गुप्तेश्वरी गुफा (महादेवस्थान पाउद्वार) | २६ |
| ३.४.६ तेह्रतले गुफा | २७ |
| ३.४.७ मण्डली माई | २७ |
| ३.४.८ मैदी कोट | २७ |
| ३.४.९ पशुपतिनाथको मन्दिर | २८ |
| ३.४.१० गल्छी र महेश दोभान | २८ |
| ३.५ निष्कर्ष | २९ |

| | |
|---|--------------|
| परिच्छेद चार : धादिङमा जिल्लामा प्रचलित लोककथाको सङ्कलन र वर्गीकरण | ३०-५७ |
| ४.१ लोककथाको सङ्कलन | ३० |
| ४.१.१ सासु र बुहारीको कथा | ३० |
| ४.१.२ राक्षसको कथा | ३२ |
| ४.१.३ बेलौरेको कथा | ३४ |
| ४.१.४ आमाको माया | ३७ |
| ४.१.५ दुःखी चेलीको कथा | ३७ |
| ४.१.६ दिदी बहिनीको कथा | ३८ |
| ४.१.७ भाग्यमा भए खटिया उपर | ४० |
| ४.१.८ लोभी बुढाबुढी | ४१ |
| ४.१.९ छैँटीको भाग्य | ४४ |

| | |
|--|----|
| ४.१.१० भूतको कथा | ४५ |
| ४.१.११ भँगेराको कथा | ४६ |
| ४.२ लोककथाको वर्गीकरण | ४७ |
| ४.२.१ सामाजिक लोककथा | ४७ |
| ४.२.२ अतिमानवीय तथा परामानवीय रूपका लोककथा | ५० |
| ४.२.३ पशुपक्षी र फलफूलको लोककथा | ५२ |
| ४.२.४ धार्मिक एवम् सांस्कृतिक लोककथा | ५४ |
| ४.२.५ हास्यव्यङ्ग्यात्मक लोककथा | ५५ |
| ४.३ निष्कर्ष | ५६ |

| | |
|---|--------------|
| परिच्छेद पाँच : उपसंहार तथा निष्कर्ष | ५८-६० |
| ५.१ उपसंहार | ५८ |
| ५.२ निष्कर्ष | ५९ |
| ५.३ भावी अध्येताका लागि सम्भावित अध्ययन शीर्षकहरू | ६० |

सन्दर्भग्रन्थ सूची

परिशिष्टहरू

चिन्ह प्रयोग तथा सङ्केताक्षरसूची

प्रस्तुत शोधपत्रमा अधोलिखित चिन्ह प्रयोग तल दिइएका विशिष्ट अर्थमा गरिएको छ :

चिन्ह प्रयोग

| चिह्न | अर्थ |
|-------|-------------------------------------|
| ; | अर्धविराम |
| , | अल्पविराम |
| “ ” | कसैको प्रत्यक्ष उक्तको उद्धरण गर्दा |
| ... | केही अंश छोडिएको |
| ° | डिग्री |
| | पूर्णविराम |
| ? | प्रश्नवाचक |
| - | योजक |
| / | विकल्प, पर्याय |
| ‘ ’ | विशेष जोड दिँदा/लेखको शीर्षक दिँदा |
| : | ब्याख्या/सापेक्ष |
| — | बाट |
| () | पेटे टिप्पणी दिँदा |

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

यस शोधपत्रमा प्रयोग गरिएका सङ्क्षेपीकृत शब्दहरूको सूची यसप्रकार छ :

| | | |
|----------------|---|---------------------------------|
| उप.प्रा. | - | उपप्राध्यापक |
| एम.ए. | - | मास्टर्स अफ आर्टस् |
| कि.मि. | - | किलोमिटर |
| गा.वि.स. | - | गाउँ विकास समिति |
| डा. | - | डाक्टर |
| ते.सं. | - | तेस्रो संस्करण |
| त्रि.वि. | - | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| ने.रा.प्र.प्र. | - | नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान |
| नं. | - | नम्बर |
| पा.वि.के. | - | पाठ्यक्रम विकास केन्द्र |
| प्रा. | - | प्राध्यापक |
| प्रा.डा. | - | प्राध्यापक डाक्टर |
| प्रा.लि. | - | प्राइभेट लिमिटेड |
| पं. | - | पण्डित |
| पृ. | - | पृष्ठ |
| वि.सं. | - | विक्रम संवत् |
| सम्पा. | - | सम्पादक |
| सा.सं. | - | सातौँ संस्करण |
| संस्क. | - | संस्करण |

तालिकासूची

| तालिका नं. | शीर्षक | पृष्ठ |
|------------|--|-------|
| १. | लोककथा र लोकगाथा विधा तुलनात्मक तालिका | ११ |
| २. | लोककथा र लोकनाट्य तुलनात्मक तालिका | ११ |
| ३. | लोककथा र लोकगीत तुलनात्मक तालिका | १२ |

परिच्छेद एक अध्ययनपरिचय

१.१ विषय प्रवेश

लोककथा लोकसाहित्यको आख्यानयुक्त गद्य विधा हो । सामान्यतः लोकजीवनका आस्था, विश्वास, व्यवहार र चिन्तनलाई कल्पनाको आवरण दिएर रोमाञ्चक आख्यान तत्त्वहरूको मिश्रण गरी लोक समुदायद्वारा रचना गरिएका मौखिक परम्परामा जीवित साहित्य हो । मानवजीवनका शाश्वत भावना र अनुभूतिहरूको कलापूर्ण यथार्थ अभिव्यक्ति कथाहरूमा पाइन्छ । मानवसभ्यताको संवाहकका रूपमा जन्मेको जेठो साहित्य नै लोकसाहित्य हो । लोकसाहित्यलाई विषयवस्तुका आधारमा गरिएको वर्गीकरणलाई हेर्दा लोकगीत, लोकगाथा, लोकनाटक, उखानटुक्का र गाउँखाने कथामा वर्गीकरण गरिएको छ । लोककथामा विभिन्न अवसरमा घटित घटनाहरूको नाटकीय ढङ्गबाट जीवन्त चित्रण र वर्णन गरिएको हुन्छ । आफ्ना अनुभवहरू अरूसँग भन्ने र सुन्ने क्रममा विकसित भएका लोककथाहरूका लागि वक्ता र स्रोता दुवैको आवश्यकता पर्दछ । लोककथामा लौकिक-अलौकिक, सम्भव-असम्भव आदि विषयको रसात्मक अनुभूति प्राप्त हुन्छ । समाजको धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यता र परम्पराको यथार्थको विवरण बोक्ने साक्षीका रूपमा रहेको लोककथाबाट श्रोताले साहस, वीरता र उत्साहजस्ता भावहरू प्राप्त गर्दछन् । मनोरञ्जन र शैक्षिक ज्ञान दुवै यसबाट प्राप्त हुन्छ । यसरी लोकजीवन र लोकमानसका अनुभवका अवशेषलाई समय र स्थानानुरूप समेट्दै, सुरक्षित गर्दै नयाँ पुस्तालाई हस्तान्तरण गर्दै लाने सङ्ग्रहालयका रूपमा लोककथालाई लिन सकिन्छ ।

१.२ समस्याकथन

धादिङ जिल्लाका प्रचलित लोककथामा स्थानीय जनजीवनका विभिन्न पक्षहरू समेटिएका छन् । कथा सुन्ने र सुनाउने प्रथा निकै पुरानो हो तर यसलाई अध्ययन पनि गर्नुपर्ने भएकोले प्रस्तुत अनुसन्धान निम्नलिखित समस्यामा केन्द्रित गरिएको छ :

धादिङ जिल्लामा के-कस्ता लोककथाहरू प्रचलनमा रहेका छन् ?

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाले लोकजीवनमा कस्तो भूमिका खेलेको छ ?

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथालाई कसरी सङ्कलन र वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ?

१.३ अध्ययनकार्यको उद्देश्य

‘धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण’ शीर्षकको अध्ययन कार्यमा मुख्य निम्नानुसार उद्देश्यहरू रहेका छन् :

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन गर्नु ।

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूले लोकजीवनमा खेलेको भूमिकाको अध्ययन गर्नु ।

धादिङ जिल्लामा सङ्कलित लोककथाहरूको वर्गीकरण गर्नु ।

यसरी धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन गरी वर्गीकरण गर्ने कार्यलाई प्रमुख उद्देश्य मानिएको छ । यी कार्य गरिरहँदा प्रचलित लोककथाले लोकजीवनमा खेलेको भूमिका प्रष्टिन्छ ।

१.४ पूर्वकार्यको समीक्षा

लोककथा कुनै समाज तथा संस्कृतिमा परापूर्व कालदेखि मौखिक, दन्त्य तथा लिखित रूपमा चलिआएको लोकसाहित्यको एउटा उर्वर विधा लोककथा हो । यसको इतिहास मानवसभ्यताको इतिहाससँग जोडिएको छ । समाजमा असाध्यै रुचाइने साहित्यको प्रमुख विधा लोककथामा आधुनिकताको प्रभावको बाछिटा लाग्न नदिनु हाम्रो कर्तव्य भएकोले यसलाई सुरक्षित गर्नुपर्ने ज्ञान आयो । अझ लोककथालाई सिद्धान्तको कसीमा राखेर अध्ययन गर्ने परिपाटी नेपाली लोकसाहित्यमा भर्खरै आएको छ । नेपालका लोककथाहरूमा जातिगत, स्थानगत, भाषागत, भाषिकागत भेद-उपभेदहरू भेटिन्छन् । ती सबैको सङ्कलन र वर्गीकरण गर्नु गाह्रो कार्य हो । केही थोरै गरिएका प्रयासहरूले नेपाली लोककथालाई साङ्केतिक रूपमा चिनाउने काम भने गरेका छन् । यस्ता कृतिहरू र तिनमा गरिएका केही अध्ययनको विवरण यसरी प्रस्तुत गरिएको छ :

तुलसी दिवसद्वारा लिखित ‘नेपाली लोककथा केही अध्ययन’ (काठमाडौँ : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, २०३३) नामक कृतिमा नेपाली लोककथालाई सङ्क्षेपमा चिनाउँदै लोककथाको वर्गीकरण गरिएको छ । चौध भागमा वर्गीकरण गरिएका लोककथालाई हरेकको उदाहरणसहित प्रस्तुत गर्ने कार्य पनि भएको छ । नेपालमा विभिन्न विकास क्षेत्र, अञ्चल र जिल्लालाई लोककथाको क्षेत्रबाट चिनाउने क्रममा जुम्ला, पाल्पा, बाजुरा, आछाम, दाङ, तनहुँ, रूपन्देही, कास्की, भापा, हुम्ला, नुवाकोट, काठमाडौँ, बागलुङ, स्याङ्जा, गोरखा,

ताप्लेजुङ, सल्यान, भोजपुर, तिब्बतीकोटका लोककथाका उदाहरण दिएर केही लोककथाको उद्गम स्थल भनिने अवस्थाको समेत उल्लेख भएको छ ।

तुलसी दिवसद्वारा लिखित 'नेपाली लोककथा साभ्ना अक्षर केही अध्ययन' (काठमाडौँ : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, २०३३ : पृ. २८) नामक कृतिमा नेपाली लोककथालाई चिनाउँदै नेपाली लोककथाको वर्गीकरणका निम्ति विभिन्न विद्वान्हरूका लोककथा वर्गीकरण गरेर चिनाएका छन् । त्यसै क्रममा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, अतिमानवीय रूपमा नेपाली लोककथाको विवेचना गर्ने काम पनि गरेका छन् ।

तुलसी दिवस संयोजक रहेको 'नेपाली लोकसंस्कृति सङ्गोष्ठी' (काठमाडौँ : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, २०३५) नामक कृतिमा नेपाली लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति र लोकजीवनसँग सम्बन्धित विभिन्न लेखहरू समाविष्ट छन् । तुलसी दिवसद्वारा लिखित "परी तथा अप्सराका नेपाली लोककथाहरू" शीर्षकको लेख यसमा प्रकाशित भएको छ ।

प्रा.डा. दयाराम श्रेष्ठद्वारा लिखित 'प्रारम्भिककालको नेपाली साहित्य इतिहास र परम्परा (२०३८) मा नेपाली लोकसाहित्यका विभिन्न विधालाई चिनाउँदै नेपाली लोककथाको परिचय, प्रचलन, विकास र विशेषतालाई औँल्याउँदै तिनको वर्गीकरण साङ्केतिक ढङ्गले गरिएको छ । यस कृतिमा लोककथाको सिद्धान्त चिनाउने काम भएको छ ।

जीवेन्द्र गिरीले 'लोकसाहित्यको अवलोकन' (२०५६) शीर्षकको कृतिमा "हाम्रा लोकगाथा" नामको लेखमा लोककथा र लोकगाथा दुवै आख्यानात्मक विधा हुन् भनी औँल्याएका छन् । खाली कथा गद्यात्मक र गाथा गेयात्मक भनेर दिनुभएको छ तर धादिङ जिल्लाको कथा र गाथाको बारेमा त्यस्तो चर्चा भेटिएन ।

धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदीद्वारा लिखित 'नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना' (काठमाडौँ : पा.वि.के., त्रि.वि., २०४१) नामक कृतिमा नेपाली लोकसाहित्यका विभिन्न विधालाई चिनाउने क्रममा नेपाली लोककथाका परिचय, प्रचलन, विकास र विशेषतालाई औँल्याउँदै तिनको वर्गीकरण तथा विश्लेषण गरिएको छ ।

मोतीलाल पराजुलीद्वारा लिखित 'नेपाली लोकगाथा' (२०४९) कृतिमा नेपाली लोकगाथालाई चिनाउने क्रममा नेपाली लोककथाको सामान्य परिचय मात्र दिएको छ ।

सरभक्त र तेजनाथ घिमिरेद्वारा सम्पादित 'स्वास्वत' (पोखरा : मेघा प्रकाशन, २०५४) नामक पत्रिकामा साहित्यका विधा समाविष्ट गर्ने क्रममा मोतीलाल पराजुलीद्वारा लिखित लोककथाको रूपमा संरचनासम्बन्धी मान्यता प्रस्तुत गरिएको छ ।

बोधविक्रम अधिकारीको 'नेपाली दन्त्यकथा' (१९९६), ललितजङ्ग सिंजापतीको 'दन्त्यकथा माला' (२००३), 'नेपाली ऐतिहासिक कथासङ्ग्रह' (२००८), 'नेपाली लोककथा' (२०२४), शमशेर जवराको 'दन्त्यकथा' (२००५) शिवमणि तथा अमरमणि प्रधानको 'कथाकहानी' (१९५४), जजुराम फुल्केको 'सुनौलो कथा' (२०१६), इमानसिंह चेमजोङको 'किराती दन्त्यकथा' (२०२१), लिलासिंह कर्माको 'हाम्रो लोकसाहित्य' (२०२३), प्रदीप रिमालको 'कर्णाली लोकसंस्कृति खण्ड ५' (२०२८), करुणाकर वैद्यको 'अञ्चल लोककथा' (२०५१), 'नेपाली दन्त्यकथासङ्ग्रह' (२०४०), 'विश्व लोककथासङ्ग्रह' खण्ड १ (२०४१) आदि कृतिहरूमा लोककथाहरूको सङ्कलन गरिएको छ ।

विमला श्रेष्ठको 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोकगीतहरूको सङ्कलन वर्गीकरण र विश्लेषण' (२०६५) स्नातकोत्तर शोधपत्रमा धादिङ जिल्लाको लोकसाहित्यको अवस्थालाई धेरै हदसम्म उजागर गर्न सफल भएको पाइन्छ ।

विश्वेश्वर अधिकारीको 'गोरखाको हर्मी गाउँ विकास समितिमा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण' (२०६६) शोधपत्रमा धादिङको छिमेकी जिल्ला गोरखा भएकोले भाषिकामा केही समानता भए तापनि धादिङ जिल्लामा प्रचलित कथाहरू भने त्यहाँ समावेश भएको पाइएन ।

यसरी हेर्दा जाँदा नेपाली लोककथाको अध्ययन गर्ने विद्वान्हरूले नेपाली लोककथाको सिद्धान्तको निर्माण गर्दा होस् वा नेपाली लोककथाको सङ्कलन गर्दा होस् वा कुनै पनि कृति एवम् लेखमा धादिङ जिल्लामा प्रचलित कथाहरूको उदाहरण परेका छैनन् । यहाँ प्रचलित लोककथालाई सङ्कलन गरी तिनीहरूलाई चिनाउँदै सुरक्षित तुल्याउन सके नेपाली लोककथाको इतिहासमा केही योगदान पुग्ने ठानी यहाँ प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण गरी अध्ययनपत्र तयार गरिएको छ ।

यस अध्ययनले नेपाली लोकसमाजमा भविष्यमा धादिङे भाषिका क्षेत्रभित्रका उखान र टुक्काहरूको खोजीमा लागेका खोजकर्ता अनि भविष्यमा लोककथाकै विस्तृत अध्ययनमा लाग्न चाहने अनुसन्धानकर्तालाई पनि निकै सहयोगी सावित हुनेछ ।

१.५ अध्ययनकार्यको औचित्य

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाबाट धादिङका जनताका मूल्य-मान्यता, भाषा रीतिरिवाज, धर्म, आस्था, विश्वास, सामाजिक/सांस्कृतिक अवस्था आदिका दर्पणका रूपमा रहेको छ ।

समाज विकासका क्रममा लोककथाहरू क्रमशः लोप हुँदै जान थालेको अवस्थामा त्यहाँको लोककथाको बारेमा विस्तृत रूपमा अध्ययन गरी यस भेकको लोकसंस्कृतिलाई संरक्षण गरिएको छ ।

मौखिक रूपमा रहेका लोककथाहरूलाई केही मात्रामा भए पनि लिपिबद्ध गरी जीवित राख्नुपर्ने उद्देश्य राखिएको छ ।

धादिङ जिल्लाका प्रचलित लोककथाहरूलाई सङ्कलन र वर्गीकरण गरिएको छ ।

१.६ अध्ययनको सीमाङ्कन

यस अध्ययनमा धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन गरिएको छ । लोकसाहित्यअन्तर्गत लोककथाको क्षेत्र व्यापक भए तापनि यस अध्ययनपत्रमा शीर्षक अनुसार धादिङ जिल्लाको थाक्रे-९, केवलपुर कोइराला गाउँ र गजुरी-२, छेवाङलाई कार्यक्षेत्र बनाएर लोककथा सङ्कलन गरिएको छ । उक्त गाउँपालिकाहरूलाई प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाएर लोककथाको सङ्कलन गरिएको छ । लोककथाको वर्गीकरण विषयवस्तुका आधारमा र विश्लेषण कथातत्त्वका आधारमा गरिएको छ ।

१.७ सामग्री सङ्कलन र अध्ययन विधि

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन र लेखनकार्यका लागि निम्न विधिहरू अपनाइएको छ :

१.७.१ क्षेत्रीय अध्ययन

लोककथा मौखिक लोकसाहित्यको एक प्रमुख अङ्ग भएकाले यो शोधकार्य मूलतः क्षेत्रीय अध्ययनमा आधारित छ । लोककथा सङ्कलनका क्रममा धादिङका दुई भिन्न गाउँपालिका थाक्रे गाउँपालिका केवलपुर, कोइराला गाउँ, धादिङ जिल्ला गजुरी गाउँपालिका, छेवाङलाई आधार क्षेत्र बनाइएको छ ।

१.७.२ पुस्तकालयीय अध्ययन

सैद्धान्तिक अध्ययन तथा लोककथाको परिचय र वर्गीकरणका सन्दर्भमा अध्ययन तथा लेखन कार्य गर्न पुस्तकालयमा प्राप्त शोधकार्यको विषयसँग सम्बन्धित पुस्तक तथा पत्रपत्रिकाहरूको उपयोग गरिएको छ ।

१.७.३ लेखन विधि

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरणका लागि क्षेत्रीय अध्ययन विधि अपनाइएको छ भने लोककथाको सिद्धान्तको अध्ययनको लागि पुस्तकालयीय विधि अपनाइएको छ । उपलिखित विधिद्वारा सङ्कलित सामग्री र प्राप्त निष्कर्षलाई वर्णनात्मक अध्ययनपद्धतिका आधारमा देवनागरी लिपिमा लिपिबद्ध गरिएको छ ।

१.८ अध्ययनपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई व्यवस्थित रूप दिन पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरिएको छ र अन्त्य भागमा परिशिष्ट तथा सन्दर्भ ग्रन्थसूचीसमेत समाविष्ट रहेका छन् । तिनको रूपरेखा निम्नानुसार रहेको छ :

परिच्छेद एक : अध्ययनपत्र परिचय

परिच्छेद दुई : लोककथाको सैद्धान्तिक परिचय

परिच्छेद तीन : धादिङ जिल्लाको सामान्य परिचय

परिच्छेद चार : धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण

परिच्छेद पाँच : उपसंहार तथा निष्कर्ष

परिशिष्ट : लोककथा सङ्कलनका क्रममा कथके (सूचक) हरूको नाम तथा उनीहरूसँग खिचिएका तस्वीरहरूसमेत प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद दुई

लोककथाको सैद्धान्तिक परिचय

२.१ लोककथाको परिचय

लोककथा कुनै समाज तथा संस्कृतिमा परापूर्वकालदेखि मौखिक, दन्त्य तथा लिखित रूपमा चलिआएको कथा हो। लोककथामा समाजका सांस्कृतिक परम्परा तथा चालचलन सहितका दन्त्यकथा, परीकथा, ऐतिहासिक कथा आदि समावेश गरेको पाइन्छ। 'लोक' र 'कथा' गरी दुई शब्दका योगबाट लोककथा बनेको छ। कथालाई 'कहानी'को पर्यायवाची शब्दका रूपमा लिइन्छ। यसरी हेर्दा कथा र कहानीमा समानता देखिन्छ। प्रयोगगत दृष्टिले लोककथा कुनै यस्ता वार्ता हुन्, जुन कसैबाट सुनाइन्छ र सुनाउनुको कुनै धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अभिप्राय हुन्छ।

लोककथा लोकसाहित्यको महत्त्वपूर्ण एवम् प्रमुख विधा हो। सामान्यतः लोकजीवनका आस्था विश्वास, व्यवहार र चिन्तनलाई कल्पनाको आवरण दिएर रोमाञ्चक व्याख्यान तत्त्वहरूको मिश्रण गरी मौखिक परम्परामा जीवित रहेका परम्परित कथाहरू नै लोककथा हुन्। नेपाली कथा बाङ्मयमा स्थापित विधा कथाको नालीवेली खोज्दै जाने हो भने हामी मानवको जन्म र भाषाको प्रारम्भिक युगसम्म पुग्दछौं। भाषा मानवको अभिव्यक्तिको माध्यम बनेपछि मानव मनका भाव तथा संवेगलाई कलात्मक ढङ्गले अभिव्यक्ति गर्ने क्रमसँगै लोककथाको प्रारम्भ भएको हो। हाम्रै समाजमा पनि प्रशस्त लोककथाहरू मानव सभ्यताका साथसाथै भन्ने गरिँदै आएका थुप्रै आधारहरू पाइन्छन्। त्यसैले लोककथा अन्य साहित्यिक विधाका तुलनामा सबैभन्दा पुरानो अर्थात् सर्वप्राचीन विधा हो भन्ने कुरामा धेरै विद्वान्हरू बीच एकमत पाइन्छ।

लोकसाहित्यका फाँटमा लोकगीतपछिको लोकप्रिय विधाका रूपमा लोककथालाई लिइन्छ। गद्यशैली प्रमुख हुने लोककथाले विषयवस्तुअनुसारको लामा-छोटा घटनाद्वारा श्रोताहरूलाई स्वाद चखाउने काम गर्छ। यसको लोकप्रियता, विशालता र प्राचीनतालाई हेर्दा यो झण्डै लोकगीतसँग दाँजिन पुगेको छ। लोककथामा असम्भवलाई सम्भव बनाइएको हुन्छ। यसैगरी यसले मनोरञ्जन प्रदान गर्नुका साथै यसमा पात्रका रूपमा मानिस मात्र नभएर पशुपक्षी, भूतप्रेत, राक्षस, देवता, अप्सरा, जड पदार्थ पनि आउँछन्। पशुपक्षी आदिलाई मानवीय भाषा बोल्न लगाई अनौठो विषयवस्तुद्वारा मानवलाई शिक्षा दिने काम लोककथाले

गर्छ । विभिन्न काम गरी थाकेर आएको थकावटलाई कुनै पनि व्यक्तिले कथा सुनेर वा सुनाएर मनोरञ्जन लिई थकाई मेट्न सकिन्छ । लोकजीवनका ढाक्रेदेखि लिएर ठूला-ठूला आलिशान महलका बाबुसाहेब र मैयासाहेबहरू पनि लोककथाका स्वादमा रमाइरहेका हुन्छन् । त्यसैले यसको लोकप्रियताका महिमा अपरम्पार छ ।

नेपाली लोककथाको आरम्भ 'उहिले-उहिले ...', 'उहिल्यैको कुरा ...', 'एकादेशमा...' आदिबाट हुन्छ भने अन्त्य भने 'सुन्नेलाई सुनको माला, ... भन्ने बेलामा खुरुखुरु आउला' मा गएर हुन्छ । लोककथा सुन्ने र सुनाउने समय बेलुका/राति सुत्नुअघि बचेको समयमा मकै छोडाउँदै, आगो ताप्दै, मकैको भुत्ता ... उँदै कामको साथसाथै थकाई बिसर्दै, निद्रा भगाउँदै मनोरञ्जन लिनु हो । वासुदेव त्रिपाठीका अनुसार "आदिम मान्छेको भावना र सांस्कृतिक अवस्था नै लोककथामा अभिव्यक्त गरिएको हुन्छ । वास्तवमा लोककथा भनेको त्यस्ता कथाहरू हुन् जुन कल्पनाको धरातलमा अडिएका हुन्छन् र वैज्ञानिक सचेतनाका दृष्टिले आदिम प्रतीत हुन्छन् । तिनले संसारमा डुब्न कल्पनाको महल चहार्नुपर्ने हुन्छ ।"

समग्रमा लोककथा जीवनको अकृत्रिम र मर्मस्पर्शी प्रशिक्षण र मनोरञ्जन दुवै दृष्टिले संसारमै लोकप्रिय र व्यापक छ । सही अर्थमा लोककथाले लोकजातिको जीवनको सजीवतालाई परिपूर्ण गर्दछ । यसरी लोककथाले लोकजीवनको प्राण बनी कृत्रिमताबाट टाढा रही मनोरञ्जन र प्रशिक्षण दिने गर्दछ ।

२.२ लोककथाको परिभाषा

लोककथाको सुरुवात सृष्टिको उषाकालदेखि नै भएको मानिन्छ । लोककथा मानवजीवनमा कार्यरत समाजको दर्पणको रूपमा देखापर्ने साहित्य पनि हो । लोककथाले समाजमा सुख, दुःख, हर्ष र आँसुलाई प्रतिविम्बित गर्दछ । लोककथाले समाजमा रहेका मानिसलाई आनन्द, मनोरञ्जन, शिक्षा, ज्ञान, अर्ती र उपदेश आदि दिने गर्दछ । मानवीय सभ्यताको मिर्मिरेबाट नै यसलाई मौखिक वा लिखित रूपमा परिभाषित गरेका विभिन्न प्रमाणहरू भेटिन्छन् । लोककथाको बारेमा विभिन्न विद्वान्हरूले निम्नानुसार आ-आफ्नै प्रकारले परिभाषा दिएका छन् :

मौखिक वा लिखित परम्पराबाट क्रमशः एक पुस्ताबाट अर्को पुस्तालाई प्राप्त हुने लोक प्रचालित कथालाई लोककथा भनिन्छ ।

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

लोककथाले आफ्नो वर्णनात्मक भनाइबाट लोकलाई आनन्द दिन्छ, चाखिलो र वर्णनात्मक विषयवस्तुमा बुनिएको हुन्छ र चोटिलो रचना पनि हो ।

- धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदी

लोकजीवनमा मौखिक परम्परामा हस्तान्तरित हुँदै आएका कथाहरू नै लोककथा हुन् ।

- चूडामणि बन्धु

लोककथाका स्वप्निलता र कल्पनाशीलताको काखमा सुतिरहेका आदिम जीवनका सङ्केतहरूलाई हामीले विश्लेषणात्मक हेराइले आत्मसात् गर्नुपरेको छ ।

- वासुदेव त्रिपाठी

परापूर्वकालदेखि मौखिक रूपमा गाउँवस्तीमा भन्दै आउने गरिएको मनोरञ्जन तथा शिक्षाप्रधान कथा कुथुङ्ग्रीको बटुलो नै लोककथा हो ।

- कृष्णप्रसाद पराजुली

लोकजीवनका सुख-दुःख, रीतिरिवाज, आस्था, विश्वास र परम्परालाई अभिव्यक्त गर्ने साहसिक सौन्दर्ययुक्त कथा प्रणालीमा आबद्ध कथालाई लोककथा भनिन्छ ।

- श्रीराम शर्मा

लोककथाको प्रारम्भ अतिप्राचीन कालदेखि भएको हो । सुरुसुरुमा केटाकेटीहरूलाई खुसी तुल्याउने, मनोरञ्जन दिने तथा उनीहरूलाई आश्चर्यचकित बनाउनका लागि लोककथाको प्रयोग हुन्थ्यो । कालान्तरमा यसलाई प्रयोग गर्ने ढङ्ग-ढाँचामा समेत परिवर्तन हुन थाल्यो र यसलाई गम्भीरताका साथ ग्रहण गर्ने शिक्षा तथा उपदेशात्मक किसिमबाट सुन्ने गर्न थालियो । समयको परिवर्तनसँगै बौद्धिकताले भरिपूर्ण, मनोरञ्जन, अदम्य उत्साह-आँट तथा साहस पैदा गर्ने किसिमले कथाहरूलाई प्रस्तुत गर्न थालियो ।

- यादवप्रसाद लामिछाने र गीता लामिछाने

उल्लिखित विद्वान्हरूले दिएका परिभाषालाई आधार बनाई लोककथालाई लोकजीवनका सुख, दुःख, मनोरञ्जनमूलक, शिक्षाप्रद, कथन श्रुतिपरम्परामा जीवित लोकसमुदायद्वारा सामूहिक सत्यका रूपमा स्वीकार गरिएको लोकाख्यानलाई लोककथा भनी परिभाषित गर्न सकिन्छ । “सुखदुःख, आस्था र विश्वासलाई अभिव्यक्त गर्ने मनोरञ्जनमूलक, शिक्षाप्रद, कथन श्रुतिपरम्परामा जीवित लोकसमुदायद्वारा सामूहिक सत्यका रूपमा स्वीकार गरिएको लोकाख्यानलाई लोककथा भनिन्छ ।” यो आधुनिकतादेखि टाढा हुन्छ । लोककथामा आदिम मानवका भावना हुन्छन् र यो आफैमा पूर्ण र स्वतन्त्र हुन्छ ।

२.३ लोककथाको स्वरूप

लोककथा जीवनको एक अमूल्य अलिखित साहित्य हो । यो गद्यविधामा आउने कथानकयुक्त साहित्यिक विषयवस्तु हो । यसका स्वरूपलाई निम्नानुसार देखाइएको छ :

लोककथामा रचनाकार अज्ञात हुन्छ ।

लोककथाको भाषा सरल हुन्छ ।

लोककथा स्थान र समयअनुसार परिवर्तन हुन्छ ।

पात्रहरू मानवीय र मानवेतर दुवै प्रकारका हुन्छन् ।

यसको आरम्भ 'एकादेशबाट' सुरु हुन्छ र 'भन्नेलाई फूलको माला सुन्नेलाई सुनको माला यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुखुरु आउला" भनी अन्त्य गराइन्छ ।

यो कथ्य विधा हो र यसमा कथानकको अनिवार्यता रहन्छ ।

लोककथा लामा, छोटो, मझौलाजस्ता पनि हुन्छन् ।

तिलस्मी प्रवृत्ति रहे पनि सामाजिक पक्ष पनि सशक्त हुन्छ ।

गद्य विधा भए पनि रोचकताका निम्ति बिचबिचमा गीत पनि आउन सक्छन् ।

यसरी लोकले सजिलै बुझ्न सक्ने सरल सम्प्रेष्य भाषामा मानवीय र मानवेतर दुवै खाले पात्र संयोजन भएको स्थानीय स्तरमा ज्ञान र मनोरञ्जन दिनु लोककथाको आफ्नो मौलिक पहिचान हो ।

२.४ अन्तरवस्तुको सम्बन्ध

लोककथासँग अन्योन्याश्रित सम्बन्ध राख्ने अरू विधाहरूबिचको भिन्नतालाई निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

२.४.१ लोककथा र लोकगाथा

'नेपाली बृहत शब्दकोश' (२०६७) का अनुसार "परम्परादेखि लोकले मुखमुखै गाउँदै आएको नृत्य र कथात्मकतासमेत विद्यमान रहेको राष्ट्रिय गौरव र वीर चरित्र तथा महत्त्वपूर्ण घटनाको बखान गर्ने श्रृङ्खलाबद्ध विशेष गीतलाई लोकगाथा भनिन्छ ।

तालिका सङ्ख्या एक : लोककथा र लोकगाथाविच तुलनात्मक अध्ययन

| लोककथा | लोकगाथा |
|---|---|
| १. लोककथा अपेक्षाकृत रूपमा वर्णनात्मक र काव्यात्मक हुन्छ । | १. गेयात्मकताका साथै कथात्मक मार्मिकतासमेत पाइन्छ । |
| २. लोककथामा सुनाउने (वक्ता) र सुन्ने (श्रोता) दुवै आवश्यक हुन्छ । | २. लोकगाथामा श्रोता हुन पनि सक्छ, नहुन पनि सक्छ । |
| ३. गद्यात्मकता यसको विशेषता हो । | ३. लामो स्वर गरी थैगो मिलाई-मिलाई भट्याइन्छ । |

२.४.२ लोककथा र लोकनाट्य

गीत, नृत्य र सङ्गीतको त्रिवेणी बनाई जुन साहित्यद्वारा मनोरञ्जनसमेत प्रदान गर्दछ, त्यसलाई नै लोकनाट्य वा लोकनाटक भनिन्छ ।

तालिका सङ्ख्या दुई : लोककथा र लोकनाट्यविच तुलनात्मक अध्ययन

| लोककथा | लोकनाट्य |
|--|--|
| १. लोककथा श्रव्य विधा हो । | १. लोकनाट्यमा दृश्यात्मकता र श्रवणात्मकता दुवै हुन्छ । |
| २. गद्य विधा हो । | २. यो गद्य र पद्य दुवै हुन्छ । |
| ३. जुनसुकै स्थानमा र समयमा सुन्न सुनाउन सकिन्छ । | ३. यसका लागि मञ्च र पोशाकको आवश्यकता पर्दछ । |
| ४. वाचन मात्र हुन्छ । | ४. गेय तथा नृत्यको प्रस्तुति हुन्छ । |

२.४.३ लोककथा र लोकगीत

स्वच्छ र सहज आत्माबाट प्रस्फुटित लोकलयमा आबद्ध गीत नै लोकगीत हो । यो साहित्यको सर्वोत्कृष्ट, सर्वव्यापक, सर्वप्रिय विधाका रूपमा रहेको छ । यो सामाजिक भावनामा आबद्ध हुनुका साथै वेनामी समेत हुन्छ र लोकसम्पत्तिका रूपमा स्थापित हुन्छ ।

तालिका सङ्ख्या तीन : लोककथा र लोकगीतविच तुलनात्मक तालिका

| लोककथा | लोकगीत |
|--|--|
| १. बोलीचालीको ढाँचामा वर्णनात्मक शैलीमा हुनु | १. गतिमा तीव्रता हुनु (लयालुपन हुनु) |
| २. पात्रहरूको चरित्रचित्रण गरिन्छ । | २. लोकगीतमा सङ्गीत भर्न सकिन्छ । |
| ३. श्रोताबिना लोककथा भन्नुको अर्थ हुँदैन । | ३. लोकगीत काम गर्ने थलोमा एकलै हुँदा पनि गाउन सकिन्छ । |
| ४. लोककथामा असम्भवलाई सम्भव बनाइएको हुन्छ । | ४. हृदय फुटेर आएका यथार्थ अभिव्यक्तिहरू पाइन्छ । |

यसरी लोककथाको लोकप्रियता, विशालता र प्राचीनतालाई हेर्दा यो भण्डै लोकगीतसँग दाँजिन पुगेको छ । लोककथामा असम्भवलाई सम्भव बनाइएको हुन्छ । लोककथाले मानव समाजलाई समाजमा देखापरेको विकृति र विसङ्गतिप्रति सचेत बनाएको हुन्छ । लोककथाले नेपाली समाजमा रहेको हरेक पक्षलाई आफूमा समायोजन गरेको छ । त्यसैले समाजमा लोककथा बढी लोकप्रिय छ ।

२.५ लोककथाका तत्त्व

लोककथाका तत्त्वहरू साहित्यका अन्य विधाका तत्त्वहरूसँग मिल्दोजुल्दो भए तापनि विधागत रूपमा खेल्नुपर्ने भूमिकामा केही भिन्नता पाइन्छ । लोककथामा लोकतत्त्व र अभिप्राय पनि अनिवार्य विषय हो । लोककथाको अध्ययन गर्ने क्रममा यसका निर्माणात्मक तत्त्वहरूका बारेमा बुझ्न पनि आवश्यक हुन्छ । साहित्य र लोकसाहित्य दुवैका विभिन्न विधाहरूका संरचक घटकहरू जस्तै लोककथाको संरचनामा पनि विभिन्न तत्त्वहरू समाविष्ट हुन आउँछन् । लोककथालाई पूर्ण बनाउन आवश्यक तत्त्वहरू वा कथाको संरचनाका लागि सहयोग पुऱ्याउने अवयव (सामग्री) लाई लोककथाका तत्त्वहरू भनिन्छ । तत्त्वलाई उपकरण, अवयव संरचक, घटक आदि पनि भनिन्छ । यिनका आवश्यक संयोजन र व्यवस्थापन गरेपछि मात्र कथाको निर्माण हुन्छ । विषयवस्तुगत व्यापकता र आकार-प्रकारगत भिन्नताले गर्दा लोककथाका आवश्यक तत्त्वहरू यति नै छन् भनी किटान गर्न सकिँदैन । यसैले कथाको निर्माणमा आवश्यक हुन कथा र लोककथा दुवैको अनिवार्य तत्त्वहरूलाई क्रमशः तल प्रस्तुत गरिएको छ :

२.५.१ कथावस्तु

कथावस्तु लोककथाको प्रमुख र पहिलो तत्त्व हो । कथावस्तु बिना लोककथा रसिलो बन्न सक्दैन । पुराण, इतिहास, समाज र काल्पनिक विषयवस्तु लोककथामा रहन्छ । समाजका अन्धविश्वास, रूढी परम्परा, लोकोक्तिको आधारमा पनि कथानकको ढाँचा तयार हुन्छ, जसले कथालाई अगाडि बढाउँछ । कथाको कथावस्तुको बारेमा “कथामा घटनावलीको योजना अथवा अभिरेखा अथवा ढाँचालाई कथानक भनिन्छ । साथै उत्सुकता र संशय जनाउने गरी व्यवस्थित घटना र चरित्रको सङ्गठनलाई कथानक भनिन्छ” (शर्मा, २०५५ : पृ. ३८४) भनी आफ्नो धारणा प्रस्तुत गरेका छन् । यस्ता कथाहरू संयोगान्त वा वियोगान्त कुनै पनि हुन सक्छन् । कथाहरू प्रारम्भ, विकास र उपसंहार गरी कसिलो र सुसङ्गठित हुन्छन् ।

२.५.२ पात्र

पात्र (चरित्र) लोककथाको दोस्रो तत्त्व हो । लोककथा कल्पित वा काल्पनिक भएकाले यसका पात्रहरू पनि काल्पनिक संसारबाट टिपिएका हुन्छन् । कथामा मानवीय वा मानवेतर, सजीव वा निर्जीव आदि पात्र हुन सक्छन् । कथावाचक वा सर्जकले आफ्ना वरपर भएका वस्तु वा पदार्थलाई पात्र बनाएर त्यसैको माध्यमबाट आफ्ना मनका अनुभूतिलाई पोख्ने काम गर्दछ, र मनोरञ्जन लिने वा दिने काम गरिन्छ । यस्ता पात्रहरूले लोककथालाई जीवन्तता प्रदान गरेका हुन्छन् । पात्रको बारेमा “समाजको संरचना अथवा बनोटअनुसार कथामा पात्रहरूको चयन गरिनुपर्दछ । कथामा दुष्ट वा खल चरित्र भएका पात्रहरूप्रति पाठकहरूको सहानुभूति हुँदैन । त्यसैले कथामा सत्चरित्र वा मानवीय मूल्य र मान्यता बोकेका पात्रहरूको बढीभन्दा बढी अपेक्षा गरिन्छ । समाजमा निम्न, मध्यम र उच्च वर्गका व्यक्तिहरू हुन्छन् । समाजको स्थिति वा कथालाई सुहाउँदा पात्रहरूको प्रतिनिधित्व गर्ने किसिमका पात्रहरू हुनुपर्दछ । कथामा मानवीय र मानवेतर पात्रहरूले पनि प्रतीकात्मक रूपले कार्य वा सङ्केत गरेका हुन्छन्” (लामिछाने र लामिछाने, २०७८ : पृ. ११) भनेका छन् ।

२.५.३ परिवेश

नेपाली लोककथाको परिवेश विभिन्न भूगोल वा अलौकिक क्षेत्रसँग निकट छ । स्वर्ग, पाताल, नर्क, हिमाल, पहाड, छाँगा, छहरा, सहर, वस्तीहरूबाट आएका छन् । परापूर्वकालदेखि मध्यकाल तथा आधुनिककालको कुनै पनि परिवेशलाई समेटेर लोककथाको निर्माण भएको हुन्छ । परिवेशको बारेमा “कथाको स्थूल तत्त्वभित्र पर्ने परिवेशको पनि त्यत्तिकै महत्त्व रहेको

हुन्छ । परिवेश भनेको वातावरण हो” (लामिछाने र लामिछाने, २०७८ : पृ. १४) भनी आफ्नो धारणा प्रस्तुत गरेका छन् । यसैगरी “कथामा चरित्रले कार्यव्यापार गर्ने र घटनाहरू घट्ने वस्तुजगत्लाई परिवेश भनिन्छ” (शर्मा, २०५८ : ३१) भनेका छन् । लोककथाको परिवेश एकातिर र काल अर्कोतिर भयो भने कथाको विश्वसनीयता र यथार्थता अमिल्दो हुन्छ ।

२.५.४ संवाद

संवादले लोककथालाई रोचक र मिठासपूर्ण बनाउँछ । श्रोताहरूलाई मन्त्रमुग्ध पारी कौतुहलता प्रदान गर्न संवादले प्रमुख भूमिका निर्वाह गरेको हुन्छ । सजीव तथा निर्जीव पात्रहरूले पनि लोककथामा संवाद गरेर कथालाई रोमाञ्चपूर्ण र विनोदप्रिय बनाउँछन् । संवादको बारेमा “कथामा भएका कुनै भाव वा विचारलाई अभिव्यक्ति दिनका लागि भाषाका माध्यमबाट कथावस्तुको प्रस्तुतीकरण गरिन्छ । कथावस्तुको प्रस्तुति संवादको माध्यमबाट गरिन्छ” (लामिछाने र लामिछाने, २०७८ : पृ. ११) भनेका छन् । संवाद पात्रको स्तर, देश, काल, अवस्था र परिस्थितिअनुकूल सङ्क्षिप्त र सजीव हुनुपर्छ अनि मात्र यो पात्रको परिचायक बन्न सक्छ । कथाको अनिवार्य तत्त्व नभए तापनि संवादले कथालाई चखिलो, रोचक र प्रभावकारी बनाउँछ ।

२.५.५ उद्देश्य

परिवारका अग्रज सदस्यहरूले विभिन्न लोककथाहरू आफ्ना परिवारलाई सुनाएर राम्रा र असल पात्रहरूजस्तै योग्य र सक्षम बनाउन प्रयासरत रहन्छन् । लोककथाको उद्देश्यका बारेमा “प्रत्येक साहित्यिक रचना कुनै न कुनै प्रयोजन पूर्तिका लागि लेखिएको हुन्छ । प्रयोजन नै उद्देश्य हुन्छ । उद्देश्यको तात्पर्य जीवनका कुनै विशेष दशाको चित्रण हो । कथाको प्रमुख उद्देश्य समसामयिक यथार्थको उद्घाटन हो भन्ने मानिन्छ । उद्देश्य कुनै पनि कथाको केन्द्रीय पक्ष हो” (शर्मा, २०५८ : ४०) भनेका छन् । यसैले लोककथाको मुख्य उद्देश्य नै शिक्षा दिलाउनु, मनोरञ्जन दिनु, अर्ती-उपदेश दिनु, थकाई र निद्रा हटाउनु, दुःख-सुखका भावना व्यक्त गर्नु रहेको पाइन्छ ।

२.५.६ भाषा

लोककथाको भाषा जुन समाजमा कथा भनिन्छ त्यही समाजको परिवेशमा निर्भर हुन्छ । स्थानीय स्तरका लवज, भाषा, थैगो आदि प्रयोग गरेर लोककथा भनिन्छ । लोककथाको

भाषाको बारेमा “लोककथाको भाषा जति राम्रो हुन्छ अभिव्यक्ति पक्ष त्यति नै राम्रो हुन्छ । त्यसैले भाषालाई अभिव्यक्ति दिनका लागि आवश्यक तत्त्वका रूपमा स्वीकार गरिन्छ । त्यसैले यसको महत्त्व उच्च रहन्छ” (लामिछाने र लामिछाने, २०७८ : पृ. १४) भनेका छन् । यसको भाषा सरल, व्यावहारिक र बोलचालको भाषामा आधारित हुन्छ । थेगो, उखान र टुक्काहरूले गर्दा लोककथाको भाषा सुनिरहूँजस्तो लाग्दछ ।

२.५.७ शैली

लोककथाको शिल्पपक्षलाई शैली भनिन्छ । सामान्यतः वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, भित्री कथात्मक शैली र क्रमसम्बद्धनात्मक शैलीका लोककथाहरू प्रस्तुत गरिन्छन् । शैलीको बारेमा आफ्नो धारणा व्यक्त गर्दै “सामान्य अर्थमा शैलीलाई बाह्य गतिविधिको ढङ्ग-ढाँचा वा तरिकाको रूपमा बुझ्न सकिन्छ, भने भाषिक अर्थमा अभिव्यक्तिको तरिकाको रूपमा बुझ्न सकिन्छ” (भण्डारी र अन्य, २०६८ : पृ. २५) भनेका छन् । यसैले कुनै पनि कृतिको भाषिक अभिव्यक्ति नै शैली हो भन्न सकिन्छ ।

२.५.८ लोकतत्त्व

लोकतत्त्व लोककथाको अनिवार्य तत्त्व हो । कथाको भाषाको आधारमा लोककथा कुन जाति, समुदाय, क्षेत्र, धर्म, परम्परासँग सम्बन्धित छ सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ । समाजमा चलेका लोकसंस्कार, लोकपरम्परा आदिप्रति विश्वास, देवदेवी र धर्मप्रतिको आस्था र विश्वासलाई समेटेर लोकतत्त्व निर्धारण गरिन्छ । यिनै तत्त्वहरूको संयोजनद्वारा लोककथा निर्मित हुन्छ । कुशल कथावाचकहरूले यी तत्त्वहरूको कुशलतापूर्वक संयोजन गरी कलात्मक लोककथाको रचना गर्दछन् ।

२.६ लोककथाका विशेषता

लोककथा लोकसाहित्यको एक प्रमुख विधा हो । यसले वर्णनात्मक कथनद्वारा लोकसमुदायलाई मनोरञ्जन प्रदान गर्दछ । लोककथामा लोकसमाजका सुख, दुःख, पीडा, व्यथा, उत्साह, वैराग्य, बहादुरी, बुद्धिमानी आदि विविध अनुभूति र अनुभवको जीवन्त चित्रण गरिएको हुन्छ । यो मौखिक परम्परामा जीवित रहकाले अनवरत गतिशील र परिवर्तनशील हुन्छ । लोककथामा कल्पनामय रङ्गीचङ्गी अद्भुत अलौकिक घटनाको संयोजन भएको हुन्छ । कथाको विशेषताको बारेमा “मानव जातिमा भाषाको विकास भएसँगै कथा हाले

चलन चलिआएको छ । मानिसले जिब्रो फड्कार्न र सार्थक शब्द काड्न जानेदेखि नै रमाइलो र बसिबियाँलाका निमित्त कथा भन्ने र सुन्ने काम अटुट रूपमा हुँदै आएको होला भन्ने सहजै अड्कल गर्न सकिन्छ” (शर्मा, २०५८ : पृ. १) भनेका छन् । यस भनाइलाई हेर्दा लोककथाले रमाइलो प्रदान गर्नुका साथै समय कटाउन सहयोग पुऱ्याउने देखिन्छ । यसैले विस्तृत विषय क्षेत्र लोककथाको हुने हुँदा यसका विशेषता पनि यति नै छन् भन्न गाह्रो छ, तापनि केही विद्वान्हरूले लोकथाका तत्त्व, गुण र धर्मका आधारमा विभिन्न विशेषताहरू प्रस्तुत गरेका छन् । तीमध्ये धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदीका अनुसार लोककथाका विशेषता निम्नलिखित पाँच किसिमका छन् :

बनावट लोकरञ्जन हुनु,

रचनाकार अज्ञात हुनु,

तन्मयताप्रद शिल्पविधानका निम्ति अप्राकृत र अमानवीय तत्त्वको समावेश हुनु,

प्रेममय भावना प्रदर्शित हुनु,

रोमाञ्चमय अद्भुत तत्त्वको प्राधान्य रहनु आदि ।

शम्भुप्रसाद कोइरालाका विचारमा लोककथाका विशेषता निम्नानुसार आठ किसिमका छन् :

रचनाकारको अप्रत्यक्षता,

लोकरञ्जक संरचना,

अश्लील शृङ्गारको अभाव,

मानवीय मूल प्रवृत्तिको उद्बोधन,

रहस्य, रोमाञ्चक र अलौकिक तत्त्वको प्राधान्यता,

सुख र संयोगमा कथाको अन्त्य,

उत्सुकताको भावना,

सरल शैली आदि ।

यसरी विभिन्न विद्वान्हरूले विभिन्न समयमा आ-आफ्नै तरिकाले लोककथाका विशेषतालाई निर्धारण गरे तापनि उक्त विशेषता मात्र पर्याप्त छन् भन्न सकिँदैन । त्यसैले यहाँ केही उपलिखित विशेषतासहित केही नवीन विशेषता थपेर निम्नलिखित उपशीर्षकहरूमा लोककथाका विशेषताहरू प्रस्तुत गरिएका छन् :

२.६.१ व्यापक विषयवस्तुको प्रयोग

लोककथा विस्तृत र व्यापक विषयक्षेत्र ओगट्ने लोकसाहित्यको एक विधा हो । यसको विषयवस्तु लौकिक र अलौकिक जे पनि हुनसक्छ । यसले लोकजगत्मा पाइने मानिस, पशुपक्षी, प्राकृतिक जगत्का ढुङ्गामाटो आदि पदार्थहरूलाई पनि विषयवस्तु बनाएको हुन्छ भने अलौकिक मानिने देवदेवी, भूत, प्रेत, राक्षस आदिलाई पनि विषयवस्तु बनाएको हुन्छ । परम्परादेखि लोकसमुदायमा जीवित रहेका कारण लोकजगत्का चालचलन, राजा-महाराजाका नीति-नियम, प्रथा, प्रशासन, चलाखी धुत्याइँका साथै मानव अनुभूतिका सुख, दुःख, ईर्ष्या, द्वेष आदि विविध पक्षलाई लोककथाले आफ्नो विषयवस्तु बनाएको हुन्छ । त्यसैले जीवेन्द्रदेव गिरी लेख्छन् “लोककथाको विषयवस्तुको सीमा बाँध्न गाह्रो छ । तिनमा इतिहास, पुराण, धर्म, संस्कृति, समाज, प्रेम, साहसिकता, अलौकिकता आदि विभिन्न कुराहरूले स्थान पाएका हुन्छन् । काल्पनिक यथार्थसम्मका जुनसुकै पक्षलाई पनि आफ्नो विषयक्षेत्र बनाउँछ त्यसैले यसको विषयवस्तुमा व्यापकता छ ।”

२.६.२ आख्यानतात्मकताको प्रधानता

लोककथा लोकसाहित्यको आख्यानयुक्त गद्य विद्या हो । यसमा पात्र र घटना एवम् परिवेशको चित्रण गरिएको हुन्छ । लोककथामा प्रयुक्त घटनाहरूमा स्थूल आख्यानको प्रयोग गरिएको हुन्छ । विभिन्न घटनाका आख्यानहरूलाई कथानक तन्तुले क्रमबद्ध शृङ्खलीकरण गरिएको हुन्छ र एउटा सिङ्गो लोककथाको आख्यानतात्मक स्वरूपको निर्माण भएको हुन्छ । लोककथाका घटनाको वर्णन भूतकालिक ढाँचामा गरिएको हुन्छ । अतः लोककथामा विविध पात्र घटना र परिवेशको चित्रण कथन शैलीमा गरिएको हुन्छ । यसैले लोककथामा भएको विषयवस्तु, स्वरूप र शैलीजस्ता विविध पक्षमा केन्द्रित रहेर परिभाषा गरिएको भए पनि आख्यानयुक्त गद्यका रूपमा कथालाई सबैले स्वीकार गरेको पाइन्छ । अतः आख्यानतात्मकता लोककथाको अर्को प्रमुख विशेषता हो ।

२.६.३ कल्पनाको अधिकता

लोककथामा यथार्थभन्दा कल्पनाको प्रधानता रहन्छ । साधारण जनसमुदायको सरल, सहज र स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुने हुँदा यसमा हार्दिकता पनि पाइन्छ । लोककथामा कल्पनाको माध्यमबाटै श्रोतालाई काल्पनिक आनन्द दिन अद्भुत किसिमका चरित्रको चित्रण र घटनाको विस्तार गरिएको हुन्छ । देवदेवी, राक्षस, तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेत, साहस-वीरता, परी र अप्सरा आदिका अद्भुत रहस्यात्मक कथाहरूमा अझै कल्पनाको बढी मात्रामा प्रयोग भएको हुन्छ । लोककथामा कल्पनाको आधारमा आकास-पाताल पनि जोडिएको हुन्छ । पात्रहरू अदृश्य हुने, रूप परिवर्तन गर्ने, स्थलचर प्राणी पनि आकासमा उड्ने, अतिरञ्जनामूलक कार्यको प्रस्तुति लोककथामा भएको हुन्छ । यस्ता कार्यले श्रोतावर्गमा कुतूहलता र मनोरञ्जन प्रदान गर्दछ । कल्पनाकै माध्यमबाट नयाँ-नयाँ घटनाको सिर्जना गरी कथाको आयाम विस्तार गरेको हुन्छ ।

२.६.४ सामाजिकताको प्रयोग

लोककथा समाजको साक्षात् सम्पत्ति हो । समाजका धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि विविध पक्ष लिएर लोककथाको निर्माण भएको हुन्छ । त्यसैले यो जीवनजगतकै सेरोफरोमा घुम्छ । सामाजिक धरातललाई विषयवस्तु बनाएर लोककथाले रमाइला र रसिला तानाबाना बुन्ने गरेको पाइन्छ । लोककथामा जनसाधारणका कटु भावनाको प्रयोगसँगै पहाडका उकाली-ओराली, वन, पाखा एवम् तराई, मैदान, फाँट, नदीनाला आदि भौगोलिक समाजको चित्रण पनि भएको हुन्छ । लोककथामा सामूहिक अवचेतनको प्रभाव रहनुका साथै भाषा रीतिरिवाज एवम् संस्कृति आदिमा आञ्चलिकताको प्रभाव रहन्छ । लोककथाबाटै मानवको आद्य अवस्थाको र सामाजिक आदिम अवस्थाको जानकारी पाउन सकिने हुँदा आज समाजशास्त्री र मानवशास्त्रीहरूले पनि लोककथाको खोजी गर्ने गरेको पाइन्छ । अतः सामाजिकता लोककथाको एक अर्को महत्त्वपूर्ण विशेषता हो ।

२.४.५ मनोरञ्जनात्मकता

लोककथाका विभिन्न विशेषतामध्ये मनोरञ्जनात्मकता एक प्रमुख विशेषता हो । यसमा परी, अप्सरा, राजकुमार, राजकुमारी आदिका प्रेमप्रणय, हाउभाउ र सौन्दर्य आदिको चित्रण भएको हुन्छ । जसले श्रोतामा मनोरञ्जन प्रदान गरेको हुन्छ । लोककथामा प्रयुक्त भूत-प्रेत, टुना-

मुना आदि चमत्कारपूर्ण विषयका कथाप्रसङ्गले जनमानसमा कुतूहलता ल्याई रोमाञ्चकता प्रदान गर्दछ । पशुपक्षी, ढुङ्गामाटो आदि प्रकृति र जीवविषयक लोककथाको प्रमुख उद्देश्य नै मनोरञ्जन प्रदान गर्ने रहेको हुन्छ । ग्रामीणजगतमा बसेर दिनभर कृषि र पशुपालनको कार्यले थकित मनस्थितिलाई हल्का पार्न होस् वा साना नानीहरूलाई खेलाउन वा भुलाउन होस् जनसाधारणले साँभ्र अँगोनाको डिलमा बसी लोककथा भनी मनोरञ्जन लिन्छन् । यसरी प्रेम-प्रणयको प्रसङ्ग होस् वा तन्त्र-मन्त्र आदिका अद्भुत घटनामा या प्रकृति र पशुपक्षी आदि जीवविषयक लोककथामा होस् प्रायः सबै लोककथाबाट मनोरञ्जन लिन सकिन्छ । त्यसैले मनोरञ्जनात्मकता लोककथाको मुख्य विशेषता हो ।

२.६.६ परिवर्तनशीलता

लोककथा एक स्थानबाट अर्को स्थान र एक जिव्रोबाट अर्को जिव्रोमा सदै-सदै विकसित हुँदै जान्छ । यसको निश्चित रचनाकार र वास्तविक लिखित रूप हुँदैन । यो मौखिक रूपमै एक स्थानबाट अर्को स्थान, एक परिवेशबाट अर्को परिवेश, एक पिँढीबाट अर्को पिँढीमा परिवर्तन हुँदै र सदै जान्छ । यसरी परिवर्तन हुँदा कतिपय लोककथाको संरचना, पात्र, आयाम आदिमै परिवर्तन र परिवर्द्धन भएको पनि पाइन्छ । कतिपय लोककथाको आकारमै सङ्क्षेपीकृत भएको पनि पाइन्छ । यसरी सङ्क्षेपीकृत हुँदा वा परिवर्तन र परिवर्द्धन हुँदा लोककथाको भाव र उद्देश्यमा भने आघात परेको हुँदैन । अतः लोककथा समय, स्थान र परिवेशअनुसार परिवर्तन, परिवर्द्धन र सङ्क्षेपीकृत जे पनि हुने भएकाले परिवर्तनशीलता लोककथाको अर्को विशेषता हो ।

२.६.७ कुतूहलता

व्यक्तिको मनमा कुनै विषयका सम्बन्धमा उत्पन्न हुने उत्सुकता वा जिज्ञासालाई कुतूहलता भनिन्छ । यो लोककथाका केही अंश श्रोताले सुनिसकेपछि बाँकी अंश वा त्यसमा प्रयुक्त पात्र, घटना आदिका सम्बन्धमा के होला ? भनी तिनका हृदयमा जागृत हुन्छ र तिनमा एकाग्रता ल्याई लोककथाका घटनाप्रसङ्गप्रति आकर्षित गर्छ । लोककथाहरू घटनाप्रधान र रहस्यमूलक हुन्छन् । तिनमा अलौकिक पात्र र प्रसङ्गहरूको पनि चित्रण गरिएको हुन्छ । त्यस्ता घटना पात्र र प्रसङ्गले श्रोतामा कुतूहलता ल्याउँछ । ती घटनाको वर्णनसँगै श्रोतावर्गमा जिज्ञासाको परितृप्ति हुन गई आन्तरिक तृप्ति मिल्छ । कुतूहलताले श्रोतालाई पट्यार लाग्न दिँदैन । यसरी लोककथामा प्रयुक्त घटना र प्रसङ्गले श्रोतामा अब के होला ?

भन्ने जिज्ञासा उत्पन्न गरी त्यसको वर्णनसँगै तिनको जिज्ञासाको परितृप्ति हुने भएकाले कुतूहलता लोककथाको अर्को विशेषता हो ।

२.६.८ अभिप्रायको प्रयोग

अभिप्राय शब्दको अर्थ 'भाव' हो । यसको प्रभाव लोककथामा आदिदेखि अन्त्यसम्म आन्तरिक रूपमा रहेर त्यसलाई प्रभावकारी बनाइरहेको हुन्छ । यो लोककथाभिन्न पटक-पटक पुनरावृत्ति भइरहन्छ । यसले लोकलाई परम्परादेखि जुन अर्थ दियो त्यही मात्र व्यक्त गर्दछ । यो रूढी हुन्छ । अभिप्रायले सामाजिक विश्वास, लोकसंस्कृति, लोकपरम्परा आदि विविध मूल्यलाई झल्काइरहेको हुन्छ । अभिप्राय, चरित्र, घटना, विचार र शैली आदिसँग रूढीगत अर्थ लिएर सम्बन्धित भएका हुन्छन् । अतः लोककला र लोकसाहित्यका आधारतत्त्व वा निर्माण तन्तुका रूपमा अभिप्रायलाई लिइन्छ । त्यसैले यो लोककथाको एक विशेषता हो ।

२.६.९ अतिशयोक्तिमूलकता

अतिशयोक्तिमूलकता भनेको कुनै पनि घटना र विषयवस्तुलाई यथार्थभन्दा माथि उठाएर अलि बढी बढाउँ-चढाउँ गरेर भन्नु हो । लोककथाको कथनका सन्दर्भमा कथावाचकले विभिन्न घटनामा अतिशयोक्तिको प्रयोग गरी श्रोतावर्गमा अतिरञ्जना ल्याउने काम गरेको हुन्छ । श्रोताहरू पनि अतिशयोक्तिमूलक घटना सुनेर काल्पनिक आनन्दमा मग्छ भएका पाइन्छन् । लोककथाका वाचकले आफ्नो कथनकला र हाउभाउसहित कथाको प्रस्तुति गर्छ र श्रोतामाभ्र अवास्तविकतामा पनि वास्तविकताको विश्वास फैलाउन सफल हुन्छ । लोककथामा घटनाहरूलाई तारतम्य मिलाएर अतिशयोक्तिमूलक ढङ्गले प्रस्तुत गर्नुको प्रमुख उद्देश्य श्रोतावर्गमा मनोरञ्जन प्रदान गर्नु हुन्छ । प्रायः लोककथाका घटनाको चित्रणमा अतिशयोक्तिमूलकताको प्रयोग हुने भएकाले यो पनि लोककथाको एक अर्को विशेषता हो ।

२.६.१० गद्यात्मक सरल भाषाको प्रयोग

लोककथा लोकसाहित्यको आख्यानात्मक गद्य विधा हो । कतिपय लोककथाहरूमा रोचकता, यथार्थता र सत्यता उद्बोधन गर्न बिच-बिचमा पद्यको प्रयोग भएको पनि पाइन्छ । लोककथामा सामान्य पद्यको प्रयोग भए तापनि मूल रूपमा कथनको भाषा गद्य नै हो । यो ग्रामीण जनबोलीमा अभिव्यक्त हुने भएकाले लोककथामा सरल, सहज, बोध्य भाषाको प्रयोग

भएको हुन्छ । लोककथामा छोटो-छोटो वाक्यहरू रहेका हुन्छन् । संयुक्त र मिश्र वाक्यको प्रयोग भएको हुँदैन । लोककथाको संरचना, घटना, पात्र परिवर्तन हुने हुँदा यसको भाषा पनि परिवर्तनशील हुन्छ । स्थानीय भाषिका र स्थानीय बोलीको प्रभाव लोककथामा रहेको हुन्छ । लोककथाको भाषा आलङ्कारिक हुन्छ, तर त्यो स्वाभाविक ढङ्गले प्रयोग भएको हुन्छ । अतः लोककथाको भाषा सरल, सहज, बोध्य, स्वाभाविक र गद्यमय हुन्छ ।

२.६.११ वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग

लोककथा कथन र श्रवण प्रकृतिको जीवित लोकसाहित्यको विधा हो । यसको कथन गर्दा कथकेले वर्णनात्मक शैलीमा गर्छ । लोककथाको वर्णन रोचक र स्वाभाविक हुन्छ । यसमा स्थानीयताको रङ रहेको पाइन्छ । लोककथाहरू मूलरूपमा वर्णनात्मक भए तापनि कतै संवादको प्रयोग पनि भएको पाइन्छ । उक्त संवादले लोककथामा नाटकीय शैलीको झलक प्रस्तुत गर्छ । विशेष गरी विविध घटनाहरूको वर्णनमा वर्णनात्मक शैलीको विस्तृत प्रयोग भएको हुन्छ । लोककथाको वर्णन सरल र सहज हुन्छ र यसमा कथकेको मौलिकता पनि झल्किएको हुन्छ, जसले वातावरणलाई नै उत्साह र उल्लासमय बनाएको हुन्छ । अतः लोककथामा मुख्य रूपमा सरल, सहज किसिमको वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग हुन्छ भने संवादको प्रयुक्ति भएको कथामा नाटकीय शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । समग्रमा लोककथा विविध विषयवस्तुमा आधारित काल्पनिक, मनोरञ्जनमूलक, परिवर्तनशील, सरल र सहज वर्णनात्मक, भाषाशैलीमा अभिव्यक्त आख्यानात्मक गद्य विधा हो । यसको उठान 'एकादेश'बाट भई, 'सुन्नेलाई सुनको माला'मा विश्रान्ति हुन्छ । यसमा उपदेशात्मकता सत्को शिक्षा दिने, सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परालाई वहन गर्ने, प्रायः सुखान्त घटनाको वर्णन हुने, भाग्यवादी प्रवृत्तिको चित्रण हुनेजस्ता अन्य विशेषताहरू पनि रहेका हुन्छन् । यिनै विशेषताहरूले गर्दा लोककथा लोकजीवनमा व्याप्त र प्रिय भएर रहेको छ ।

२.७ निष्कर्ष

नेपाली लोककथाको अध्ययनपरम्परा सुरु भएको धेरै नभए तापनि यसको मौखिक र कथ्यपरम्परा भने मानव समाजको अस्तित्व सँगसँगै भएको मानिन्छ । विभिन्न जातजाति, भाषाभाषी, धर्म-संस्कृतिका बारेमा भनिएका र पाइएका लोक अभिव्यक्तिहरूलाई लोककथाको नाम दिइएको हो । लोककथा लोकजीवनका आस्था, विश्वास, सुख, दुःख, संस्कृति, परम्परा आदिलाई अभिव्यक्त गर्ने मौखिक परम्परामा जीवित आख्यानयुक्त गद्य

विधा हो । यसमा विविध विषयवस्तुलाई कल्पनाको माध्यमबाट सरल तथा सहज भाषा र वर्णनात्मक शैलीमा प्रस्तुत गरिएको हुन्छ । यसमा सामाजिकताको प्रयोग, अभिप्रायको प्रयोग, अतिशयोक्तिमूलकता, कुतूहलता, मनोरञ्जनमूलकता र परिवर्तनशीलताजस्ता विशेषताहरू रहेका हुन्छन् । कथावस्तु, पात्र, परिवेश, उद्देश्य, भाषाशैली, अभिप्राय आदि संरचक तत्वको सुसंयोजनद्वारा लोककथाको स्वरूप निर्माण भएको हुन्छ । लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाटक र आधुनिक कथासँग निकट सम्बन्ध राख्ने लोकसाहित्यकै एक चर्चित विधा हो ।

परिच्छेद तीन

धादिङ जिल्लाको सामान्य परिचय

३.१ नामकरण

धादिङ जिल्लाको नामकरणको सन्दर्भमा एउटा जनश्रुति भेटिन्छ। उक्त जनश्रुतिअनुसार नेपालकै दुर्लभ जाति चेपाङहरूले मान्ने ज्वालादेवीको नामबाट यस जिल्लाको नाम रहन गएको हो। चेपाङहरूको भाषामा 'धा' भनेको 'देवता' र 'दिङ' भनेको 'आगोको ज्वाला' हो। यिनै 'धा' र 'दिङ' को समासबाट यस जिल्लाको नाम रहन गएको हो।

३.२ धादिङ जिल्लाको ऐतिहासिक महत्त्व

श्री ५ बडामहाराज पृथ्वीनारायण शाहले नेपाल एकीकरण गर्नुअघि धादिङ जिल्लामा पनि बाइसे-चौबिसे राज्य भएको अनुमान यहाँ भएका सल्यानकोट, मैदिकोट, धादिङकोटजस्ता कोटहरूका कारण गर्न सकिन्छ। नेपालको इतिहासमा खासै उल्लेख नपाइने यस जिल्ला पृथ्वीनारायण शाहको एकीकरण अभियानमा गोरखाबाट पूर्व-पश्चिम चढाई गर्दै जाँदा मूलबाटो बन्न पुगेकाले यस जिल्लाको छुट्टै ऐतिहासिक महत्त्व रहेको देखिन्छ। विशाल नेपाल एकीकरणपश्चात् राजा महेन्द्रले नेपाललाई चौध अञ्चल र पचहत्तर जिल्लामा विभाजन गरेपछि मात्र यस जिल्लाले छुट्टै अस्तित्व कायम गरेको हो। नेपालको इतिहासमा खासै उल्लेख नभएको यस जिल्लालाई राष्ट्रनिर्माणका क्रममा भने राष्ट्रनिर्माताहरूले आफ्नो योजना स्थल बनाएका थिए भन्ने कुरा पृथ्वीनारायण शाहको 'दिव्योपदेश' मा भेटिन्छ। त्यस समयमा धादिङ जिल्ला नुवाकोट, काठमाडौँ, मकवानपुर र वनारस जाने मूलबाटोको रूपमा प्रयोग भएको पाइन्छ। "थाँ ... कोटको ठूलो भञ्ज्याङ काटी रातदिन गरी कल्लारिघाट तरी धादिङ उक्लेर चेप्याको षावा लिग्लिगको आड गरी राषेका मेरा तीन वीर छन् तिनलाई बोलाहटको रुका लेखनजैसी भन्दा तिनको नाउँ के के हो भनी सुध्याया र रणजित् वस्न्यात, मानसिं रोकाह, वीरभद्र पाठक मैधिमा रातदिन गरी आइपुक भनी लेषी पठायँ र आइपुगे र तिन छेउ यकान्त गय्याँ र भने दिक्वन्द सेनसित हाँक दि आय्याँ हानको मनसुवा पनि राषि आय्याँ तिमीहरू क्या भन्छ्यौँ भनी मैले भन्दा हान्नुहवस् महाराज भनेर सल्लाह दिया...छ।" यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने, धादिङको मैदीमा बसेर नेपाल एकीकरण गर्ने योजना

पृथ्वीनारायण शाहले बनाएका थिए । यसैले गर्दा पनि धादिङ जिल्लाको छुट्टै ऐतिहासिक महत्त्व रहेको पाइन्छ ।

३.३ भौगोलिक प्राकृतिक अवस्था

नेपालको सात प्रदेशमध्ये बागमती प्रदेशमा पर्ने धादिङ जिल्ला एक पहाडी जिल्ला हो । राजधानीको निकट भएर पनि यो जिल्लाको अधिकतम क्षेत्रको भौगोलिक अवस्थिति दुर्गम तथा पहाडी क्षेत्रको रूपमा रहेको छ । विभिन्न जात-जातिको वासस्थान रहेको यस जिल्लामा आ-आफ्नै किसिमका लोकसाहित्यका विधाहरू भेटिन्छन् । समुद्र सतहबाट करिब ४४८ मिटर अग्लो नदीवेसीदेखि ७४०९ मिटर अग्लो गणेश हिमालसमेत रहेको यस जिल्लाको भौगोलिक अवस्थिति २७°४०' उत्तरदेखि २८°१४' उत्तरी अक्षांश र ८४°३५' पूर्वदेखि ८५°१७' पूर्वी देशान्तरविच रहेको छ । देशको भण्डैविच भागमा पर्ने धादिङ जिल्लाको कूल क्षेत्रफल १९२६ वर्ग कि.मि. रहेको छ । यो क्षेत्रफल नेपालको कूल भू-भागको करिब १.३ प्रतिशत जति देखिन्छ । यस जिल्लाको उत्तरमा चीनको स्वशासित क्षेत्र तिब्बत जोडिएको छ भने पूर्वमा नुवाकोट, रसुवा, र काठमाडौं, दक्षिणमा मकवानपुर र चितवन, पश्चिममा गोरखा गरी छवटा जिल्ला जोडिएका छन् । चीनको सिमाना हुँदै महाभारत शृङ्खलालाई पार गरेर भित्री मधेस छुने नेपालको एक मात्र जिल्ला धादिङ हो । भौगोलिक बनावटको हिसाबले पहाडी जिल्लाको रूपमा चिनिने यस जिल्ला राजधानीसँग जोडिएर पनि अति दुर्गम र विकट मानिन्छ । यस जिल्लामा आँखु, त्रिशूली, बूढीगण्डकीजस्ता ठूला नदीहरू छन् । यसका साथै प्रशस्त कृषि उपज उब्जाउ हुने सल्यानटारजस्ता थुप्रै महत्त्वपूर्ण टारहरू पनि रहेका छन् । मुख्य गरी तीन किसिमको हावापानी पाइने यस जिल्लाको सबैभन्दा होचो भू-भाग नदी किनारका टार र बेसीहरूमा उष्ण हावापानी पाइन्छ भने त्यहाँबाट उत्तरतर्फ गएपछि क्रमशः समशीतोष्ण र शीतोष्ण हावापानी पाइन्छ । यस जिल्लाको औसत वार्षिक तापक्रम २२° सेल्सियस र औसत वार्षिक वर्षा २११० मिलिमिटर हुने गर्दछ ।

३.४ धादिङको महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलहरू

धादिङ जिल्लामा थुप्रै महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलहरू छन् । तीमध्ये त्रिपुरासुन्दरी माईको मन्दिर, ढोलामण्डलीमाईको मन्दिर, भैरवीनाथको मन्दिर, सिद्धेश्वर महादेव, ज्वालामुखी देवीको मन्दिर, गुप्तेश्वर गुफा, तेह्रतले गुफा, गल्छी, महेश दोभान, मैदीकोट, नीलकण्ठ महादेवको मन्दिर, गङ्गा-जमुना आदिलाई धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिले महत्त्वपूर्ण

मानिन्छ । यस बाहेक पनि यस जिल्लामा प्राप्त भएका पुरातात्विक महत्त्वका कागज तथा ताम्रपत्रहरू पुरातत्त्व विभागमा संरक्षित भएको जानकारी पाइन्छ । यस दृष्टिकोणले पनि यस जिल्लालाई अन्य जिल्लासरह महत्त्वपूर्ण मान्न सकिन्छ । यस जिल्लामा रहेका केही सांस्कृतिक स्थलहरूको परिचय क्रमशः तल प्रस्तुत गरिएको छ :

३.४.१ त्रिपुरासुन्दरी

धेरै देवी-देवताहरूको भन्दा भिन्दै विशेषता रहेको यस मन्दिरमा रहेकी देवीलाई छ महिना माइती (कोट) मा र छ महिना घर (वेसी) मा राखिन्छ । मूर्ति परापूर्वकालदेखि नै बाकसभिन्न भएकाले र मूर्तिलाई हेरेमा अनिष्ट हुने किम्वदन्ती रहेकोले यस मन्दिरकी देवीको मूर्तिको स्वरूप कस्तो रहेको छ भन्ने कुरा स्वयम् त्यस मन्दिरको पुजारीलाई पनि थाहा छैन । देवी त्रिपुरासुन्दरी माइलाई भेट्ने इच्छा बडामहाराजधिराज पृथ्वीनारायण शाहले प्रकट गर्दा सपनामा देवीले पुजारीको छोरीको रूपमा दर्शन दिएको कुरा स्वयम् पृथ्वीनारायण शाहले 'दिव्योपदेश' मा उल्लेख गरेका छन् ।

३.४.२ गङ्गा-जमुना

पहाडको उच्च स्थानमा रहेको दक्षिण मोहडा फर्केको अत्यन्तै भिरालो जमिनको सतहमा रहेको यो लेक समुद्र सतहबाट ३३५४ मि. उचाइमा रहेको छ । यस लेकको उच्चसमस्थलीमा करिब ५०० वर्ग मि. मा फैलिएको एउटा सुन्दर दह छ । त्यो दहबाट निष्कासित भएर दक्षिणतिर दुईवटा झरना झरेका छन् । मुहानबाट करिब १५० मिटर तल खसेको यो झरना अति मनमोहक देखिन्छ । झरना नजिकैको पहरामा सुन्दर दुईवटा मूर्ति रहेका छन् । जसलाई गङ्गा-जमुनाको नामबाट पुकारिन्छ । यस लेकमा नुहाएमा परलोक सुधार हुनुका साथै कुरुरले टोकेको मानिसहरूले एकपटक यहाँ नुहाउनु नै पर्छ भन्ने जनविश्वास रहेको पाइन्छ । यस लेकमा खास गरी एकादशीमा भव्य मेला लाग्दछ ।

३.४.३ ज्वालामुखी माई (ज्वालादेवी)

धादिङ जिल्लामा बसोवास गर्ने चेपाङ जातिको इष्टदेव मानिने ज्वालादेवीको मन्दिर धादिङ जिल्लाको ज्वालामुखी गाउँपालिका वडा नं. ६ मा पर्दछ । यो मन्दिर समुद्र सतहबाट करिब ४२०० फिट उचाइमा रहेको छ । ज्वालादेवीको मूर्तिको आसपास उनका गणका मूर्तिहरू छन् । यस मन्दिरको बाहिरपट्टि पं. दैवज्ञकेशरी अर्ज्यालले १८५७ मा चढाएको ३२ धार्मी

तौल भएको ढलौटको घण्ट अहिले पनि छ । पहिले त्यहाँ विशाल ढलौटको सिंहको मूर्ति भएको र पञ्चायतकालमा त्यो मूर्ति चोरी भएपछि त्यस ठाउँमा ढुङ्गाको मूर्ति प्रतिस्थापन गरिएको थियो । यस मन्दिरमा खास गरेर नियमित पूजाबाहेक पञ्चमी, पूर्णिमा, नवरात्रि आदिका दिन भक्तजनहरूको भीड लाग्ने गर्दछ ।

३.४.४ भैरवीथान (कोट भैरवी)

धादिङ जिल्लाको पुरानो सदरमुकाम अर्थात् हालको सुनौला बजार मानिने पुरानो धादिङमा कोट भैरवीको मन्दिर छ । यस जिल्लाको सदरमुकाम धादिङवेसीबाट करिब तीन घण्टा पैदल यात्रा गरेपछि यो मन्दिरमा पुग्न सकिन्छ । यस मन्दिरमा नियमित पूजा गर्ने परम्परा छ । विशेष गरी फूलपातीको दिनमा भने भक्तजनहरूको ठूलो भीड लाग्दछ । यस मन्दिरको नियमित पूजाको लागि गुठीको पनि व्यवस्था गरिएको छ । भैरवीथान मन्दिरको दक्षिणतर्फ नेवारपानी भन्ने गाउँ छ । त्यस गाउँमा एउटा सुकेको पोखरी छ, जसलाई 'मल्ल पोखरी' भन्ने गरिन्छ । यस पोखरी नजिकै कर्णेश्वर महादेवको मन्दिर पनि छ । जहाँ काजी भीम मल्लले एउटा गढी बनाएका थिए भन्ने किम्बदन्ती पाइन्छ । यस वरपर छरिएका पुराना ईटाका टुक्रा र कलात्मक पर्खालका भग्नावशेषले पनि यो कुरा पुष्टि गर्दछ ।

३.४.५ गुप्तेश्वरी गुफा (महादेवस्थान पाउद्वार)

प्रकृतिद्वारा निर्मित यो गुफा धादिङ जिल्लाको मूलावारी गाउँमा अवस्थित छ । यो गुफा चुनढुङ्गाबाट निर्मित छ । यस गुफाभित्र गुप्तेश्वर महादेवको मूर्तिका साथै थुप्रै जीवहरूसँग मिल्ने आकृतिहरू रहेका छन् । हिमयुगका मानिसहरूको वासस्थान हुनसक्ने अनुमान गरिएको उक्त गुफा दुई विभक्त खण्डमा छ । गुफाको भित्री खण्डको पहरोमा महादेवको मूर्ति छ । यसैको माथिल्लो खण्डमा गाईको थुन आकारका आकृतिहरू छन्, जसबाट चुनपानी शिवलिङ्गमा खस्दछ । यहाँ नियमित रूपमा पूजा गर्ने प्रचलन नभए तापनि शिवरात्रि, श्रीपञ्चमी, पूर्णिमा, ठूलो एकादशी आदिमा भने भक्तजनहरूको ठूलो भीड लाग्ने गर्दछ । गाई बन्ध्या भएमा (बैलिएमा) यहाँ दूध र दाम्लो चढाएमा गाई ब्याउँछ भन्ने जनविश्वास रहेको पाइन्छ । यस गुफालाई धार्मिक र सांस्कृतिक दृष्टिले मात्र होइन प्राकृतिक दृष्टिले पनि महत्त्वपूर्ण मानिन्छ । यहाँबाट त्रिशूली लगायतका विभिन्न स्थानहरूको मनोरम दृश्यहरू नियाल्न सकिन्छ ।

३.४.६ तेह्रतले गुफा

सर्वप्रथम २०४८ साल कार्तिक ६ गतेका दिन धादिङ जिल्लाको खाल्टे गा.वि.स. मा पर्ने बसाह गाउँका मेघबहादुर गुरुडले उक्त गुफा पत्ता लगाई गुफाभित्रका विविध कुराका बारेमा जानकारी प्राप्त गरी यसको बारेमा प्रचार-प्रसार गरेका थिए । यो गुफा भएको ठाउँलाई यहाँका वासिन्दाहरू 'स्याल डाँडा' का नामले पुकार्दछन् । गुफाको बाहिरी भागको टुप्पोमा रहेको विशाल चट्टानलाई 'नागढुङ्गो' भन्ने गर्दछन् । समुद्र सतहबाट करिब ४९६० फिटको उचाइमा रहेको उक्त गुफाभित्र तेह्रवटा तला छन् । गुफाभित्र चमेराहरू प्रशस्त मात्रामा भेटिने हुनाले यस गुफालाई 'चमेरे गुफा' पनि भन्ने गरिन्छ । गुफाभित्र निकै अँध्यारो भएकोले गर्दा टर्च वा लाल्टिन बालेर मात्र हिँड्न सकिन्छ । यस गुफाभित्र विभिन्न किसिमका आकृतिहरू देखिन्छन् । ती आकृतिहरू विशेष गरी हात्ती, मृग, गाई, गाईका थुन, शिवलिङ्ग, गणेश आदिसँग मिल्दाजुल्दा देखिन्छन् । हिउँको घरजस्तो लाग्ने यो गुफालाई आदिम मानवको निवासस्थल भएको अनुमान गरिएको छ ।

३.४.७ मण्डली माई

धादिङ जिल्लाको ढोला गा.वि.स. को वडा नं. २ मा रहेको यो मन्दिर धार्मिक र सांस्कृतिक दृष्टिले अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानिन्छ । नियमित पूजा गर्ने व्यवस्था गरिएको यस मन्दिरमा पूजा गर्नका निम्ति मगर जातिका किशोर पुजारीको व्यवस्था गरिएको छ । अन्य मन्दिरमा भन्दा छुट्टै विशेषता रहेको यस मन्दिरमा महिलालाई जान वर्जित गरिएको छ । बाखाको पाठी भोग लाग्ने यस मन्दिरमा देवीको पूजा गरिन्छ । महिलाहरूले मन्दिरपट्टि फर्केमा पनि अनिष्ट हुन्छ भन्ने जनश्रुति पाइएअनुसार आजसम्म पनि महिलाहरू देवीको दर्शन गर्न गएको थाहा पाइँदैन । विशेष गरी मङ्गलवार भीड हुने यस मन्दिरको खास विशेषता के हो भने भोग चढाएपछिको मासु घर फर्काएर लैजान नहुने हुँदा पूजा गर्न जाने घरको मान्छेले आफ्ना छिमेकीहरूलाई निम्तो गरी मन्दिर नजिकैको खोलामा पकाई खाएर आउँछन् । जसले यस मन्दिरलाई सम्झेर भाकल गर्छन् उसको मनोकामना पूरा हुन्छ भन्ने जनविश्वास आज पनि यस भेगमा विद्यमान रूपमा रहेको पाइन्छ ।

३.४.८ मैदीकोट

धादिङ जिल्लाको मैदीकोटलाई एउटा ऐतिहासिक स्थलको रूपमा मानिन्छ । समुद्र सतहबाट करिब ४९८३ फिटको उचाइमा रहेको यस कोटमा कोटभैरवी (खड्गदेवी) को मन्दिर छ ।

मन्दिरभिन्न अष्टभुजा भैरवीको सुन्दर मूर्ति देख्न सकिन्छ । त्यस मूर्ति वरिपरि अन्य देवदेवीको मूर्तिहरू पनि छन् । पहिले यहाँ शिवालय, फूलबारी, दरबार आदि थिए भनिन्छ । यहाँ एउटा भीमसेनस्थान पनि छ । मैदीमा रामशाहका भाइ दलुशाहको दरबार थियो र राजा पृथ्वीनारायण शाहको उपनयन पनि यसै ठाउँमा भएको जनश्रुति पाइन्छ । पृथ्वीनारायण शाहको उपनयन गर्दा प्रयोग गरिएको सुरो पहिले यहाँ भएको र अहिले त्यो चोरी भएको उल्लेख पाइन्छ ।

३.४.९ पशुपतिनाथको मन्दिर

धादिङ्गवेसी बजार नजिकै पर्ने यो मन्दिर ऐतिहासिक नभए पनि यस क्षेत्रको प्रसिद्ध तीर्थस्थल बनेकोले ऐतिहासिक बन्दै गइरहेको छ । २०३३ सालको बालाचतुर्दशीका दिन शतबीज छरेर उद्घाटन गरिएको यो मन्दिर करिब तेह्र रोपनी क्षेत्रफलमा फैलिएको छ । नियमित पूजाको व्यवस्था नभैसकेको यस मन्दिरमा विशेष गरेर शिवरात्रि, बालाचतुर्दशी, पञ्चमी, एकादशी, जनैपूर्णिमाका दिन भीड लाग्ने गर्दछ । यसका अतिरिक्त आजभोलि विवाह, व्रतबन्धको कार्य सम्पन्न गर्नका निमित्त पनि भीड लाग्ने गर्दछ । यस मन्दिरको पश्चिममा आँसीखोला र पूर्वमा विन्दुकेशरी खोला बग्दछन् । मन्दिरभन्दा केही तल यी दुई खोलाको सङ्गमस्थल छ भने यो ठाउँ यस क्षेत्रको आर्यघाट बन्न पुगेको छ ।

३.४.१० गल्छी र महेश दोभान

धादिङ्ग जिल्लास्थित बैरेनी गाउँपालिकाको त्रिशूली नदी र महेशखोलाको हालको सङ्गमस्थललाई 'गल्छी' भनिन्छ र पुरानो दोभानलाई 'महेश दोभान' भनिन्छ । डाँडो काटेर गल्छेडो बनाएकोले त्यस ठाउँलाई गल्छी भनिएको हो । पुरानो महेश दोभानचाहिँ महादेवस्थानमा छ । बगैँचा र कुटीसमेत रहेको यो स्थान वरिपरि भिरालो चौर छ । यहाँ एकादशीका दिन मेला लाग्दछ । ऐतिहासिक तथा धार्मिक-सांस्कृतिक हिसाबले पनि यी ठाउँ उल्लेखनीय मानिन्छन् । हालको गल्छी दोभानदेखि महेश दोभानसम्म फाँट छ करिब दुई कि.मि. क्षेत्रको दूरीमा रहेका यी दुई दोभान नजिकैबाट पृथ्वी राजमार्ग गएको छ । अतः पृथ्वी राजमार्ग हुँदै यात्रा गर्ने जो कोहीलाई यी ठाउँबारे जिज्ञासा उत्पन्न सक्छ र गल्छीको रहस्य जान्न मन लाग्न सक्छ । महेशखोलालाई करिब दुई कि.मि. माथि नै डाँडो काटेर त्रिशूलीमा खसालिएको यो गल्छी निर्माणको आफ्नै इतिहास रहेको छ । १९०३/०४ सालतिर राणा प्रधानमन्त्री जङ्गबहादुरको पालामा फौदसिंह नामका एकजना कर्णेलले यसको निर्माण

गरेका हुन् भन्ने किम्बदन्ती पाइन्छ । आफ्नो सैनिक जीवनमा सामान्य त्रुटिका कारण जङ्गबहादुरबाट जागिर खोसिएका कर्णेल फौदसिंह बिनाकसुर ठूलो सजाय पाएको महसुस गर्दै बरालिँदै त्यस ठाउँमा पुगेछन् । त्यहाँ पुगेर उक्त ठाँउको अवलोकन गर्दा गल्छी काटेर महेशखोलालाई त्यहीँबाट त्रिशूलीमा खसाउन सकिने सम्भावना देखेपछि उनी एकलैले गल्छी काट्न थालेछन् । त्यहाँ वरपरबाट हेर्न आउने सबैलाई आफ्नो कुरा बताएपछि उनलाई सबैले सहयोग गरेकाले केही महिनामै गल्छी काट्ने काम पूरा भएछ । यसरी अन्ततः महेशखोलालाई त्यही गल्छीबाट त्रिशूलीमा खसालेर उनले सन्तोषको सास फेरेछन् । फौदसिंहको बहादुरीपूर्ण यस कामको चर्चा सर्वत्र हुन थालेपछि राणा प्रधानमन्त्री जङ्गबहादुरको कानमा पनि यो समाचार परेछ । कर्णेल फौदसिंहले गल्छी निर्माण गरेको हल्ला सुनेपछि त्यस ठाउँमा हेर्न पुगेका जङ्गबहादुरले उसको साहसिक कामको प्रशंसा गर्दै पुनः जागिर थमौती गराएका थिए भन्ने किम्बदन्ती पाइन्छ । यसै कारणले गर्दा गल्छीलाई एउटा साहसिक इतिहास बोकेको ऐतिहासिक स्थल मानिन्छ ।

३.५ निष्कर्ष

भौगोलिक स्थितिको अध्ययन गर्दा उत्तर हिमालय पर्वतदेखि दक्षिणको महाभारत पहाडसम्म फैलिएका नेपालको एक मात्र जिल्लाको रूपमा परिचित धादिङ प्रसिद्ध गणेश हिमालको काखमा अवस्थित छ । धादिङ अनेकौं नदीनाला, तालतलैया तथा प्राकृतिक मनोरम दृश्यहरूले भरिपूर्ण जिल्ला हो । गङ्गा-जमुना भरना, तातोपानी मूल, गुप्तेश्वरी गुफा, चमेरे गुफा, त्रिपुरासुन्दरी, ज्वालामुखीमाई, भैरवीथान, तेह्रतले गुफा, मण्डलीमाई, मैदीकोट, पशुपतिनाथको मन्दिर, गल्छी र विन्दुकेशर, सिद्धलेक तथा विभिन्न फाँटहरू नै यो जिल्लाको पहिचान हो । बागमती प्रदेशमा पर्ने आफ्नै मौलिक विशेषता रहेको धादिङ जिल्ला राजधानीसँग जोडिएको सुगम ठाउँदेखि लिएर दुर्गम पहाडी धरातललाई समेटि उत्तरमा छिमेकी मुलुक चीन, पूर्वमा नुवाकोट र काठमाडौं, पश्चिममा गोर्खा र दक्षिणमा मकवानपुर र चितवन जिल्ला रहेका छन् ।

परिच्छेद चार

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन

र वर्गीकरण

४.१ लोककथाहरूको सङ्कलन

लोककथा निर्माणका सन्दर्भमा आधुनिक कथामा जस्तै ख्यातिप्राप्त स्रष्टाको जरुरत पर्दैन । लोककथा स्थानीय वातावरणको सेरोफेरोमा जन्मिएका हुन्छन् । लोककथाहरू सरल र सामान्य भाषामा स्थानीय भाषिकाको प्रयोगसहित प्रस्तुत हुने गर्दछ । सहजता र सरलता नेपाली लोककथाको आफ्नै वैशिष्ट्य हो । आधुनिकताले ढपक्क ढाकेको समाजमा लोकसाहित्यको सङ्कलन र संरक्षण गरी भोलिका पुस्तालाई हस्तान्तरण गर्नु यो पुस्ताको प्रमुख दायित्व भएको छ ।

आदिकालदेखि नै लोककथाको प्रचलन भएको भए पनि आधिकारिक तवरले यसको सङ्कलन कार्य भने धेरैपछि भएको पाइन्छ । आज पनि यसको सङ्कलनको महत्त्व उत्तिकै रहेको छ । धादिङ जिल्लाको थाके-९ र गजुरी-२ मा लोककथा सङ्कलन गर्दा सङ्कलित भएका एघारवटा लोककथालाई क्रमशः यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ :

४.१.१ सासू र बुहारी

एकादेशमा एउटी महिला रहिछन् । उनको सानैमा विहे भयो । छोरा जन्मिएपछि लोग्ने मर्न्यो । जवान लोग्ने मरेपछि छोरा हुर्काउन उनलाई साढे कष्ट भयो । उनमा जवानी थियो त्यसैले धेरै मान्छेहरूले उनलाई बाटोघाटो गाउँठाउँ सबै ठाउँमा घेराऊ गर्ने, जबरजस्ती गर्न खोज्ने, स्वास्नी बनाउन खोज्ने, गिद्धे आँखाले हेर्ने तर म कतै गएँ भने यो छोराको हाल के होला ? कसले पाल्ला र के गर्ला भनेर ती सबैकुरा दबाएर तिनले, ठीक छ म यहीं छोरा हुर्काउँछु । यसले मलाई कमाउँछ, खुवाउँछ र पाल्छ । अरूको सहारा किन लिनु भनेर आफ्ना चाहनाहरूलाई दबाएर त्यो लाउँलाउँ र खाउँखाउँ भन्ने उमेर खेर फाल्दै जीवन चलाउँदै गएपछि छोरा जवान भयो । छोराको पेशा नजिकैको खोलामा गएर दिनदिनै माछा मार्ने अनि त्यो लोग्ने बेच्ने र त्यसैबाट चामल किन्ने । केही माछा घर ल्याउने त्यसैमा र भोलि हालेर माछा र भात खाने थियो । आमा-छोरा आफ्नो अवस्थाबाट रमाइलो

मानिरहेका थिए । छोराले सधैं माछा खुवाएकाले आमालाई माछाको स्वादचाँहि साह्रै बसेको रहेछ । समय बित्दै गयो । छोराको बिहे गर्ने बेला भयो । एउटा केटी खोजेर छोराको बिहे गरिदिए । बिहे गरेपछि दुई-चार महिना सबैलाई रमाइलो नै भयो । पछि बुहारीले सासूलाई अर्घेलो देख्न थाली । यसै निहुँमा लोग्ने-स्वास्नीको भगडा पर्न थालेपछि आमाले, “तिमीहरूको भगडा के कारणले परिराछ” भनेर छोरालाई सोधिछन् । उसले भगडाको कारण भन्न अन्कनायो । आमाले कर गर्दै, “भन् न भन्” भन्दा “तपाईंके कारणले हो । तपाईंकी बुहारी तपाईंलाई पालेर बस्दिन भन्दछे । यसलाई छोडौं कि ! तपाईंलाई पालौं कि !” छोराको यस्तो कुरा सुनेर बूढीको आँसु चुहियो । त्यसरी हुर्काएको छोराले बुहारी ल्याएपछि राम्रोसँग लाउन-खान देलान् भनेको त मेरै कारणले घर भगडा पर्न थालेछ । उनले छोरालाई भनिन्, “लौ ठिकै छ मेरै कारणले हो भने यतापट्टि एउटा पालीमा मेरो बस्ने ठाउँ बनाइदे । त्यहीं पकाउंला-खाउंला । मेरै कारणले तिमीहरू लोग्ने स्वास्नी छुट्टिनु हुँदैन, सँगै बस्नुपर्छ । भैगो ! मेरो भाग्य यस्तै रहेछ ।” छोरालाई पनि हत्तपत्त आमाले त्यसो कहिले भन्छिन् भन्ने भएको थियो त्यसैले हत्तपत्त पाली वारेर “लौ आमा ! बस्नु-खानु” भन्यो । छोरो सधैं माछा मार्न जान्थ्यो । माछा ल्याएर पकाउंथ्यो । छुट्टेर बस्या दिनबाट आमाले माछा खान पाईनन् । छोराबुहारीले माछाको भोल पनि आमालाई दिएनन् । वल्लो कोठामा पकाको पल्लो कोठामा वास्ना आइहाल्छ । बूढी घुटुघुटु थुक निल्दै गुन्द्रुक र भात खाँदै बसिन् । धेरै दिन बितेपछि बूढीलाई माछा खाने साह्रै रहर लागेछ । असाध्यै रहर लागेपछि एकदिन आज त भन्छु नै भनेर छोरा-बुहारीकोमा पसेर बुहारीलाई “तिमेरु सधैं माछा ल्याएर खान्छौं मलाईचाहिँ दिँदैनौ । मलाई पनि माछा खान साह्रै मन लागेको छ, तेरो मालिक घर आएपछि आमालाई नि एकछाक माछा दिनुपर्छ भन्दे न है” भनिन् । त्यसै बेला छोरोचाहिँ माछा लिएर फुत्त भित्र छिरेछ । छिरेपछि “आमा किन पस्या हो ?” भनेर श्रीमतीलाई सोध्दाखेरि “थाऽछैन किन आको ?” भनी । “भन् न भन !” भन्दा “त्यस्तो कुरा पनि के भन्नु” भनिन् । फेरि “भन् न भन् !” भन्दा “यो उमेरमा तिम्री आमा पोइल जान्छु भन्छिन्” बुहारीले भनिछ । “ए ...! मलाई त्यो बाल्यकालदेखि हुर्काको आमा अब बूढेसकालमा पोइल जाने ! कुलको इज्जतको ख्याल छैन तिनलाई ? यस्ता आमालाई नि यो घरमा राख्न हुन्छ ?” भनेर भोलिपल्ट बिहानै डोकामा हालेर आमालाई लिएर एउटा ओढारमा राखेछ । ओढारमा छोडेर फर्कन लागेको बेलामा गड्याड-गुडुड गरेर मेघ गर्जिदै पानी पर्न थालेछ । बाहिरको वातावरण डरलाग्दो भएपछि छोराचाहिँ आमाले नदेख्ने गरी बसेछ । यसैबेला

आमाले “गड्याडगुडुडु गर तर मेरो छोरा घर नपुगीकन पानी नपर’ भनिछन् । आमाले कुरा छोरोले सुनेछ । ऊ सोचन थाल्यो, “के भन्या हो यो पोइल जाने आमाले पनि मलाई यस्तो भन्छिन् होला त !” फेरि गड्याड-गुडुडु हुन्छ । फेरि आमाले पहिलेकै कुरा दोहोर्न्याउँछिन् । आमाले कुरा सुनेर छोरा नजिकै आएर “के भन्या हँ तिम्ले ?” भन्यो । आमाले “केही भन्या हैन । केही नभन्दा त मलाई याँ ओढारमा ल्याएर राखिस् के भन्नु” भनिन् । छोरोले फेरि “भन न भन के भन्या ?” भनेर कर गरेपछि “गड्याडगुडुडु पानी नपर भन्या हो” भनिन् । “मलाई यत्रो माया गर्ने मान्छे तिमि पोइल जान किन खोज्या ?” भनेर छोरोले सोध्यो । “कल्ले भन्यो तलाई ?” भनेर आमाले भनिन् । छोरोले भन्यो “बुहारीलाई गएर हिजो पोइल जान्छु भन्थ्यौ रे त तिम्ले” । “काँ मैले त्यस्तो भन्या छु ! मैले त तिमैरु सधैं माछा खान्छौ । मलाई पनि माछा देओ न भन्न पो गाथें ।” “ए त्यसो पो हो !” भनेर छोरोले फेरि आमालाई बोकेर घरमा ल्याएछ । घरमा पुगेपछि आफ्नी श्रीमतीलाई “अब तँ घर छोड्छेस् कि तँलाई छोडौँ । तँ सुधेर बस्छेस् कि बस्दिनस्” भनेपछि श्रीमतीले “मैले गल्ती गरेँ । भोलिपर्सि म पनि सासू हुनुपर्ने होला ! अब म यस्तो गल्ती कहिल्यै गर्ने छैन” भनी माफी मागेर फेरि तीनजनाको परिवार राम्रोसँग खाने, पिउने गरेर बसेछन् ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.२ राक्षसको कथा

एकादेशमा दुई बूढाबूढीको एउटा छोरा थियो । उनीहरू धनी थिए । राम्रैसँग जीवन चलिरहेथ्यो । एक्कासी एकदिन राक्षस आएर तिनीहरूलाई लुटपाट गरेर बाउ मारेर सबै सम्पत्ति लिएर गएछ । त्यसपछि उनीहरू एकदम गरीब भए । अब आमा र छोरोमात्रै छन् । उनीहरूको सम्पत्तिको नाममा एउटा गाई मात्र छ । अरू केही थिएन । अनि त्यसपछि सबै रित्तो, सकिएको के गर्ने, के गर्ने भएछ उनीहरूलाई । आठ-दस दिन भइसक्यो खान केही पाएको छैन । अनि आमाले “खान नपाउने अवस्था भयो मर्न त सकिँदैन । यही एउटा गाई छ, त्यसैलाई लगेर बेचेर पैसा लिएर आऊ बाबु । त्यसै पैसाले चामल किनेर खानु पर्‍यो” भनिछ । हुन्छ, भनेर त्यो छोरोचाहिँ गाई बेचन गएछ । गाई डोर्न्याउँदै जाँदा बाटोमा उसले एउटा मान्छे भेटेछ । त्यो मान्छेले भनेछ, “बाबु यो गाई कहाँ लान लागेको ?” “बेचन

लगेको” भनेको त त्यो मान्छे छोराचाहिँको खुट्टामा समातेर रुन लागेछ । त्यो मान्छेले एउटा सानो बच्चा पनि बोकेको रहेछ । उसले “हेर त बाबु ! यो बच्चाको आमा मरी यो बच्चाले दुध खान नपाएर मर्न लागिराछ । यो गाई मलाई देऊ न” भनेछ । उसलाई के लागेछ, मलाई त भोक खप्न यस्तो गाह्रो भइराछ । यो त सानो बच्चा यसलाई त भन् गाह्रो भइरहेको होला ? होस् भनेर पैसा नलिई गाई दिएछ । त्यो मान्छेले खल्लीमा हात हालेछ र दुईवटा सिमीको बीउ उसलाई दिएछ । घरमा छोरो कतिबेला आउला, पैसा ल्याउला र केही किनौंला, खाउँला भनेको त छोरो त्यसै आयो । आएपछि आमालाई साह्रै रिस उठेछ । “तैले त्यसै गाई दिस् हामीचाहिँ के खाने ?” भनेपछि छोराले “त्यसै देको होइन यसमा देको” भनेर सिमीको बीउ दिएछ । आमाले सिमीको बीउलाई फुत्त भ्यालबाट फालिदछन् । बेलुका दुवैजना भोकै सुते रातभरि भोकले निन्द्रा लागेन । छटपटिँदै रात कटाए । मिमिरे उज्यालैमा छोरो उठ्यो यसो भ्यालबाट बाहिर हेच्यो । त्यो भ्यालबाट बीउ फालेको ठाउँमा यति ठूलो लहरा निकल्या रहेछ । त्यो देखेर ऊ अचम्म मान्दै सोचन लाग्यो - हिजोसम्म थिएन आज कस्तो लहरो भएछ भनेर लहरा समाएछ । उसलाई बलियोजस्तो लागेछ र के गरौं, के गरौं भयो । यसो चढेको त माथि-माथि जाँदै गर्दा एउटा छुट्टै संसारमा पुगेछ । त्यहाँ अति राम्रा घरहरू थिए । ऊ त्यहाँका चिजबिजहरूलाई हेर्दै गएछ । जाँदाजाँदा उसले एउटी बूढीआमालाई भेटेछ । तीआमाले भनिछन् - ए बाबु ! तिमी किन आएको ? यहाँ त साह्रै डरलाग्दो वातावरण छ । यो त राक्षसको मुलुक हो । यहाँको सबै मान्छेहरूलाई एउटा राक्षसले भ्याएर रजाई गरेर बसेको छ । ऊ त्यो दरवारमा राक्षस छ । राक्षसको बूढी अलि दयालु छे । राक्षसचाहिँ यस्तो छ कि अब तिमीलाई पनि भ्याउँछ त्यसैले तिमी फर्क । बूढीआमाको कुराले ऊ कति पनि नडराई अगाडि बढ्दै त्यही राक्षसकै दरवारतिर गएछ । दरवारमा पुग्दा राक्षस बाहिर निस्केको रहेछ । राक्षसकी बूढी अलि दयालु भएको थाहा भएकाले ऊ नडराइकन दरवारभित्र गयो । त्यहाँ पुगेपछि उसलाई राक्षसको बूढीले देखिछ । उनले “लौन नि बाबु ! किन आको ? मेरो बूढाले तिम्लाई खाइहाल्छ । यस्तो राम्रो बाबु रैछौं” भनेर उसलाई एकदम माया गरिछ । त्यति कुरा के गन्याथ्यो उताबाट राक्षस आको देखिहालिछ । हत न पत्त त्यसलाई गोप्य कोठामा गएर लुक्न भनिछे । ऊ लुकेछ । राक्षस त आँगनबाटै “अहो ! कस्तो मिठो बास्ता आएको । मेरो बूढीले कहाँ पाइ जिउंदो मान्छेको मासु ?” भन्दै आएछ । अनि उनले, “होइन बूढो ’ किन हजुरलाई त्यस्तो लाग्यो कुन्नि । मैले कहाँबाट ल्याउनु मान्छे !” भनेर ढाँटिछ । राक्षस आयो जम्मा गरेर राखेका मान्छेका

मासुहरू खायो अनि सुत्नुभन्दा अगाडि उनीहरूसँग भएका पैसा खन्याएर गनेछ अनि बोरामा राखेर सुतेछ । त्यसपछि एउटा कुखुरी निकालेर सुनको अण्डा पार भन्दो रैछ अनि कुखुरीले फुत्त पादीरैछ । सुनको अण्डा लिएपछि उनीहरू सुतेको केटोले हेरिरहेको थियो । त्यही बेला केटाले पैसाको तीनवटा बोरा र सुनको अण्डा पार्ने कुखुरी समाएर भाग्न लाग्दा राक्षसले थाहा पाएछ । राक्षसले लामो तरवार लिएर खेदेछ । तरवारले स्याट्ट हान्दाखेरी भण्डै-भण्डै भेटेको । अगाडि-अगाडि त्यो केटो र पछाडि-पछाडि राक्षस दगुरादगुर गर्दा-गर्दै दुवैजना सिमीको त्यो लहराको टुप्पोमा आइपुगेछन् । लहरालाई समाएर केटो सुलुलुलु तल भरेर फुत्त भ्यालबाट भित्र पसेछ । केटाले राक्षस पनि त्यही लहराबाट आएको देखेर भ्यालको छेउमा रहेको बञ्चरोले सिमीको त्यो लहरा काटिदिएछ । त्यहाँबाट लडेर राक्षस ठूलो आवाज आउने गरी ढलेपछि भुँडी फुटेर मरेछ । ती आमाछोरासँग पैसा पनि भयो, दिनदिनै सुनको अण्डा दिने कुखुरा पनि । अनि उनीहरू आनन्दले खाइपिई गरेर जीवन बिताएछन् ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.३ बेलौरेको कथा

एकादेशमा एउटी अति नै गरीब बूढीआमा थिइन् । बूढीआमाका एक छोरा र एक छोरी थिए उनीहरूलाई खान, लगाउन पनि समस्या थियो । उनले छोराछोरीलाई समस्याका साथ हुर्काइरहेकी थिइन् । छोराछोरीहरू समयअनुसार बढ्दै गए । छोरी बाह्र-तेह्र वर्षकी भएपछि एकजना केटो उनको माग्न आए । गरीबीको कारणले गर्दा उनीहरूले छोरी बिहे गरिदिने सल्लाह भयो । “छोरीलाई बिहे गरेर दिएपछि हामीलाई पनि सजिलो हुन्छ । आमाछोरा मात्रै हुन्छौं । दुईजनालाई काम गरेरै खान पनि अलि सजिलो हुन्छ र छोरीलाई राम्रो घरमा बिहे गरेर दिँदा उसको घरबाट पनि केही सर-सहयोग हुन्छ” भन्ने आशाले उनीहरूले छोरीलाई बिहे गरेर दिए । छोरीको धनी घरमा बिहे भएको थियो । छोरीको विवाह भएपछि छोरी धेरै लामो समयसम्म माइत आइन् । त्यसपछि एकदिन आमाले छोरालाई “दिदीको घर जा” भनेर पठाइन् । दिदीको घरमा केही दिन बस्ने अनि दिदीले केही पठाइन् भने लिएर आउने आशाले भाइ रमाउँदै दिदीको घरमा गयो । गरीब थिए, घरबाट लाने कोसेली केही नभएकोले रिक्तै गयो । जङ्गलको बाटो जाँदा उसले लटरम्म फलेको बेलको रुख देख्यो ।

मैले यो बेल लगिदिउँ भने भान्जाभान्जीले मीठो मानेर खान्छन् भन्दै बेल टिप्यो र लिएर गयो । उसले दिदीको घरमा धेरै मान्छेहरू आउजाउ भएको परैबाट देख्यो । उसले सोच्यो आज दिदीको घरमा कुनै कार्यक्रम रहेछ । आज पेटभरि खान पाइने भयो भनेर खुसी हुँदै गयो । दिदी र भान्जाभान्जीले पनि परैबाट देखे । उसले “मामा आए”, भनेर छोराछोरीलाई भनी । “मामा आए” भन्दै भान्जाभान्जी दौडदै आए । उसले आफूले ल्याएको बेल भान्जाभान्जीलाई दियो । सुखमा हुर्केका भान्जाभान्जीले बेललाई भकुण्डो सम्भेर गुड्गुड्याउँदै हिँडे । दिदीले मैलो-थोत्रो कपडा लगाएको भाइलाई देखेर ऊसँग बोल्न पनि लाज लाग्यो । भाइ पिँढीमा गएर टुसुकक बस्यो । दिदीले वास्तै गरिन । पाहुनाहरूले खाना खाए, गफगाफ गरे अनि भित्र बसिरहे । ती पाहुनाहरूले खाएको जुठो फालिएको खाना जम्मा गरेर “ला बेलौरे खा....” भनेर दिदीले दिई । उसलाई साँढे नरमाइलो लाग्यो र उसले त्यो खाना नखाइकन रुँदै घरपछाडि गएर धर्ती मातालाई ‘धर्ती फाट्’ भन्यो । भाइ सत्य थियो । धर्ती फाट्यो । उसले त्यो खानेकुरा त्यहीं राखिदियो । धर्ती फेरि जोडियो । म यसै घर जाऊँ भने आमाले कति आश गरेर बसेकी होलिन् । अब म कहाँ जाऊँ ? के गरूँ ? भनेर सोच्यै गयो । उसले मितलाई सम्भयो र अब म मितकै घर जान्छु भन्ने सोचेर गयो । मितको घर गएपछि मितले मित आउनुभयो भनेर खुसी भएर अडकमाल गयो । अनि फाटेको मैलो लुगा लगाको देखेर उसले तुरुन्तै बजारमा गएर राम्रा-राम्रा लुगा किनेर लगाइदियो । फलफूल किन्यो र मितलाई बोक्न लगाएर घर लिएर गयो । किनभने मितको विवाह भइसकेको थियो आफ्नो श्रीमती र अरूबाट हेला हुन्छ भन्ने सोचेर उसले सम्मानका साथ घर लिएर गएर राख्यो । अनि मीठा-मीठा खानेकुराहरू खान दियो । मितिनीले पनि मीठा-मीठा परिकारहरू बनाएर खान दिइन् । केही समय बसेपछि ऊ हृष्टपुष्ट र राम्रो देखिन थाल्यो । ऊ मान्छे त पहिल्यै राम्रो थियो । गरीबीको कारणले ऊ नराम्रो देखिन्थ्यो । एकदिन खेतीपाती गर्न जाँदा मितज्यूलाई घरमै राखेर गए । भित्तामा सुगाको चित्र टाँसेको थियो । किलामा एउटा सुनको सिक्री भुण्ड्याएको थियो । चित्रको सुगा साँच्चिकै भएर निकल्यो र भुण्ड्याएको सिक्री खप्लक्क निल्यो । उसले त्यो देख्यो । त्यहीं भुण्ड्याएको सिक्री नपाउँदा “पक्कै मितज्यूले लग्यो भन्नुहुन्छ होला !” भन्ने सोच्यो । उसलाई अब म के गरूँ ? भन्ने चिन्ता पयो । अब म यहाँ बस्नुहुन्न; मित र मितिनीले के सोच्नुहोला । “मैले बल्ल-बल्ल राम्रो लाउन पाएको थिएँ । मीठो खान पाएको थिएँ । दैवले मलाई यहाँ बस्न दिएन । मेरो भाग्य पनि कस्तो रहेछ !” भनेर विरक्त मान्दै ऊ त्यहाँबाट निस्कियो । धेरै पर

पुगेपछि बाटोमा एउटा मरेको जोगी रहेछ । मानिसहरूले के भन्दा रहेछन् भने “यो जोगी मरेको छ, जसले यो जोगीलाई जगल्टामा समातेर माथिको भीरको टुप्पाबाट खसाल्न सक्छ, त्यसले दुई पाथी धान पाउँछ” । उसले यसो सोच्यो - म अब घरमा रित्तै कसरी जाने बरू दुई पाथी धान भए पनि हुन्छ, भन्ने सोचेर “म गर्छु यो काम” भन्यो र जगल्टामा समातेर माथि भीरमा गयो र जोगीलाई भीरबाट खसाल्यो । जगल्टा च्याप्प समातेको ठाउँमा त हिरामोतीहरू पो रहेछन् । उसको हातमा थुप्रै हिरामोती पऱ्यो । उसले दुई पाथी धान पनि पायो । उसले हिरामोती लगेर बजारमा बेच्यो । ऊ एकदम धनी भयो । उसले एउटा घोडा किन्यो । उसले गहना किन्यो र भोलाभरि कपडा किन्यो भने भाञ्जा-भाञ्जीका लागि पनि विभिन्न प्रकारका गहनाहरू बनाइदियो । दिदीलाई पनि सुनको हार बनाइदियो र आमालाई घरमा चाहिने सामानहरू लिएर घर गयो । घरमा गएर एक-दुई दिन बसिसकेपछि ऊ फेरि दिदीको घर गयो । दिदीको घर जाँदा घोडा चढेर भोलामा गहना, कपडा लिएर गयो । त्यहाँ पुग्नासाथ घोडा चढेर आएको अनि राम्रो भाइ देखेर दिदी “मेरो भाइ आयो, मेरो भाइ आयो” भनेर अति रमाई । भाञ्जा-भाञ्जी पनि रमाए । उसले भाञ्जा-भाञ्जी र दिदीलाई राम्राराम्रा गहनाहरू दियो । भाइ घर फर्कनका लागि दिदीसँग “म अब घर जान्छु” भन्यो । भाइ जानलाग्दा दिदीले “नजाऊ भाइ, नजाऊ अलिदिन बस” भनेर कर गरी र मीठामीठा परिकार दिन लागी । दिदीले खानेकुरा दिन लाग्दा भाइले “मैले राखिराखेको अस्तिनै दिएको खानेकुरा छ, म त्यही खान्छु” भनेर पछाडि गएर उसले ‘फाट् धर्ती फाट्’ भन्यो । पहिलोपल्ट दिदीको घरमा आउँदा दिएको त्यही टपरीमा भएको खानेकुरा लिएर आएर दिदीको अगाडि आएर कपाकप खायो । दिदीलाई लाजमर्नु भयो । त्यसपछि ऊ मितज्यूकोमा गयो । मितज्यूले “कहाँ जानुभयो, यसरी भन्दै नभनी किन जानुभयो”? “मलाई कस्तो पिर पऱ्यो” भनेर गुनासो गरे । मितज्यूलाई उसले चित्रको सुगाले सिक्री निलेको कुरा सुनायो । सुगाको कुरा गर्नासाथ त्यही सुगा भुरुर उडेर आयो र “कलाकलाकलाकला” गरेर त्यो सिक्रीलाई फेरि त्यहीं उकेल्यो । बेलौरेले “तपाइँहरू नभएको समयमा त्यो चित्रको सुगाले सिक्री निल्यो, त्यही भएर म घर छोडेर गएको । हजुरले नराम्रो सोच्नुहोला भनेर म नबसेको” भनेपछि मितज्यूले “यस्तो सानो कुरामा यसरी जानुपर्थ्यो ? हजुरले लानुभयो भनेर मैले सोच्ने नै थिइन” भनेछ ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.४ आमाको माया

धादिङको पाल्पा भन्ने ठाउँमा एकजना दुई जिउकी आमा हुनुहुँदो रहेछ । उहाँ एकलै बस्नु भएको रहेछ । पछि उहाँले बच्चा जन्माउनु भयो । सुत्केरी हुने क्रममा व्यथा बढी भएर उहाँको मृत्यु भएछ । आमाको मृत्युपछि बच्चा रोइरहेको रहेछ । वरीपरी छिमेकीहरूले बच्चा रोएको सुनेर किन बच्चा रोयो ? कहाँ बच्चा रोयो भनेर हेर्न आउँदा आमाचाहिँ बितिसकेको र बच्चा मात्र रोइरहेको देखेछन् । उनीहरूले नै आमाको दाहसंस्कार गरेछन् । बच्चालाई हेरविचार गर्नको लागि आमाकै कोही आफन्त आएर बसेर स्याहार-सुसार गरेछन् । त्यो बच्चा बेलुका-बेलुका भएपछि धेरै रुँदो रहेछ । आफन्त पनि बाहिरी काममा पनि हिँड्नु पर्ने भएकाले सधैं बच्चासँगै बस्न पाउँदैनथ्यो । कोही नभएको समयमा बच्चा रुँदा मरेकी आमा आएर दुध खुवाउने, काखमा लिने गर्दिरहिँदछन् । बच्चा रोयो कि भनेर दौडदै आउँदा बच्चा चूप लागिसकेको हुनेरहेछ । सधैं यस्तै भइरहेको देखेर आफन्तले “के भएर बच्चा सन्तोषी हुन्छ ?” भनेर लुकेर हेर्दा त बच्चाको मरेकी आमाले काखमा लिएर दुध खुवाइरहेको देखेछ । पटक-पटक दुध खुवाएको देखेपछि गाउँको भाँक्रीलाई सबै कुरा भनेछ । भाँक्रीले आएर लुकेर हेर्दा पनि त्यस्तै देखेपछि मरेको आत्माको कारणले बच्चालाई नराम्रो नहोस् भनेर विभिन्न धार्मिक कार्यहरू गरेर आमाचाहिँको आत्मालाई मुक्ति दिएछ । त्यसैले आमालाई हेला गर्नु हुँदैन । आमाले त मरेपछि पनि सन्तानलाई माया गर्छिन् भन्ने ज्ञान यस लोककथाबाट प्राप्त हुन्छ ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.५ दुःखी चेलीको कथा

एकादेशमा एउटा घरमा एउटी छोरी थिइन् । त्यो छोरी हुकँदै-बढ्दै गई । त्यो घर सम्पन्न परिवारको थियो । त्यहाँ धेरै कामदारहरू रहेका थिए । छोरीको त्यहीँको एउटा कामदारसँग माया-पिरती बसेछ । यो थाहा पाएपछि उसको परिवारका सदस्यहरूले छोरीलाई तिरस्कार गर्न थालेछन् । परिवारका सदस्यहरूको तिरस्कार सहन नसकी छोरी-ज्वाइँहरू अन्तै गएर बसेछन् । समयक्रममा छोरीको पेटमा बच्चा रह्यो । बच्चा रहेको नौ महिना भएपछि स्वास्नीचाहिँले “म माइत जान्छु” भनेर लोग्नेलाई भनी । लोग्नेले “तिरस्कार गरेको ठाउँमा नजा” भनेर सम्झायो । लोग्नेको कुरा मानेर ऊ गइन् । समय पुगेपछि बच्चा जन्मियो ।

फेरि दुई वर्षपछि अर्को बच्चा बोकी । अर्को बच्चा बोकेको नौ महिना भएपछि पनि उनले फेरि “माइत जान्छु” भनेकी थिई तर लोग्नेले नजान भन्यो । एक दिन लोग्ने बाहिरतिर गएको थियो । बाहिरबाट घरमा आउँदा स्वास्नी घरमा छैन । ऊ कता गई भनेर वरपर सोध्दा “खोइ ! माइत जान्छु भनेर भनीरा थी, गईहोली” भनेर छिमेकीहरूले भनेछन् । ऊ आत्तिदै “लौ कहाँ पो गई ! बच्चा पाउने बेला भएको थियो” भनेर खोज्न हिँड्यो । हिँडेको केही समयपछि ऊ एउटा ठूलो चौरमा पुग्यो । उसकी स्वास्नी त्यही चौरमा सुत्केरी व्यथा लागेर बसिरहेकी रहिछे । लोग्नेचाहिँ पुगेपछि बच्चा जन्मियो । स्वास्नीचाहिँले “यो बच्चालाई भुइँमा राख्दा त कमिलाले टोक्छ, स्याउला ल्याउनु न” भनिछ । स्याउला भाँचन लाग्दा सर्पले टाउकोमा टोकेर लोग्ने मर्‍यो । त्यहाँ रातभरि पानी पयो । एउटा बच्चालाई एकापट्टि र अर्को बच्चालाई अर्कोपट्टि चेपेर सुत्केरी मान्छे भिजेर बसी । भोलिपल्ट विहान माइत जान्छु भनेर मरेको बूढोको लासलाई त्यहीं छोडेर गई । बाटोमा पर्ने खोलामा ठूलो बाढी आइरहेको रहेछ । ठूलोचाहिँ छोरालाई खोला वारि नै छोडेर सानोचाहिँ छोरालाई खोला तारेर ठूलो छोरो लिन आउँछु भन्ने सोची । सानो छोरालाई लगेर खोला पारि बगरमा राखेर ठूलो छोरो लिन खोलाको बिचमा आइपुग्दा सानो छोरालाई बाजले टिपेछ । हा...हा... भनेर हात हल्लाउँदै बाज धपाउन खोज्दा ठूलो छोरालाई आमाले आइज भन्नु भयो भन्ने लागेछ र खोलामा पसेछ । उसलाई पनि खोलाले बगायो । एउटालाई बाजले लग्यो; अर्कोलाई खोलाले बगायो र हाहाकार पयो । त्यहाँबाट माइत जान्छु भनेर माइत पुग्दा एकजना छिमेकीले भने “ए ! तिमी माइत आइछौ नानी । तिम्रो माइती त आज राति परेको पानीको कारणले घर ढलेर त्यसैले चेपेर पाँचैजना मरे” भन्ने खबर सुनेर ऊ बहुलाई भएर हिँडिछे ।

यस लोककथाबाट दुःख भन्ने कुरा कहिले र कसरी आउँछ थाहा हुँदैन भन्ने कुराको ज्ञान प्रदान गरेको छ । सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.६ दिदी-बहिनीको कथा

एकादेशमा दुईजना दिदी-बहिनी थिए । ठूली दिदीचाहिँ धनी थिइन् भने सानी बहिनीचाहिँ गरीब थिइन् । उनीहरूको विहे टाढा-टाढाको गाउँमा भएका थिए । कान्छी बहिनीको एउटा छोरा पनि थियो । एकदिन त्यस छोरोले आफ्नी आमासँग “आमा मलाई त चामलको भात खान मन लाग्यो । कति भयो नखाको” भनेछ । बहिनीले सोचिछे - दिदीको घर जान्छु र

अलिकति चामल पैँचो भागेर ल्याउँछु भनेर ऊ दिदीको घरतर्फ लागिछे । दिदीको घरमा पुगेपछि उसले “दिदी मेरो छोराले त धेरै चामलको भात खान रहर गरेको छ । भात... भात... मात्रै भन्छ । जतिखेर नि भात भन्दै रुन्छ । एकमाना चामल पैँचो देऊ न !” भनिछ । दिदीले “चामल त हुँदैन नानी ! हेर यो चामल केलाई दे अनि केलाएर आएको कनिकाचाहिँ लिएर जा” भनिछे । निर्दयी दिदीले आफ्नी बहिनीलाई एक माना चामल नदिएर कनिका दिएर पठाई । बहिनी पनि खुरुखुरु हाँस्दै बाबुले भात खान पाउँछ भनेर कनिका लिएर गई । उसले आफ्नो छोरालाई भात पकाएर खान दिई । केही दिनपछि फेरि छोराले “आमा ! मलाई कस्तो चामलको भात खान रहर लाग्यो” भनेछ । बहिनी मनमनै सोच्छे - दिदीको घर गयो भने अलिकत चामल पैँचो त पाईन्छ कि ! यस्तो सोच्दै ऊ फेरि दिदीको घर गइछे र दिदीलाई “फेरि छोराले मलाई भात खान्छु भन्छ । केही काम छ भने गरेर चामल लान्छु नि दिदी” भनिछे । दिदीले “चामल त धेरै छैन तर दिनभरि जुम्ना हेर्दै अनि बेलुका अलिकति दिउँला” भनिछे । दिदीले त्यति भनिसकेपछि दिनभरि उसले जुम्ना हेरेर बसिछे । दिदीको जुम्ना निखिसकेको थियो । उसले दिदीलाई “दिदी रात परिसक्यो घर गएर भात पकाएर छोरालाई खुवाउनु छ । मलाई ढिलो भयो चामल दिनु न !” भनिछे । अनि दिदीले “यस्तो टाउको भुत्ल्याएजस्तो गरेर पनि जुम्ना हेरेको हुन्छ, छया ! जुम्रै निखेको नै छैन तलाई केको चामल दिनु, म दिन्न” भनेर उसलाई त्यहाँबाट भगाइदिछे । बहिनीचाहिँ रुँदै-रुँदै घर गइछे । घर जाँदा जङ्गलको बाटो भएर जानुपर्थ्यो । त्यस बाटोमा उसले एउटा भालुलाई देखिछे । ऊ भालु देखेर धेरै नै आत्तिई । धेरै नै डराई । भालुले बाटो छोकेर उसलाई सोधेछ, “के भयो ? तिमि किन रोएको ?” बहिनीले आफूसँग भएको सारा घटना बताई । भालुलाई ऊप्रति दया आएछ अनि भालुले भनेछ, “बेलुका चुलो वरिपरि पोतेर राख्नु म आउने छु । ढोका खोल्नु तर नडराउनु है ।” रुँदै गरेकी उसले “हुन्छ” भन्दै त्यहाँबाट घर गइछे । घर गएर उसले जसरी भालुले भनेको थियो त्यसरी नै चुलो पोतेर ढोका खुल्ला राखेर छोरसँग सुतिछे । राति भालु आयो । भालुले चार ठाउँमा दिसा गरेर त्यहाँबाट गयो । बहिनीले सोचिछे “ए ! यसले त दिसा पो गयो । आ ! भोलि बिहानै सोरोँला” भन्ने सोच्दै सुती । भोलि बिहान ऊ उठेर हेर्दा त त्यहाँ भएका दिसा त सबै सुनका पैसा भएका थिए । सुनका पैसाहरू पाएपछि बहिनी दिनका दिन धनी हुँदै गई । बहिनी धनी भएको देख्दा दिदीलाई डाह लागेछ । दिदीचाहिँ बहिनीको घर गइछे र भनिछ, “बहिनी ! तँ त यस्तो धनी भइछेस् कसरी भइस् ?” बहिनी लाठी र सोभ्नी भएकीले दिदीको माया लागेर उसले बाटोमा

भएका सबै कुरा भनिछे । दिदीलाई त्यो सुनेर लोभ लागेछ । ऊ पनि बहिनीको घरबाट आफ्नो घर जाँदा त्यही जङ्गल हुँदै जानुपर्ने हुँदा रुँदै गइछे । उसले पनि बाटोमा त्यही भालु भेटिछे । भालुले उसलाई सोधेछ, “किन रोएकी ?” उसले “बहिनी धनी थिई । पैसा माग्न गएको मलाई त गाली गरेर पठाई” भनिछे । भालुलाई थाहा थियो उसले नाटक गर्दैछे तर पनि भालुले “आज बेलुका म आउँछु, ढोका खुल्दै राख्नु, नडराउनु, चुलो वरिपरि लिप्नु है” भनेछ । दिदी खुसी हुँदै गइछे । उसले सोची - अब त पैसा पाइने भयो । राति भालु उसको घर गएछ । ढोका खुल्दै थियो । भालु भित्र पस्यो । उसले लिपेको चार ठाउँमा दिसा गयो अनि गयो । दिदीचाहिँले भोलि बिहान उठेर हेर्दा त सुनको पैसा होइन चारैतिर गन्हाउने ‘गु’ मात्र भेटिछे ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.७ भाग्यमा भए खटियाउपर

एकादेशमा एउटा गाउँमा तीनजना दाजुभाइ बस्थे । दाजुभाइमध्ये कान्छो भाइचाहिँ अल्छी स्वभावको थियो । ऊ कहिले पिँढीमा बसेर त कहिले खाटमा बसेर गाउँका मान्छेहरू जम्मा गर्ने, गफ चुट्ने गर्थ्यो । दाजुहरूचाहिँ “यो कान्छो भाइ हो, भैगो केही नगरौं” भनेर माया गरेर उसलाई छोडिदिने गरेका रहेछन् । दाजुभाइ जेठो र माइलोचाहिँ असाध्यै मिहिनेत गर्ने, कमाइ गरेर ल्याउने र खाने गरेका रहेछन् । समय बित्दै गयो । तीनवटै दाजुभाइको बिहे भयो । दाइहरूको श्रीमतीहरूले “ए ... हाम्रो लोग्नेहरूले मात्र काम गर्ने ? यस्तो अवस्थामा हामीहरू सँगसँगै बस्न सक्दैनौं” भनेर उनीहरूचाहिँ छुट्टिने तरखरमा पुगेछन् । एक महिना, दुई महिना, तीन महिना बित्दै गयो बिहे गरेको पनि । कान्छो भाइको सुधने सुरै छैन । ऊ कहिले पनि गाउँका मान्छे जम्मा गर्ने अनि खाटमा बसेर गफ चुट्ने । “काम गर्न जाँदैनस् त ? काम नगरी खान पुग्छ ?” भन्दा उसले सधैं के भन्दो रहेछ भने “भाग्यमा भए खटियामाथि बसेर पनि खान पुग्छ ।” “त्यस्तो पनि हुन्छ ! कहीं खाटमाथि बसीबसी पनि खान पुग्छ ?” भनेर सबैले भन्दा पनि मान्दोरहेन छ । त्यो देखेर हैरान भएर दुईवटा दाजुभाइले “हैन यसलाई छुट्याइदिनु पयो । खाली भाग्यमा भए खटियाउपर मात्र भन्छ, केही काम गर्दैन । यसले कसरी खाँदो रहेछ ? हामीले छुट्याइदिएपछि, जे गरे गर्छ” भनेर उसलाई छुट्याइदिएछन् । छुट्टिँदा आएको अलिकति धान-चामलबाट दुई-तीन महिना त गुजारा चल्थो । त्यसपछि उसकी श्रीमतीको भरमा दिनहरू चलन थाल्यो । त्यस्तो अवस्थामा

श्रीमतीले पनि “सँधै यसरी खाटमा बसेर त जिन्दगी चल्दैन है । छोराछोरीले दशैंमा लुगा खोज्छन्, मासु खान खोज्छन् । तपाईं चाहिँ छोराछोरीले चिची, पापा, नाना भन्दा के दिनु हुन्छ ?” भन्दै गाली गर्दिरहिँछे । उसले बूढीलाई “हेर बूढी ! धेरै किचकिच नगर, भाग्यमा भए खटियाउपर” भन्दोरहेछ । एवम् रितले दिन बित्दै गए । दशैं आउन लाग्यो । अब चाहिँ केही गरूँ भन्ने उसलाई लागेछ । दशैंमा छोराछोरीलाई लुगा त फेर्दिन पर्ने, मासुको जोहो त गर्नुपर्ने भन्ने उसलाई पनि लागेछ र केही गर्नुपर्ला भन्ने सोचोरहेछ । गाउँका मान्छेहरू त्यो बाटो हिँड्दा “ओ कान्छा ! के छ हालखबर ? दशैं आउन लाग्यो, कसरी मनाउँछस् ?” भनेर सोध्दा रहेछन् । उसले चाहिँ “ए ... भाग्यमा भए खटियाउपर” यसै मनाइन्छ भन्दोरहेछ । एक रात सुत्ने बेलामा उसलाई निन्द्रा लागेन छ । भन्न त मैले खटियाउपर भनौं । अब कसरी मनाउने हो त दशैं भनेर रातभरि छटपटी भएछ । त्यसपछि मध्यरातमा गोठतिर (त्यतिबेला जङ्गलमा गोठ राख्ने चलन थियो) गएर खसी चोरेर ल्याएर दशैं मनाउने नराम्रो सोच आएछ । चोरी गर्न भनेर राति गोठमा गएछ । बाखाको खोरमा पसेर सबभन्दा मोटो खसी छान्नुपयो भनेर यसो बाखाको गर्दन छामेछ, अनि मोटो गर्दन भएको खसीलाई डोरी लगाएछ र तान्दै-तान्दै ल्याएर घरको पिठीको खम्बामा बाँधेछ । त्यसपछि चोटामा गएर सुतेछ । बिहान उसकी बूढीचाहिँ दैलोकुचो गर्न निस्कँदा त तर्सिँछे । “लौन बूढो ! के भएको हो यस्तो ? उठ्नु न” भन्दै बूढोलाई बोलाउन गइछे । बूढो पनि “के भयो र ?” भन्दै बाहिर निस्केर हेरेको त बूढो नै तर्स्यो । खम्बामा बाघ पो बाँधिराखेको रहेछ । त्यसपछि गाउँभरि “फलानाले त बाघ समातेर घरको पालीको खम्बामा बाँधेको छ रे !” भनेर हल्ला फैलिँदै गयो । त्यसपछि यस्तो बहादुर व्यक्तिलाई पुरस्कार दिनुपर्छ भन्ने निर्णय पञ्चभेलाले गयो । उसलाई पचास हजार पुरस्कार प्रदान गरियो । त्यो रूपैयाँले उसले छोराछोरीलाई लुगाकपडा किन्यो । मीठो-मसिनो खानेकुरा र मासुको व्यवस्था गयो अनि आनन्दसँग दशैं मनायो ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.८ लोभी बूढाबूढी

एकादेशमा एकजोडी बूढाबूढी बस्थे । उनीहरू अत्यन्त लोभी थिए । काम नगर्ने र मागेर उनीहरूले गुजारा चलाउँथे । एकदिन बूढाबूढी माग्ने भनेर निस्केछन् । उनीहरूले माग्ने

क्रममा तेल, चामलको पिठो, त्यसपछि चिनी पाएछन् । तिनीहरूले यसबाट सेलरोटी पकाउने भन्ने सोच्यै घर फर्केछन् । घर आउँदा त दाउरा नै छैन । दाउरा खोज्न भनेर ती दुई बूढाबूढी जङ्गल गएछन् । जङ्गलमा दाउरा खोज्दै जाँदाखेरि उनीहरूले एउटा ठूलो बाघ भेटेछन् । बाघले “तिमीहरू किन आएको ?” भनेर सोधेछ । उनीहरूले “हामीले सेलरोटी पकाएर खान खोजेको, सेलरोटी पकाउनलाई दाउरा थिएन, त्यही भएर दाउरा खोज्न आएको” भनेछन् । त्यो बाघलाई पनि सेलरोटी खान अत्यन्त मन लागेछ । अनि बाघले, “म पनि दाउरा खोजिदिन्छु, तिमीहरूले सेलरोटी पकाएपछि मलाई पनि दिनुपर्छ” भनेछ । बूढाबूढीले “हुन्छ” भनेछन् । त्यसपछि बाघले पनि दाउरा खोज्न सघाएछ र दाउरा खोजेर बाघले पठाएछ । बूढाबूढी दाउरा लिएर घर आएछन् र सेलरोटी पकाएछन् । सेलरोटी पकाउँदै-खाँदै, पकाउँदै-खाँदै गरेर बूढाबूढीले सबै सेलरोटी सिध्याएछन् । उनीहरूले बाघलाई दिनुपर्छ, बाघको भाग राख्नुपर्छ, भनेर भुसुकै बिसैर सबै सेलरोटी जति खाएछन् । खाइभ्याएपछि बाघ आएछ । बाघ आएको थाहा पाएर बूढाबूढी ठूलो घैँटोभित्र लुकेछन् । बाघले यताउती खोज्यो । घैँटोको वरपर पनि खोजेछ तर कतै बूढाबूढीलाई देखेन छ । नदेखेपछि त्यति नै बेला बूढीलाई पाइन् आएछ । रोटी धेरै खाएको भएर गाह्रो भएर बूढीले बूढालाई विस्तारै भनिन्छ, “बूढा, मलाई त पाइन् आयो !” बूढाले बूढीलाई बाघले सुन्ना भनेर कानमा खुसुकक “विस्तारै पाइ है, बाहिर बाघ आ’को छ सुन्ना” भनेछ । बूढीले विस्तारै पाइन्छु भनेको त, यति ठूलो आवाज आएछ कि घैँटो नै फुटेछ । त्यो आवाजले तर्सिएर बाघ पनि भागेछ । त्यसपछि बूढाबूढी खुसी भएछन् ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.९ छैँटीको भाग्य

पहिले-पहिले मानिसहरूले सर-सहयोगको लागि मित लगाउने चलन थियो । यस्तै एउटा मानिसले दुईवटी श्रीमती भएका मानिससँग मित लगाएछ । मित लगाएपछि उनीहरूबिच चिनजान बढ्दै गएछ । त्यस मानिसको दुइवटै श्रीमती एकैसाथ गर्भवती भएछन् । मितको अपभर्त व्यथाका कारण मृत्यु हुन पुगेछ । त्यसपछि अर्को मानिसले “ओहो ! बल्ल छोराछोरी पाउन लागेको, छोराछोरीको अनुहार नै देख्न नपाईकन मरे ! कस्ता अभागी रहेछन् मेरा मित !” भन्ने सोच्यै ऊ मितिनीहरूलाई भेट्न गएछ । गएपछि उनीहरूबिच दुःख-सुखका कुरा भयो । उसले भन्यो, “मित गए पनि म छु, भोलि गाह्रो-साह्रो, अष्टेरो पर्दा मलाई खबर

गर्नु, हजुरहरू सुत्केरी हुँदा नि खबर गर्नु । मेरो पनि हजुरहरूप्रति जिम्मेवारी छ । जुठो चोख्याउनुस्, अब यस्तै हो, दुःख, सुख आइरहन्छ” भनेर ऊ त्यहाँबाट बिदा भएर गएछ ।

बिस्तारै दिनहरू बित्दै गए र दुई-तीन दिनको फरक गरेर उनीहरूले बच्चा जन्माएछन् । दुवैको छोरा भएछन् । आफ्ना मितिनीहरू सुत्केरी भएको खबर पाएपछि मित पनि सुत्केरी मसला आदि इत्यादि बनाएर भेट्न गएछ । उसले “एउटी छोरी भैदिएको भए हुने थियो, दुवैको छोरो जन्मेछ, मेरो मितले अनुहार नै देख्न नपाएका यी केटाहरूको भाग्यचाहिँ कस्तो होला ? कस्तो भाग्य लिएर जन्मेका होलान् ? भन्ने सोचेछ । त्यसपछि छैंटीको दिन पनि आयो । उसले मनमनै विचार गर्‍यो, “आज छैंटीको दिन, म ढोकामा खुकुरी लिएर बस्छु र के लेख्यो भनेर सोध्छु ।” त्यतिखेर, भावीहरू पनि देख्ने गरी आउँथे । ऊ छैंटीको दिन ढोकामा खुकुरी लिएर बसेछ । राति भावी आएर उसलाई ढोकाबाट हट्न भनेछ । तर उसले ढोकामा त्यस खुकुरीलाई तेर्स्याएर जान दिएन, उसको मितको छोराको भाग्यमा लेखेको कुरा भने मात्र भित्र जान दिने शर्त राख्यो । त्यसपछि भावीले “लेखेको भाग्य भन्न मिल्दैन । त्यसैले मलाई जान देऊ” भन्यो । पहिले-पहिलेको चलनमा हतियार नाघेर जान हुँदैन भन्ने थियो र केही समयको छलफलपछि भावीले म तिम्रीलाई तिम्रो मितछोराको भाग्यमा के लेखेको भन्छु तर तिम्रीलेचाहिँ कसैलाई नभन्नु भनेछ । त्यसपछि उसले भावीलाई भित्र भाग्य लेख्न पठाएछ । भावीले मितछोराको भाग्य लेखेर ढोकाबाट बाहिर निस्कन खोज्दा “के लेखिस् त भाग्य ?” भनेर सोधेछ । त्यसपछि भावीले “केही लेखेको छैन चार पाथी धान लेखेको छु” भनेछ । त्यसको तीन दिनपछि भावी फेरि कान्छो छोराको भाग्य लेख्न आएछ । ऊ पहिलेजस्तै ढोकामा बसेछ र भावी बाहिर निस्केपछि “के लेख्यो त मेरो कान्छो छोराको भाग्य ?” भनेर सोधेछ । त्यसपछि भावीले “केही लेखेको छैन, एक भारी दाउरा लेखेको छु” भनेछ र त्यहाँबाट गएछ । न्वारनपछि उसले दुवै मितिनीहरूसँग केही बेर कुरा गरेर “तपाईंहरूलाई केही गाहोसाहो पऱ्यो भने मलाई खबर गर्नुहोला” भनेर त्यहाँबाट बिदा भएछ । बिस्तारै ती दुवै छोराहरू हुर्किदै गए । उनीहरूले आफ्नो मित बाउलाई पनि बिसे । तर उनीहरूले जे काम गर्दा पनि केही फलिफाप भएन । कहिले उभो लागेन । त्यसपछि मितिनीहरूले उसको जेठो छोरोलाई मितबुबा भएको कुरा भनेछन् र उहाँसँग सहयोग माग्न जान भनेछन् । त्यसपछि जेठो छोरो मितबाको घरतर्फ लाग्यो । मितबाको घरमा पुगेर ढोगभेट गर्‍यो र मितले पनि मितछोरा आएको खुसीमा मिठामिठा खानेकुराहरू खुवाएछन् । कुरा गर्दै जाँदा उनले मितबुबालाई आफूले जे काम गर्दा नि फलिफाप नभएको कुरा

बताएछ । यति कुरा सुनेपछि मितले भन्यो “ल ठिक छ, म दुई-तीन दिनपछि तेरो घर आउँला, अहिले जा” भनेर पठाएछ । छोरोचाहिँलाई मितबुबाले केही खर्च देलान् र सहयोग गर्लान् भन्ने अपेक्षामा गएको थियो तर मितबुबाको कुरा सुनेपछि ऊ निराश भएर घर फर्केछ । घरमा गएर मितबुबाले उसलाई भनेको कुरा आफ्नी आमालाई सुनाएछ । नभन्दै चार-पाँच दिनपछि मितबुबा उनीहरूको घर पुगेछन् । घरमा मितबालाई खान दिन केही पनि रहेनछ । उनीहरूले घरमा खानेकुरा केही नभएको कुरा बताएछन् र मितबाले भनेछन् “केही पनि छैन, म भोकै कसरी बस्नु ? होलानी केही न केही त ?” मितबुबाको कुरा सुनेर केटोले भनेछ, “केही पनि छैन, त्यही बिउको लागि भनेर चार पाथी धान राखेको छ । अरू केही छैन ।” मितबुबाले “जा न त, त्यही चार पाथी धानमध्ये केही मुठी राख्नु र अरू कुटाएर ल्याउनु” भनेछन् । उनले पनि मितबुबालाई के भोकै राख्नु अब, बिउ धान त अन्त कतै खोजुँला भनेर धान कुट्न गएछ र त्यही बिउ राखेको धानबाट आएको चामलको भात पकाएर मजाले खाएछन् र मजाले सुतेछन् । मितबुबाको यस्तो व्यवहार देखेर मितिनी र छोरो दुवै अचम्म परेछन् । अर्को दिन बिहान मितबाउले फेरि “ए बाबु ! जा न धान कुटेर ले” भनेछन् । “घरमा भा’को त्यही चार पाथी धान थियो, त्यो पनि हिजै कुटाइसकियो, अब घरमा त केही नि छैन” भनेर छोरोले भनेछ । “भन्या मान् न, त्यहाँ माथि घ्याम्पामा धान राखेको छ भनेको हैन, त्यही कुटाएर ल्याइजा । गएर हेर एकपल्ट” मितबुबाले भनेछन् । मितबुबाको कुरा सुनेर छोरो माथि गएछ, त्यहाँ त अझै पनि चार पाथी धान नै रहेछ, यो देखेर ऊ अचम्म भएछ र त्यसपछि मितबाले भनेजस्तै एक मुठी धान राखेर कुटाउन गएछ र बेचन थालेछ । विस्तारै ऊ धनी हुँदै गएछ । दाइ धनी भएको देखेर कान्छो भाइलाई पनि धनी हुन मन लागेछ र उसले पनि मितबुबालाई केही उपाय सिकाउन भनेछ । मितबाउले “कान्छोलाई दाउरा बेचन जानु र कति भनेर सोध्यो भने दस रुपियाँ भन्नु” भनेछ । ऊ पनि मितबाले भनेजस्तै दाउरा बेचन गएछ । ऊ जाने बित्तिकै एउटा मान्छे आएर दाउराको भाउ सोधेछ र दस रुपियाँ दिएर दाउरा लगेछ । यो देखेर ऊ अचम्म पर्दै सोचन थालेछ “अरूको चार-पाँच रुपियाँमा दाउरा नकिनेर मेरो दस रुपियाँको दाउरा किन्दै छ, के अचम्म भएछ” भन्दै घर फर्केछ । उसले सधैं त्यसरी नै दाउरा बेचेछ र ऊ पनि धनी हुँदै गएछ ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.१० भूतको कथा

धादिङको कुनै एउटा ठाउँमा ठूलो एउटा फाँट थियो । त्यो फाँटमा धेरै पहिले एउटा बूढाले कुनै गाउँका खेतालाहरू नखोजी अघिल्लो दिन बाँझै भएको खेत भोलिपल्ट रोपाइँ भइसकेको हुन्थ्यो । त्यो बूढाले मसान विद्या जानेका थिए । जब रात पर्थ्यो, रातको बाह्र बजेपछि उनी घरबाट बेसी भर्त्थे र मसानहरूलाई बोलाउँथे, “आओ मसान हो ! रोपाइँ गर्ने बेला भैसक्यो, म आइसकें” भन्थे । मसान, किचकन्ने, भूत सबै उपस्थित हुन्थे र कसैले खेत खन्ने, कसैले रोप्ने, कसैले बीउ काढ्ने र रोप्ने गर्थे । सबै मिलेर त्यति ठूलो फाँट एक-दुई घण्टामै भ्याउँथे । बूढाले पनि पूर्व तयारीका साथ घरबाट खाजा पनि लिएर जान्थे । बिहान उज्यालो नहुँदै बूढा घर आइसक्ये । गाउँलेहरूलाई अचम्म लागे पनि सबैलाई थाहा थियो तर बूढाको छोराको भर्खर विहे गरेको थियो, बुहारी नयाँ थिइन् । “रातिमा कहाँ जानुहुन्छ मेरा ससुरा, के काम गर्नुहुन्छ ?” भन्ने जिज्ञासा लाग्यो र उनले ससुरालाई सोधिन् । ससुराले भने, “तिमीहरू कोही पनि मेरो पछि लागेर नआउनु । राम्रो हुँदैन । खाजा मात्रै बनाइदेऊ, म खाजा लिएर जान्छु” भनेर नयाँ बुहारीलाई जानकारी गराए । जब ससुराले त्यसो भन्नुभयो, बुहारीलाई भन् जिज्ञासा भयो । आफ्नो ससुरा कहाँ जानुहुन्छ, के गर्नुहुन्छ भनेर उनलाई भन् बुभन मन लाग्यो । एकदिन, ससुरा गइसकेपछि बुहारी पनि केही समयपछि जङ्गलको बाटो हुँदै खेततिर लागिन् । खेतमा नपुग्दै ठूलो रुख थियो । रुखमा चढेर मेरा ससुराले के गर्नुहुन्छ भनेर हेर्दै थिइन् । कोही मानिस आएर हेरेको भूत, मसानले थाहा पाए । उनीहरूले खेत रोपेको ती बूढाबाहेक अरू कसैले हेर्नु हुँदैन थियो । मसानहरूले “हामीलाई भोक लाग्यो, भोक लाग्यो” भनेको सुनेपछि खाजा दिन लाग्दा “हामी तपाईंले दिएको खाजा नखाने, हामीले खाजा पाइसक्यौं, हामी आफैँ खान्छौं” भनेर मसानहरूले कामबिचमै छोडेर खाजा खाने भनेर उनीहरू उफ्रिन थाले । त्यही बेला बूढाले ठूलो आवाज सुने । “के भयो ?” भनेर सुन्दै थिए उनले लख काटे, आज पक्कै पनि कोही मान्छेले यहाँ आएर हेच्यो । कसलाई के भयो ? तिनीहरूले त्यही खाजा खाए, मेरो काम पनि भएन । को मान्छेलाई सिध्याए ? कसले मैले भनेको मानेन भनेर बूढालाई पीर पर्न थाल्यो । मसानहरू त्यही खेतमा हराए । बूढा पनि घरतिर लागे । जङ्गलको बाटो उकालो चढ्दै घर पुगे र घरका सबैसँग “यस्तो-यस्तो भयो आज काम सम्पन्न भएन । को गयो आज गाउँबाट ?” भनेर सोधखोज गर्दा त आफ्नै बुहारीलाई नै भूत-मसानले खाइदिएछ । बूढालाई पश्चात्ताप

भयो । मैले भनेको किन बुहारीले मानिन भनेर पिर पयो । त्यसैले आफूभन्दा ठूलाले भनेको मान्नुपर्छ ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.१.११ भँगेराको कथा

एकादेशमा दुईजना बूढाबूढी बस्दा रहेछन् । उनीहरू निःसन्तान रहेछन् । बूढोलाई साह्रै पिर परेछ । के गर्ने, कसो गर्ने ? भनेर एकदिन घुम्दै जाँदा एउटा भँगेराको बच्चा भेटिएछ । विचरा बूढाले सन्तानको रहर मेट्न भँगेराको बच्चा ल्याएर पालन-पोषण गरी हुर्काउनु-बढाउनु गरेछ । बूढीलाईचाहिँ भँगेरा लिएर आएको मनपरेको थिएन । एकदिन बूढो बाहिर गएको बेलामा बूढीले खाना पकाएको माड भिकेर राखेकी रहिछ । भँगेराले त्यो माड खाइदिएछ, अनि त्यो माड खाइदिएकाले रिस उठेर बूढीले भट्टी हानिछन् । भट्टीले खुट्टामा लागेर भँगेराको खुट्टा भाँचिएछ । अनि भँगेरो खन्ट्याङ्-खन्ट्याङ् गर्दै हिँड्न थालेछ । बूढो आइपुग्यो र सोध्यो, “के भयो ?” बूढाको कुरा सुनेर भँगेरो रोएछ । बूढोले उपचार गरेर भँगेराको घाइते खुट्टा टेक्न सक्ने बनाएछ । त्यसपछि भँगेराले बूढालाई “बुबा ! म बस्न यहाँ सक्तिनँ । मलाई आमाले रिस गर्छिन्, म यहाँबाट जान्छु” भनेछ । त्यसो भए “जान त जा” भनेर पठाइदिएछ । भँगेरो स्वतन्त्ररूपमा उडेर गयो । अनि घरमा भँगेराको निहुँमा खन्ट्याङ्-मन्ट्याङ् भगडा भएछ । बूढो पनि रिसाएर घर छोडेर हिँडेछ । घर छोडेर जाँदै गर्दा ऊ ठूलो वृन्दावनमा पुगेपछि “अब कहाँ बस्ने, के गर्ने ?” भनेर सोचिरहेको बेलामा घरबाट गएको त्यही भँगेरा ठ्याक्क भेट भएछ । भँगेराले चिनेर “बुबा !” भनेर च्याप्प समातेर उसैसँगै बस्यो । दुईजनाको कुराकानी भयो । बूढाले “तेरी आमाले मलाई यस्तो गरी-उस्तो गरी । मलाई पनि घरबाट निकाली” भनेपछि भँगेराले “आउनुस् बुबा ! मेरो घर जाऊँ” भन्यो र बूढालाई लिएर घरमा गयो । भँगेराले मीठामीठा परिकार बनाउने र खान दिने गर्न थाल्यो । बूढा मोटाउँदै जान थाले । एकदिन बूढाले “के गर्ने नानी ! कति दिन बस्ने, मलाई तेरो आमाको सम्भना आयो । घर जान मन लाग्यो” भनेछ । अनि भँगेराले “लौ त बा !” भनेर कोसेली-सोसेली बनाएर ट्याङ्कामा चट्ट हालेर टक्क ताल्चा लिएर “ल बुबा ! यो ट्याङ्का लिएर जानुहोस्” भनेछ । बूढाले ट्याङ्का टक्क टाउकामा हालेर सरासर घर गएर बिसाएछ । “के ल्याए बूढाले ?” भनेर बूढीले खोलेर हेर्दा सुनैसुन, गहनैगहना, पैसा असरट्ट ।

“ए बूढो ! कहाँबाट ल्यायौ, कहाँ पायौ यत्तिका गरगहना र पैसा ?” भनेर सोधिछे । बूढाले “तँलाई किन भन्नु ? मलाई मेरो भँगेरोले दिएर पठाको । मैले पालेको भँगेरो मैले एक ठाउँमा भेटें । उसले मलाई लगेर खुवाइ-पियाई गऱ्यो अनि यो दिएर पठायो । अब त म धनी भइहालें नि !” भनेछ । अनि बूढाको कुरा सुनेर बूढीलाई पेट पोलेछ । “यस्तो बूढोलाई जस्तै मलाई नि दिन्थ्यो कि, जान पऱ्यो” भनेर भँगेराको ठेगाना लिएर बूढी पनि गइछे । बूढीलाई पनि भँगेराले मीठा-मीठा खानेकुरा दियो । अनि बूढी घर फर्कने बेलामा ट्याङ्कामा भरी सामान हालेर पठाएछ । सरर घर आइपुगेर बूढासँग भनिछे, “बूढा ! यी हेर मैले पनि ल्याएँ” । “खोल् न त” बूढाले भने । अनि खोल्न लाकी थिई बूढीले त्यस ट्याङ्कामा त त्यस भँगेराले त अजिङ्गर, खाग, बिच्छु र टोक्ने किराहरू भरेर पठाएको रहेछ । त्यो निकलेर बूढीलाई टोक्न थालेछन् । बूढीको अनुहार सुन्निएर यत्ति ठूलो भएछ । अनि बूढाले “ओइ, छोडिदे” भनेपछि मात्र छोडिदिएछन् । अनि बूढाले “थाहा पाइस बूढी ! तँले हेलाँ गरिथिस् नि भँगेरोलाई । के गति भयो ! भँगेरोले माड खाएर के बिग्रेको थियो ? फेरि बनाउन मिल्ने कुरो” भनेर सम्झाई-बुझाई गरेछन् । अनि दुई बूढाबूढी मिलेर बस्न थालेछन् ।

सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला, यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुरुक्क आइजाला ।

४.२ धादिङ्का लोककथाको वर्गीकरण

विद्वान्हरू विभिन्न आधारमा लोककथाको वर्गीकरण गरेका छन् । नेपालीमा तुलसी दिवस, चूडामणि बन्धु, मोतीलाल पराजुली, धर्मराज थापा र हंसपुरे सुवेदीद्वारा गरिएका वर्गीकरणहरू महत्त्वपूर्ण छन् । यहाँ सङ्कलित लोककथाहरूलाई विषयवस्तुका आधारमा चार प्रकारमा निम्नानुसार वर्गीकरण गरिएको छ :

४.२.१ सामाजिक लोककथा

सामाजिक जीवनबाट लिइएका पात्र र घटनामा आधारित लोककथालाई सामाजिक लोककथा भनिन्छ । यस किसिमका लोककथामा सामाजिक अवस्था, सामाजिक आर्थिक स्थिति, समाजमा व्याप्त सुख-दुःख, रिस-राग, न्याय-अन्याय, प्रतिशोध, धुर्त्याई, चलाखी, राजनैतिक, सांस्कृतिक अवस्था आदि चित्रण हुन्छ ।

सङ्कलित कथाहरूमध्ये “सासू-बुहारीको कथा”, “बेलौरेको कथा” र “दुःखी चेलीको कथा” सामाजिक कथाहरू हुन् । यी कथाहरूलाई निम्नलिखित सामाजिक विषयका घटनाका सन्दर्भहरूलाई आधार मानी वर्गीकरण गरिएको छ :

सासू बुहारीको कथा

- लोग्ने मरेको जवान महिलाले समाजमा भोग्नुपर्ने यौनहिंसासम्बन्धी समस्या,
- आमाको सन्तानप्रतिको माया,
- बिहे गरेपछि बदलिएको छोरो,
- बुहारीको सासूप्रति नकारात्मक भावना,
- उल्टो कुरा लगाई आमाप्रति नकारात्मक भावना फैलाउने र लोग्नेलाई आफूप्रति आकर्षित गर्ने बुहारीको चाल,
- वास्तविकता थाहा पाइसकेपछि छोराको आमाप्रति श्रद्धा,
- सासूले थाहा पाइसकेपछि सासूसँग माफी माग्नु,
- सासूले बुहारीलाई तथा छोराले श्रीमतीलाई माफी दिनु,
- सुन्दर घरबार बस्नु ।

यी सबै सामाजिक विषयवस्तु भएकाले यी सामाजिक लोककथामा पर्दछन् ।

बेलौरेको कथा

सामाजिक विषयवस्तुलाई टपक्क टिपेर बनेको यो कथा समाजमा घट्ने र घट्नसक्ने घटनामा आधारित छ । यसलाई सामाजिक लोककथाको रूपमा अध्ययन गर्दा :

- विधुवा आमा हुनु,
- गरीबीको कारण छोरीको बिहे चाँडै हुनु,
- छोरी लामो समय माइत नफर्किएपछि भेट्न छोरो पठाउनु,
- कोसेली ‘बेल’ लानु,
- भाञ्जा-भाञ्जीले बेलको फुटबल खेल्नु,
- दिदीले हेला गर्नु,
- मितज्यूकोमा जानु,
- मितले श्रद्धा गर्नु,

- बेलौरे धनी हुनु,
- दिदीले मानमर्यादा गर्नु,
- मितको श्रद्धा कायमै रहनु ।

यी विषयवस्तुलाई मनन गर्दा बूढापाकाका 'सुख पाए ससुराली जानु, दुःख पाए मितकोमा जानु' भन्ने उखान चरितार्थ भएको देखिन्छ ।

दुःख पाइयो भने आफ्ना सहोदर दाजु-भाइ, दिदी-बहिनी पनि आफ्ना हुँदैनन् । उनीहरूले घृणा गर्छन् । त्यो घृणा र हेला सहिसक्नु हुँदैन तर मित तथा असल साथीले यस्तो बेलामा सहयोग गर्नसक्छ र गर्छ । त्यसैले यो सामाजिक लोककथा हो ।

दुःखी चेली

“दुःखी चेली” शीर्षकको लोककथाको कथावस्तुलाई हेर्दा लोककथा मात्र नभई समाजमै घटित यथार्थ घटनाजस्तो लाग्छ । आज पनि यस्ता खालका घटनाहरू समाजमा घटिरहेका हुन्छन् । यसको विषयवस्तुलाई केलाउँदा :

- परिवारकी एकली छोरी हुनु,
- घरको घरायसी कामदारसँग प्रेमसम्बन्ध रहनु,
- परिवारबाट तिरस्कार हुनु,
- गाउँ छाडेर जानु,
- दुईवटा बच्चा जन्मनु,
- लोग्नेको मृत्यु हुनु,
- बच्चाको मृत्यु हुनु,
- माइती पूरै सखाप हुनु,
- पीडा सहन नसकी बहुलाउनु ।

माथिका विषयवस्तुबाट मान्छेको जीवन सधैं प्रेममय नहुने र दुःख आउन थालेपछि सहन र खप्न नसकिने कुरा दर्साइएको छ । अरूको कुरा नमान्नाले पनि आफ्नो र आफ्नो परिवारमा विभिन्न प्रकारका दुःख परिआउन सक्ने कुरा उल्लेख भएको छ । 'दुःखीको घरमा मात्र तेरो बास हुने भए, हे ईश्वर ! दया राखी मलाई अझ दुःख दे' भन्ने भनाइ यहाँ चरितार्थ भएको छ भने बूढापाकाका भनाई 'दसा बाजा बजाएर आउँदैन' भन्ने उखानको

समेत पुष्टि भएको छ । यसलाई अध्ययन गर्दा यो कथा नितान्त सामाजिक लोककथा हो भन्न सकिन्छ ।

४.२.२ अतिमानवीय तथा परामानवीय रूपका लोककथा

अतिमानवीय रूपका लोककथा भन्नाले सबै मानवमा हुने स्वभावभन्दा भिन्न प्रवृत्ति र कार्यलाई गर्ने सामर्थ्य भएका पात्र तथा चरित्रहरूको प्रस्तुति भएका लोककथालाई बुझ्नु पर्दछ । अतिमानवीय रूपका लोककथाका पात्रहरू असम्भव लाग्ने कार्यलाई पनि सम्भव तुल्याउँछन् । अतिमानवीय रूपका कथामा मान्छेमा हुने चलाखी, धुत्याई, मुख्याई, ठगी, अविश्वास, ईर्ष्या, डाहा आदि दुष्चरित्रको चित्रण गरी मानवमा हुने खराब प्रवृत्तिलाई बाहिर निकाल्ने काम गरिएको हुन्छ ।

परामानवीय रूपका लोककथा भन्नाले तिलस्मी र जादुमय प्रकृतिका भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, परी, अप्सरा, बोक्सी, जादुगर आदि पात्रहरूका अद्भुत, चमत्कारी, भयावहपूर्ण कार्यहरूको चित्रण गरिएका कथाहरूलाई बुझिन्छ ।

सङ्कलित लोककथाहरूमध्ये अतिमानवीय रूपका लोककथाहरूमा “राक्षसको कथा”, “भाग्यमा भए खटिया उपर”, “आमाको माया” र “भूतको कथा” परामानवीय रूपका लोककथामा पर्दछन् ।

राक्षसको कथा

- सिमीको बिउमा गाई बेच्नु,
- एकैरात सिमीको बिउको बलियो लहरा अकासिनु,
- सिमीको लहरा चढ्दै अकैँ दुनियाँमा पुग्नु,
- राक्षसको बूढीले माया गर्नु,
- राक्षसको पैसा र कुखुरी चोरी गर्नु,
- राक्षसको लखेटाइले नभेट्नु,
- सिमीकै लहरोवाट भयाल हुँदै घरमा प्रवेश गर्नु,
- सिमीको लहरो काटिदिनु,
- राक्षसको अन्त्य हुनु ।

माथिका यी घटनाको विश्लेषण गर्दा मानवले गर्न नसक्ने असम्भव कामलाई सम्भव तुल्याउने पात्र छोराचाहिँ भएको छ । अतिमानवीय रूपमा कथामा आफू भोकै रहँदा पनि अर्को बच्चाको लागि सिमीको बिउ लिएर गाई दिनु र राक्षसको राज्यमा प्रवेश गरी राक्षसलाई भुक्त्याएर उसको सम्पत्ति लुटेर ल्याउन सक्नुले यो अतिमानवीय लोककथाको रूपमा दर्ज हुन जान्छ ।

भाग्यमा भए खटियाउपर

- 'भाग्यमा भए खटियाउपर' भन्दै भाग्यमा विश्वास गरेर अल्ल्छी हुनु,
- दाजुभाइले छुट्याइदिनु,
- चाडपर्व मान्न कठिन हुनु,
- खसी चोर्न जानु,
- रातिमा मोटो खसी छामेर दाम्लो लगाई घिसाउँदै ल्याएर खम्बामा बाँध्नु,
- उज्यालो हुँदा बाघ हुनु,
- उसले बाघ डोच्याएर ल्याएकोमा पञ्च भेलाले पुरस्कारको व्यवस्था गर्नु ।

माथिका घटनाक्रमलाई केलाउँदा बाघलाई दाम्लो लाएर डोच्याउँदै घरमा ल्याई खाँबोमा बाँध्नु मात्र नभई मान्छेभित्र लुकेको अल्ल्छी, गफाडी र चोरी गर्नुजस्ता खराब प्रवृत्तिलाई उजिल्याउने प्रयास पनि यस लोककथाले गरेको छ । त्यसैले यो अतिमानवीय लोककथाभित्र पर्दछ । तर यो लोककथाको विषयवस्तु अतिमानवीय मात्र नभई बढी भाग्यतिर ढल्केको पाइन्छ । त्यसैले यसलाई भाग्यवादलाई विश्वास गर्ने धार्मिक, सांस्कृतिक लोककथाभित्र पनि राखेर अध्ययन गर्न सकिन्छ । समग्रमा भन्नुपर्दा यो लोककथा अतिमानवीयका साथै धार्मिक, सांस्कृतिक लोककथाको सम्मिश्रण हो ।

आमाको माया

“आमाको माया” शीर्षकको लोककथालाई विश्लेषण गर्दा निम्नानुसार तर्कको साथ यो परामानवीय लोककथा मान्न सकिन्छ :

- मरेको आमा आएर बच्चालाई दुध खुवाउनु र स्याहार गर्नु,
- मरेर दाहसंस्कार गरेको मान्छेलाई आफन्त र भाँक्रीले देख्नु,
- भाँक्रीले मृत आत्माको शान्तिका लागि कार्य गर्नु,

- बच्चाको सुरक्षाको लागि भाँक्री लगाएर ठीक पारिनु ।

माथिका घटनाहरूलाई विश्लेषण गर्दा यो मानवजीवनमा घट्न सक्ने घटनाभन्दा परको कल्पना मात्र हो । त्यसैले यो परामानवीय लोककथा हो ।

भूतको कथा

- ठूलो फाँटको रोपाईँ रातभरमा नै हुनु,
- कसैको सहयोग नलिई सम्पन्न गर्नु,
- बाह्र बजे राति मसानहरू बोलाउनु,
- मसानको हुल आई एक-दुई घण्टामा नै रोपाईँ भ्याउनु,
- नयाँ दुलहीलाई ससुराको कामसँग जिज्ञासा लाग्नु,
- लुकेर हेर्न जाँदा मसानले बुहारीलाई खानु ।

माथिको लोककथाको विषयवस्तु मान्छेको जीवनभन्दा परको काल्पनिक र भयङ्कर डरलाग्दो घटनामा आधारित रहेको देखिन्छ । यसका साथै अन्धविश्वास एवम् भूत, प्रेत र मसानको उपस्थिति परामानवीय लोककथाभित्र पर्दछ ।

४.२.३ पशुपक्षी तथा फलफूलका लोककथा

पशुपक्षीसँग सम्बन्धित लोककथाका प्रमुख पात्रहरू पशुपक्षीहरू नै रहेका हुन्छन् भने फलफूलसँग सम्बन्धित लोककथाका प्रमुख पात्रहरू फलफूल, रुख आदि रहेका हुन्छन् । यस किसिमका कथाहरू रोचक, नैतिक र उपदेशात्मक हुन्छन् । यसमा प्रयुक्त पात्रहरूले मानवीय पात्रहरूभन्दा बोल्ल, सम्वाद गर्न सफल हुन्छन् र यी पात्रहरू चलाखी र बहादुरीपूर्ण कार्य गर्न निकै सक्षम देखिन्छन् ।

सङ्कलित लोककथाहरूमा फलफूलका कथाहरू सङ्कलित भएका छैनन् । तर पशुपक्षीका कथाहरूमा “दिदीबहिनीको कथा” र “भँगेरोको कथा” पर्दछन् ।

दिदीबहिनीको कथा

- बहिनी गरीब र दिदी धनी हुनु,
- गरीब बहिनी छोराको चामलको भात खाने रहर पूरा गर्न दिदीसँग चामल माग्नु जानु,
- दिदीले दिनभरि जुम्रा हेर्न लगाई रित्तै घर पठाउनु,

- रूँदै फर्केकी बहिनीको बाटोमा भालुसँग भेट हुनु,
- भालुले रुनुको कारण सोध्नु,
- बहिनीले सबै कुरा भन्नु,
- भालुले राति चुलो लिपपोत गरी राख्न अह्वाउनु,
- भालु घरमा आउनु,
- दिसा गरेर जानु,
- भोलिपल्ट हेर्दा सुनका सिक्का हुनु,
- दिदीले पनि सोही कार्य दोहोर्‍याउनु,
- भालुले दिदीकोमा पनि गएर दिसा गरिदिनु,
- त्यो दिसा सुनको सिक्कामा परिवर्तन नहुनु (दिसा नै रहनु) ।

माथिको लोककथाको घटनालाई केलाउँदा भालु प्रमुख पात्रको रूपमा आएको छ । भालुले मान्छेकै भाषा बोलेको छ । मान्छेको भाषा बुझेको छ । अनि मान्छेको मनको पीडा बुझी सहयोग गर्नुपर्नेलाई सहयोग गरेको छ, भने सजाय दिनुपर्ने खराब आचरण भएको व्यक्तिलाई सजाय पनि दिएको छ । यसरी यस लोककथामा अर्काको डाहा गर्न नहुने, अर्कालाई दुःख दिन नहुने, गरीबको मजाक उडाउन नहुने कुरा रोचक तवरले भालुको माध्यमद्वारा नैतिक र उपदेशात्मक ढङ्गले शिक्षा दिएको छ । त्यसैले यो लोककथा पशुपक्षी तथा फलफूलको लोककथाभिन्न पर्दछ ।

भँगेराको कथा

- निःसन्तान बूढाले सन्तानको रहर मेट्न भँगेरो ल्याएर पाल्नु,
- बूढीलाई मन नपर्नु,
- भातको माड खाएको निहुँमा बूढीले भँगेराको खुट्टा भाँचिदिनु,
- बूढाले अगाध प्रेमका साथ भँगेराको उपचार गर्नु,
- घरमा असुरक्षित ठानी भँगेरालाई स्वतन्त्र छोडिदिनु,
- बूढालाई पनि बूढीले घरबाट निकाल्नु,
- भँगेरोसँग भेट हुनु,
- उसले बूढाको खानपान, हेरचाह र स्याहार-सुसार गर्नु,
- घर फर्कन खोज्दा सुन, चाँदी, हिरा, मोतीसहित बिदाई गर्नु,

- लोभी बूढी पनि भँगेरो खोज्दै जानु,
- पाहुना सम्भरेर भँगेरोले बसुन्जेल श्रद्धा गर्नु,
- घर फर्कदा कोसेलीस्वरूप बिच्छी, अजिङ्गर, खाग पठाउनु ।

यस कथामा भँगेरो प्रमुख पात्र हो । भँगेरोले मान्छेसँग नाता गाँस्न सफल भएको छ । मान्छेको भाषामा ऊ पनि बोलेको छ । दुःखमा साथ दिएको छ भने आफूलाई दुःख दिनेसँग बदला पनि लिएको छ । त्यसैले यो नितान्त पशुपक्षीको कथाभिन्न पर्ने लोककथा हो ।

४.२.४ धार्मिक एवम् सांस्कृतिक लोककथा

हाम्रा सांस्कृतिक परम्पराका भल्को दिने सांस्कृतिक कार्यक्रम व्यक्ति स्थान एवम् घटनाहरूको विवरण आदिसँग सम्बन्धित लोककथालाई धार्मिक लोककथा भनिन्छ । लोकजीवनमा प्रचलित रीतिरिवाज, मेला, चाडपर्व, परम्परागत रूढी तथा अन्धविश्वास, जन्मदेखि मृत्युपर्यन्तका विभिन्न संस्कार आदि कुराहरू लोककथाका प्रचलित संस्कृतिहरू हुन् । यिनै सांस्कृतिक मूल्य-मान्यता र प्रचलन समाजमा आउनुका साथै त्यसमा कपोलकल्पित घटनाहरू जोडिएका लोककथाहरू यसभिन्न पर्दछन् ।

मैले सङ्कलन गरेका लोककथाहरूमध्ये “छैँटीको भाग्य” सांस्कृतिक लोककथाअन्तर्गत पर्दछन् । यसको विषयवस्तुलाई केलाउँदा:

- भावीले भाग्य लेखेको हुनु,
- मित लगाउनु,
- मितको दुईवटी श्रीमती हुनु,
- मितको मृत्यु भएकाले जूठो चोख्याउने काम हुनु,
- मितिनीहरू सुत्केरी हुँदा मित पुग्नु,
- छैँटीको दिन भावी आउनु,
- भावीलाई भाग्यमा लेखेको कुरा भन्न वाध्य बनाउनु,
- मितछोराहरू ठूला भएपछि मितबा भेट्न जानु,
- कुनै काम नफापेको कुरा गर्नु,
- अधिल्लो दिन बिउको लागि राखेको चारपाथी धान कुट्नु तर भोलिपल्ट उत्ती नै बाँकी रहनु,
- कान्छोको दाउरा दस रुपियाँको दरले बिक्री हुनु ।

यस लोककथामा हिन्दुधर्ममा आस्था राख्ने मानिसहरूको जीवनमा गरिने विभिन्न प्रकारका समाजमा चलिआएका विभिन्न सांस्कृतिक तथा धार्मिक संस्कारहरूको प्रस्तुति रहेको छ । यस्ता संस्कारहरूमा छैंटी, न्वारन, मृत्युपछि गरिने संस्कार आदि रहेका छन् । यसैगरी यस लोककथामा भाग्यमा भए जे पनि हुन्छ भनी भाग्यमा विश्वास गरेको छ । भाग्यमा जे छ त्योभन्दा बाहेक मान्छेले केही पाउँदैन । जे पाउँछ, जति पाउँछ, मेरो भाग्यमा यत्ति नै र यही नै रहेछ भनेर खुसी हुन सिकाएको छ । यसरी हेर्दा भाग्यवाद अँगालेको यो लोककथा नितान्त धार्मिक, सांस्कृतिक लोककथा हो भन्न सकिन्छ ।

४.२.५ हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथा

लोकजीवनमा हाँसन, खुसी हुन, रमाउन र दिनभरि गरेको कामका थकाइ मारन जीवनमा ऊर्जा भर्नको लागि हाँस्ने र हँसाउने कामका लागि हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक कथाहरू प्रचलनमा आएको मान्न सकिन्छ ।

सङ्कलित कथाहरूमध्ये “लोभी बूढाबूढीको कथा” यसभित्र पर्दछ । यस कथाको विषयवस्तुलाई केलाउँदा :

- बूढाबूढी मात्र हुनु,
- मागेर जीविका चलाउनु,
- रोटी पकाउने निधो गर्नु,
- दाउरा खोज्न जाँदा बाघ भेटनु,
- रोटी दिने वाचाका साथ बाघलाई दाउरा खोज्न लगाउनु,
- रोटी पकाई बूढाबूढीले नै भ्याउनु,
- बाघ आएको देखेपछि घ्याम्पोमा लुक्नु,
- बिस्तारै पादन खोज्दा फुस्किनु र ठूलो आवाजले घ्याम्पो नै फुटनु,
- बाघ डराएर भाग्नु ।

लोककथाको वर्गीकरणलाई आधार मान्दा यो लोककथा हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथाभित्र पर्दछ । यस कथामा बाघ एउटा पात्रको रूपमा प्रवेश गरे पनि यसको मूल उद्देश्य हाँस्य नै रहेकाले यो हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथा हो ।

४.३ निष्कर्ष

‘धादिड जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोकथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरण’ शीर्षकको यस अध्ययनपत्रमा धादिड जिल्लाको थाक्रे गाउँपालिका वडा नं. ९ र गजुरी गाउँपालिका वडा नं. २ मा प्रचलनमा रहेका नेपाली लोककथाहरूलाई आधार मानेर अध्ययनकार्य सम्पन्न गरिएको छ । अध्ययनका क्रममा सङ्कलित एघारवटा लोककथाहरूमा प्रस्तुत भएका कथावस्तुको आधारमा सामाजिक लोककथा, अतिमानवीय लोककथा, परामानवीय लोककथा, धार्मिक तथा सांस्कृतिक लोककथा, पशुपक्षीसँग सम्बन्धित लोककथा र हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथामा वर्गीकरण गरिएको छ ।

यसरी यस अध्ययनपत्रमा सङ्गृहीत लोककथाहरूलाई वर्गीकरण गर्दा “सासू र बूहारी”, “बेलौरेको कथा” र “दुःखी चेली” शीर्षकका लोककथाहरूलाई सामाजिक जीवनबाट लिइएका पात्र र घटनामा आधारित लोककथा भएकाले सामाजिक लोककथाभित्र समावेश गरिएको छ । त्यसैगरी “राक्षसको कथा” मा मानवले गर्न नसक्ने असम्भव कार्यलाई सम्भव तुल्याउने काम छोरा पात्रले गरेकाले अतिमानवीय लोककथाको दर्जा दिइएको छ । “भाग्यमा भए खटियाउपर” शीर्षकको लोककथामा मान्छेभित्र लुकेको अलछी, गफाडी र चोरीजस्ता खराब प्रवृत्तिलाई बाहिर निकाल्नुका साथै बाघलाई समेत घरमा ल्याएर बाँध्न सक्नुजस्ता असम्भवप्रायः कामका साथमा भाग्यमा विश्वास गरेको र गर्नुपर्ने कुरा व्यक्त भएकाले यसलाई अतिमानवीय लोककथाका साथै धार्मिक, सांस्कृतिक लोककथाको मिश्रण भएको मान्न सकिन्छ ।

“आमाको माया” र “भूतको कथा” शीर्षकका लोककथाहरूमा मानवजीवनमा घटनसक्ने घटनाभन्दा परको कल्पना मात्र भएको देखिएकाले यिनीहरू परामानवीय लोककथामा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ । यसैगरी पशुपक्षीसँग सम्बन्धित लोककथाहरूमा “दिदीबहिनीको कथा” र “भँगेरोका कथा” परेका छन् । यी कथाहरूमा पशुपक्षी (भालु र भँगेरो) ले मानिसले जस्तै व्यवहार गर्ने, बोलीचाली गर्ने तथा मानवीय पीडा, दुःख बुझी सोहीअनुसारका आचरण प्रकट गर्दै राम्रो कार्य गर्नेलाई प्रोत्साहित गर्नुका साथै अमानवीय कार्य गर्नेलाई दण्ड-सजाय दिएका छन् ।

“भावीले लेखेको भाग्य” शीर्षकको लोककथामा लोकजीवनमा प्रचलित रीतिरिवाज, परम्परागत रूढी तथा अन्धविश्वासका साथै जन्मदेखि मृत्युपश्चात्का विभिन्न

संस्कारहरूलाई विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैले यो कथा धार्मिक तथा सांस्कृतिक लोककथामा वर्गीकृत गरिएको छ । “लोभी बूढाबूढी” शीर्षकको लोककथामा लोकजीवनमा हाँस, खुसी हुन, रमाउन र थकाइ लागेको समयमा शरीरमा ऊर्जा भर्नका लागि हाँस्यरसको प्रयोग भएकाले यो कथा हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथाको श्रेणीमा राखिएको छ ।

यसैगरी अध्ययनपत्रमा सङ्कलित धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोकथाहरूलाई विशेषताका आधारमा अध्ययन गर्दा कथा वाचन गर्ने क्रममा कथकेले केही ठाउँमा गयात्मक शैली पनि अंगाल्न सक्ने भए तापनि आख्यानलाई नै प्राथमिकता दिएको पाइयो । कल्पना, सामाजिकता, मनोरञ्जनात्मकता, कुतूहलता, अभिप्रायको प्रयोग, अतिशयोक्तिमूलकता, गद्यात्मक सरल भाषा र वर्णनात्मक शैली नै यस जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूका विशेषता रहेको पाइयो । यस्ता लोककथाहरू श्रुतिमधुर र कर्णप्रियसमेत रहेको पाइयो ।

परिच्छेद पाँच

उपसंहार तथा निष्कर्ष

५.१ उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययनकार्य 'धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाको सङ्कलन र वर्गीकरण' शीर्षकमा सम्पन्न गरिएको छ । यो अध्ययनपत्रलाई विभिन्न पाँच परिच्छेदमा विभाजन गरी आवश्यक अध्ययन प्रविधि अँगाली सुसङ्गठित गरिएको छ ।

परिच्छेद एक : विषयपरिचय, समस्याकथन, अध्ययनकार्यको उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, अध्ययनकार्यको औचित्य, अध्ययनको सीमाङ्कन, सामग्री सङ्कलन र अध्ययन विधि एवम् अध्ययनपत्रको रूपरेखा आदि शीर्षक तथा उपशीर्षकहरू राखी पूर्णता दिइएको छ ।

परिच्छेद दुई : लोककथाको सैद्धान्तिक परिचयसँग सम्बन्धित रहेको छ । यसअन्तर्गत लोककथाको परिचय, लोककथाको परिभाषा, लोककथाको स्वरूप, अन्तरवस्तुको सम्बन्ध, लोककथाका तत्त्व, लोककथाको विशेषता प्रष्ट्याउने प्रयास गरिएको छ ।

परिच्छेद तीन : धादिङ जिल्लाको सामान्य परिचयसँग सम्बन्धित छ । यसअन्तर्गत धादिङ जिल्लाको नामकरण, धादिङ जिल्लाको ऐतिहासिक महत्त्व, भौगोलिक प्राकृतिक अवस्था, धादिङ जिल्लाका महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलहरूको बारेमा जानकारी प्रस्तुत गरिएको छ ।

परिच्छेद चार : धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको सङ्कलन र वर्गीकरणसँग सम्बन्धित रहेको छ । यसमा "सासू र बुहारी", "राक्षसको कथा", "बेलौरेको कथा", "आमाको माया", "दुःखी चेलीको कथा", "दिदी-बहिनीको कथा", "भाग्यमा भए खटियाउपर", "लोभी बूढाबूढी", "छैँटीको भाग्य" "भूतको कथा" र "भँगेरोको कथा" लिपिवद्ध गरिएका छन् । उक्त कथालाई सामाजिक लोककथा, पशुपक्षीका लोककथा, धार्मिक तथा सांस्कृतिक लोककथा, अतिमानवीय तथा परामानवीय रूपका र हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथा गरी पाँच प्रकारमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

परिच्छेद पाँच : पहिलो, दोस्रो, तेस्रो र चौथो परिच्छेदमा गरिएको अध्ययन सारसङ्क्षेप तथा निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

यस अध्ययनपत्रको परिशिष्ट खण्डमा लोककथा सङ्कलनका क्रममा सूचक (कथके) हरूको नाम, अध्ययन स्थलमा कथकेहरूसँग खिचिएका तस्वीरहरू तथा अन्त्यमा नेपाल र धादिङ जिल्लाको नक्सा प्रस्तुत गरिएको छ ।

यसरी एउटा अध्ययनपत्रमा हुनुपर्ने सम्पूर्ण आवश्यक प्रविधि र उपकरणको प्रयोग गरी यस अध्ययनपत्रलाई सङ्गठित र औपचारिक बनाइएको छ ।

५.२ निष्कर्ष

धादिङमा प्रचलित लोककथाहरू लोकजीवनको आस्था, मनोरञ्जनको साधन र लोकसाहित्यको मेरुदण्डका रूपमा रहेका छन् । लिखित साहित्यको कथा विधाको हाराहारीमा यसको स्वरूप जीवन्त बनेको छ । समाजको प्राचीन जनजीवन, राजनीति, लोकआस्था, लोकव्यवहार र सामाजिक विषयवस्तुको चित्रण यसमा पाइन्छ । नेपाली समाजको लोकतात्त्विक अध्ययनका दृष्टिले पनि धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाको स्थान महत्वपूर्ण रहेको छ । सरल, सुबोध र स्थानीय लोकभाषा प्रयोग भएको धादिङमा प्रचलित यी लोककथाहरूले नेपाली समाजको प्रतिनिधित्व गरेको पाइन्छ । धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूले स्थानीय जनजीवनको विम्ब प्रस्तुत गरेका छन् । भाग्य, बुद्धि, भूत, प्रेत, मसान, पिशाच, अर्ती, उपदेश, सासू-बुहारी, बूढा-बूढी (लोगने-स्वास्नी), आमा-छोरा आदिको पारिवारिक वस्तुस्थिति र त्यससँग सम्बन्धित लोकधारणा यहाँका लोककथाहरूले चित्रण गरेका छन् ।

त्यसैगरी यहाँका लोककथाहरूमा अतिमानवीय पात्रहरूको प्रयोग गरिएको पाइन्छ । भूतप्रेत, देवता, भाँक्री, मसान, पिशाचजस्ता कुराहरूमा स्थानीय जनजीवनको चासो र विश्वास झल्काउने कुरा कथामा पाइन्छ । त्यस्तै अतिरञ्जित चतुर्थाई, भावी र भाग्यका कुरा, सामाजिक दुःखजिलो, बडाले भनेका नमान्दा अनि सामाजिक मर्यादा नाघ्दा पाइएका सजाय (दुःख) आदि विशेषता भएका यहाँका लोककथाले मनोरञ्जन, उपदेश, नीति शिक्षा दिएको पाइन्छ ।

यहाँका लोककथालाई वर्गीकरण गर्दा सामाजिक लोककथा, अतिमानवीय र परामानवीय लोककथा, पशुपक्षी तथा फलफूलका लोककथा, धार्मिक, सांस्कृतिक लोककथा र हाँस्य-व्यङ्ग्यात्मक लोककथाहरूले व्यापकता पाएको र यी लोककथाहरू श्रुतिमधुर, कर्णप्रिय र सबैले मनपराउने खालका रहेको अध्ययनबाट प्रष्ट हुन्छ ।

५.३ भावी अध्येताका लागि सम्भावित अध्ययन शीर्षकहरू

धादिङ जिल्लामा प्रचलित गाउँखाने कथाहरूको अध्ययन ।

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाहरूको समाजशास्त्रीय अध्ययन ।

धादिङमा जिल्लामा प्रचलित लोकगाथाको सङ्कलन र वर्गीकरण ।

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथाको लोकतात्त्विक अध्ययन ।

धादिङ जिल्लामा प्रचलित लोककथा तथा लोकगीतहरूको तुलनात्मक अध्ययन ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

अधिकारी, विश्वेश्वर (२०६६). *गोरखाको हर्मी गाउँ विकास समितिमा प्रचलित*

लोककथाहरूको सङ्कलन, वर्गीकरण र विश्लेषण. अप्रकाशित स्नातकोत्तर

शोधपत्र, त्रि.वि. वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस ।

गिरी, जीवेन्द्रदेव (२०५६). *लोकसाहित्यको अवलोकन*. काठमाडौँ : एकता प्रकाशन ।

थापा, धर्मराज र हंसपुरे सुवेदी (२०४०). *नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना*. काठमाडौँ :

पा.वि.के. ।

दिवस, तुलसी (२०३३). *नेपाली लोककथा केही अध्ययन*. काठमाडौँ : ने.रा.प्र.प्र. ।

पराजुली कृष्णप्रसाद (२०२४). *पन्ध्र तारा नेपाली साहित्य*. काठमाडौँ : साभा प्रकाशन ।

पराजुली, कृष्णप्रसाद (२०६७). *नेपाली बृहत् शब्दकोश* (सा.सं.). काठमाडौँ : ने.रा.प्र.प्र. ।

पराजुली, मोतीलाल (२०४९). *नेपाली लोकगाथा*. पोखरा : श्रीमती तारादेवी पराजुली ।

पराजुली, मोतीलाल (२०५४). *नेपाली लोककथाका अभिप्रायहरूको अध्ययन*. अप्रकाशित

विद्यावारिधि शोधप्रबन्ध. त्रि.वि. ।

बन्धू, चूडामणि (२०५८). *नेपाली लोकसाहित्य*. काठमाडौँ : एकता बुक्स ।

भण्डारी र अन्य (२०६८). *प्रायोगिक भाषाविज्ञानका प्रमुख आयाम*. काठमाडौँ : विद्यार्थी

पुस्तक भण्डार ।

रिजाल, लोकनाथ (२०६२). *धादिङ जिल्लाका लोककथाको विश्लेषण*. अप्रकाशित

स्नातकोत्तर शोधपत्र. त्रि.वि. ।

लामिछाने, यादवप्रकास र गीता लामिछाने (२०७८). *नेपाली कथा र उपन्यास*. काठमाडौँ :

विद्यार्थी पुस्तक भण्डार

शर्मा, मोहनराज (२०५८). *कथाको विकासप्रक्रिया* (ते.सं.). ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

शर्मा, हरिप्रसाद (२०५९). *कथा सिद्धान्त र विवेचना*. काठमाडौँ : ने.प्र.प्र. ।

श्रेष्ठ, दयाराम (२०३८). *प्रारम्भिककालको नेपाली साहित्य, इतिहास र परम्परा*. काठमाडौँ :

पा.वि.के., त्रि.वि.।

श्रेष्ठ, विमला (२०६५). *धादिङ जिल्लामा प्रचलित नेपाली लोकगीतहरूको सङ्कलन*

वर्गीकरण र विश्लेषण. अप्रकाशित विद्यावारिधि शोधप्रबन्ध. त्रि.वि. ।

सरुभक्त, तेजनाथ घिमिरे (२०५४). *स्वास्वत*. पोखरा : मेघा प्रकाशन ।

परिशिष्टहरू

परिशिष्ट : क

| क्र.सं. | लोककथाको शीर्षक | सूचकको नाम | ठेगाना |
|---------|---------------------|--------------------|-------------------|
| १. | सासु र बुहारी | भरत कोइराला | थाक्रे-९, केवलपुर |
| २. | राक्षसको कथा | ज्ञानुदेवी ठकाल | थाक्रे-९, केवलपुर |
| ३. | बेलौरेको कथा | मिना मैनाली सिटौला | गजुरी-२, छेवाड |
| ४. | आमाको माया | सरु खनाल | गजुरी-२, छेवाड |
| ५. | दुःखी चेलीको कथा | भम्कनाथ डल्लाकोटी | गजुरी-२, छेवाड |
| ६. | दिदी-बहिनीको कथा | प्रिन्सा अधिकारी | गजुरी-२, छेवाड |
| ७. | भाग्यमा भए खटियाउपर | दिपेन्द्र पौडेल | थाक्रे-९, केवलपुर |
| ८. | लोभी बूढाबूढी | सुस्मिता पोखेल | गजुरी-२, छेवाड |
| ९. | छैंटीको भाग्य | भरत कोइराला | थाक्रे-९, केवलपुर |
| १०. | भूतको कथा | सुमित्रा त्रिपाठी | गजुरी-२, छेवाड |
| ११. | भँगेरोको कथा | शशिप्रकाश पाठक | गजुरी-२, छेवाड |

परिशिष्ट : ख

अध्ययनस्थलमा लोककथा सङ्कलन गर्ने क्रममा कथकेहरूसँग

लिइएका केही फोटाहरू



सुमित्रा त्रिपाठी



सरु खनाल



अङ्किता प्रजा



मिना मैनाली



प्रिन्सा अधिकारी



भरत कोइराला



शशिप्रकाश पाठक



भम्कनाथ डल्लाकोटी



ज्ञानुदेवी ढकाल

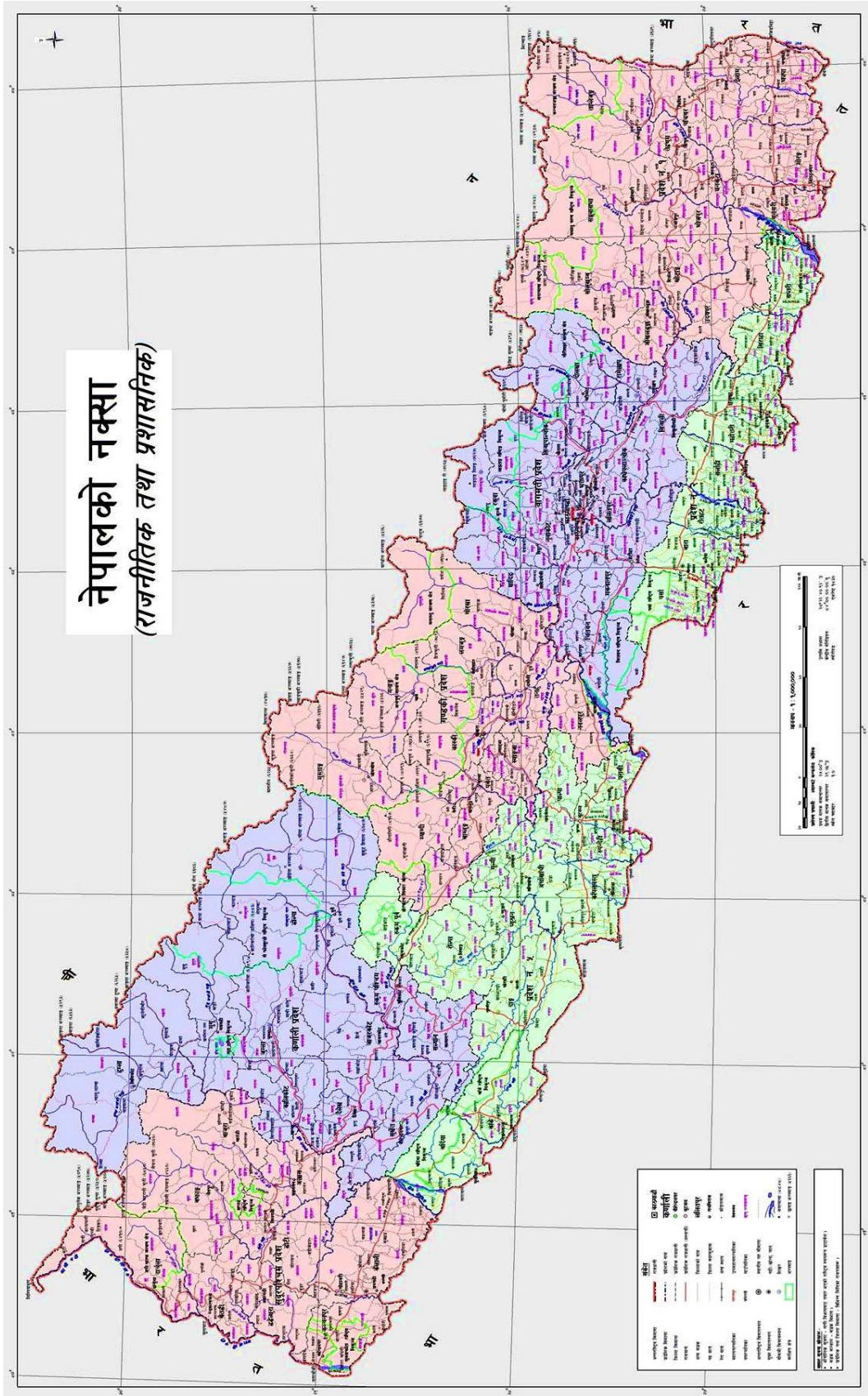


सुस्मिता डल्लाकोटी

परिशिष्ट : ग

नेपालको नक्सा

नेपालको नक्सा (राजनीतिक तथा प्रशासनिक)



परिशिष्ट : घ

धादिङ जिल्लाको नक्सा

